साहसी

एक अङ्गरेजी उपन्यास।

बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री रचित और प्रकाशित।

PRINTED BY
PANNA LAL ROY, MANAGER
AT THE LAHARI PRESS,
Benares City.

1914.

मूल्य ।।।) आ.

Atomic Structure

श्रीः
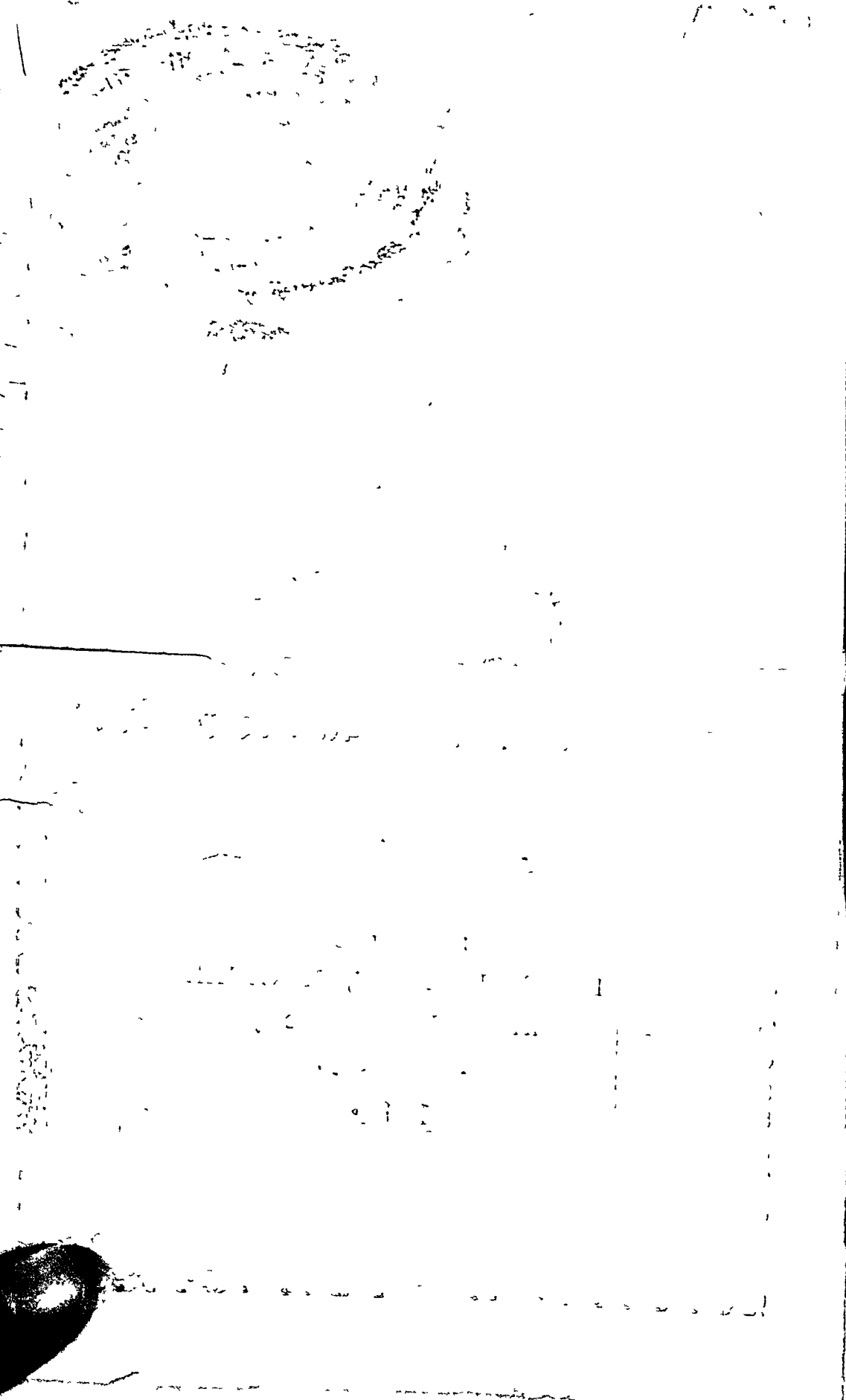
साहसी डाकू ।

उपन्यास ।

पहिला बयान ।

जब का हाल हम लिख रहे हैं उन दिनों लन्दन और उसके चारो तरफ बहुत डाके पड़ा करते थे। डाकुओं के डर से मामूली सड़कें रात को तो बिल्कुलही बन्द हो जाती थीं बल्कि दिन को भी बिना हथियार लिये लोगों को चलने की हिम्मत नहीं होती थी और बड़ी बड़ी सड़कों पर भी बहुत कम आदमी चलते नजर आया करते थे। डाकुओं की हिम्मत यहां तक बढ़ी हुई थी कि वे पुलिस के आदमियों से भी भिड़ जाने को तैयार रहते थे और अक्सर मौका मिलने पर उनको दिक भी बहुत करते थे। हन्सलो नामी सड़क पर डाके ज्यादा पड़ा करते थे क्योंकि उस रास्ते से प्रायः सौदागर लोग आया जाया करते थे और जङ्गल में से होकर जाने के कारण डाकुओं को भागने और छिपने का मौका भी खूब मिलता था ॥

इन डाकुओं में से डिक नाम का एक मशहूर डाकू था। वह इतना चालाक था कि पुलिस वाले उसको पकड़ना तो दूर उसकी शक्ल भी न देखने पाते थे और वह उनकी आंखों में धूल डाल कर अपना काम कर गुजरता था। उसके कई साथी भी थे और इस सबब से उसको सब बातों की खबर रहा करती थी। पुलिस के कई जासूस उसके पीछे लगे रहते थे लेकिन असल में कोई उसको पहिचानता न था क्योंकि वह हमेशा अपनी सूरत बदले रहा करता था और जिस वक्त जैसी जरूरत पड़ती वैसा ही नाम भी रख लेता था॥

पुलिस के एक अफसर "जेरी" से उसको बड़ी चिढ़ थी। वह बराबर डिक के पीछे लगा रहता था और एक दफे उसको फँसा भी चुका था लेकिन वह अपनी चालाकी से निकल भागा था। अस्तु डिक भी मौका देखा करता था कि किसी दिन उसे पावे तो अपना बदला ले॥

आधी रात का समय है और डिक अपनी घोड़ी पर सवार हन्सलो की सड़क से जा रहा है। यकायक किसी आदमी ने एक तेज लालटेन की रोशनी उसके मुँह पर डाली। घोड़ी भड़क उठी और डिक ने बड़ी मुश्किल से उसको सँभाल कर पूछा, "कौन है?"

लालटेन वाले ने कहा, "मैं हूं जेक॥"

डिक "तुम यहां कहां से आ पहुंचे।" कहता हुआ घोड़ी से उतर पड़ा और तब उसने जेक से पूछा, "क्या खबर है?"

जेक०। जान रंटन सवेरे दस बजे अपने महाजन को रुपया देने के लिये जायगा॥

डिक०। कुछ कह सकते हो कितना रुपया ले जायगा ?

जेक०। पचीस हजार ॥

डिक०। तब तो इस मौके को हाथसे न जाने देना चाहिये॥

जेक०। हां जरूर! लेकिन एक बात और है, गर्टरूड भी उसके साथ जायगी॥

डिक०। तब तो और अच्छी बात है। तुम कल सवेरे नौ बजे मुझसे यहीं पर मिलना॥

यह कहकर डिक फिर घोड़ी पर सवार हो गया और तेजी के साथ दक्खिन की तरफ जाने लगा। उस को अपने पीछा किये जाने का इस वक्त कोई डर न था इसलिये कुछ दूर जाने बाद अपनी घोड़ी की चाल कम कर दी और इसी तरह करीब चार मील जाने बाद एक सराय के पास पहुंचकर रुका। यहां पर वह प्रायः रात को रहा करता था और सराय का मालिक पीटर भी उसकी अच्छी खातिर किया करता था क्योंकि उस को डिक से अच्छी आमदनी होती थी। डिक का भी उसके ऊपर भरोसा था और जब तक वह इस सराय में रहता उस को पुलिस वालों से कोई डर न रहता था॥

दर्वाजे पर पहुंच कर डिक उतरा और दर्वाजा खटखटाने लगा। पीटर ने उतर कर दर्वाजा खोला और डिक को देखकर खुशी के साथ बोला, "आज तो तुम बहुत दिनों के बाद आये॥"

डिक०। हां कल जान रंटन रुपये लेकर शहर जाने वाला है॥

पीटर०। अच्छा तुम जरा खड़े रहो मैं बड़ा फाटक खोल कर तुम्हारी घोड़ी को भी अन्दर कर लूं॥

यह कहकर पीटर अन्दर चला गया और सराय का बड़ा

फाटक खोलकर उसने डिक और उसकी घोड़ी को अन्दर कर लिया। डिक घोड़ी को अस्तबल में ले गया और उसको गरम दल कर पीटर ने थोड़ी शराब लेकर पिलाई और थोड़ी घास उसके आगे डालकर बाहर निकल आया। यह अस्तबल इस ढङ्ग से बना हुआ था कि जल्दी पता नहीं लगता था कि यहां पर कोई अस्तबल है। इसके फाटक के आगे लकड़ियों का एक ढेर लगा हुआ था और इस सबब से लोगों को अस्तबल का शक भी नहीं होता था॥

दोनों आदमी सराय के अन्दर एक कमरे में गये और तब डिकने शराब मँगाकर आप भी पी और पीटर को भी पिलाई। इसके बाद वे दोनों एक कुर्सी पर बैठकर चुरट पीने लगे। डिक की उम्र अट्ठाईस वर्ष की थी और वह बड़ा ही खूबसूरत था। उसकी आवाज भी बहुत मीठी थी और इन्हीं सबबों से वह औरतों से बहुत जल्दी हिल मिल जाता था। डिक के माँ बाप बड़े गरीब थे और उनके मर जाने पर खाने का ठिकाना न रहने के कारण ही उसको डाकू बनना पड़ा था लेकिन डाकू होने पर भी उसने कभी किसी गरीब को तकलीफ नहीं दी थी सिर्फ अमीरों ही को लूटा करता था और वे लोग इसके नाम से डरा करते थे॥

ये दोनों थोड़ी ही देर तक बैठने पाये थे कि कुछ सवारों के घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई देने लगी। वे दोनों कुछ देर तक गौर के साथ सुनते रहे और तब डिक बोला, "पीटर! तुम उस छिपी कोठरी का दर्वाजा खोल रक्खो, ये सवार इसी तरफ आते मालूम पड़ते हैं, ताज्जुब नहीं कि पुलिस के आदमी

हों, हम लोगों का होशियार रहना ही ठीक है।" पीटर ने उठ कर एक आलमारी जो दीवार के साथ लगी हुई थी हटाई। उसके नीचे एक तख़्ता था जिसको हटाकर उसने डिक से कहा, "अच्छा होगा अगर जाके नीचे ही सो रहो क्योंकि रात भी बहुत जा चुकी है और मैं भी सोया चाहता हूं।" डिक "अच्छा" कहकर उठा और उस जगह गया। नीचे जाने को सीढ़ियां थीं जिनसे वह नीचे उतर गया। नीचे एक कोठरी थी जिसमें काम की जरूरी चीजें थीं और एक पलङ्ग बिछा हुआ था। इस कोठरी में से एक रास्ता मकान के बाहर जाने का था जिस से जरूरत पड़ने पर वह मकान से भाग भी सकता था। डिक पलङ्ग पर जाके सो रहा॥

पीटर ने ऊपर का तख़्ता ठिकाने रख कर आलमारी उसी तरह ठीक कर दी और इसके बाद मोमबत्ती बुझा कर स्वयं भी सो रहा। थोड़ी ही देर में टापों की आवाज साफ़ साफ़ सुनाई देने लगी और अन्त में वे सवार इस सराय के दर्वाजे पर आ पहुंचे। उन में से एक आदमी दर्वाजा जोर जोर से खटखटाने लगा जिसे सुन पीटर ने एक खिड़की खोली और उसमें से झांक कर कहा, "तुम लोग कौन हो जो यहां पर आकर शोर मचा रहे हो।" उस आदमी ने जो दर्वाजा खटखटा रहा था पीटर से कहा, "बादशाह के नाम पर जल्दी दर्वाजा खोलो।" यह सुन पीटर बोल उठा, "ईश्वर राजा को बचावे।" इसके बाद वह उठा और नीचे उतर कर दर्वाजा खोल दिया। उस आदमी ने जो दर्वाजा खटखटा रहा था एक कागज पीटर को दिखा कर कहा, "मेरा नाम जेरी है, मैं पुलिस का अफसर हूं,

सुना है कि डिक टर्पिन यहां आया है उसे पकड़ने के लिये मैं आया हूं ॥"

पीटर० । कौन डिक ? क्या वह डाकू ?

जेरी० । हां वही ॥

पीटर० । तो क्या आप समझते हैं कि वह मेरे मकान में है ?

जेरी० । नहीं मेरा यह मतलब नहीं है लेकिन वह इसी तरफ कहीं है । खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं है, मुझे और मेरे साथियों को भूख लगी है और हमलोग यहां ठहर कर कुछ खाया चाहते हैं ॥

पीटर० । आइये अन्दर आइये जो कुछ मेरे पास है मैं खुशी से आप को दूंगा ॥

घोड़े उसी जगह बाँध दिये गये और तब पीटर ने उन्हें उसी कमरे में ले जाकर बैठाया जिसमें डिक थोड़ी देर पहिले बैठा था, या जिस कमरे के नीचे वह इस समय है । तब उसने जेरी से पूछा, "आप लोगों के लिये क्या लाऊं ?"

जेरी० । जो कुछ तुम खिला सको सो लाओ लेकिन पहिले थोड़ी शराब दे जाओ बड़ी प्यास लगी है ॥

पीटर चला गया और थोड़ी ही देर में दो बोतल शराब लाकर टेबुल पर रख दी । आलमारी में से गिलास निकाल कर सामने रख दिये और तब खाना परोसने लगा । परोसते २ जान बूझ कर उसने एक थाली जमीन पर गिरा दी । उसमें और डिक में यह इशारा बँधा हुआ था कि जब डिक थाली की आवाज सुने तो होशियार होजाये अस्तु डिक ने जब थाली

की आवाज सुनी तो समझ गया कि कुछ गड़बड़ है और वह होशियार हो गया। पीटर ने अपनी गलती के लिये जेरी से क्षमा माँगी और कहा, "मैं अभी नींद से जागा हूं इससे उनींदा सा हो रहा हूं। आजकल ऐसे वक्त में मेरे यहां कोई मेहमान भी नहीं आते जो रात को उठना पड़े॥"

जेरी०। खैर तुम पहिले खाना परोसो पीछे ये सब बातें होंगी॥

पीटर ने खाना परोसा और वे लोग खाने लगे। जब सब कोई खा चुके तो जेरी ने पीटर से पूछा, "हां अब बताओ तुम ने डिक को कहीं देखा है?"

पीटर०। मैंने उसकी शक्ल भी नहीं देखी॥

जेरी०। लेकिन मैंने सुना है कि उसने आज तुम्हारे ही यहां खाना खाया है॥

पीटर०। राम राम! ऐसी बात पर भी कोई भरोसा कर सकता है। भला मैं ऐसे ऐसे डाकुओं को क्यों अपने यहां रक्खूंगा॥

जेरी कुछ कहा ही चाहता था कि इतने में नीचे से फिर दर्वाजा खटखटाने की आवाज आई। उसने पीटर से कहा, "देखो कौन आया है? जाकर दर्वाजा खोलो और उस आदमी को बुला लाओ॥"

पीटर नीचे गया और थोड़ी ही देर में एक आदमी को साथ लेकर आया। वह आदमी आते ही एक कुर्सी पर बैठ गया और इस तरह से सांस लेने लगा मानो बड़ी दूर से भागता आ रहा है। जब कुछ सुस्ता चुका तो बोला, "शुक्र है किसी

तरह जान बच गई नहीं तो वह डाकू मुझे मार ही चुका था।"
इसके बाद वह फिर आंख बन्द कर ज़ोर २ से सांस लेने लगा॥

दूसरा बयान।

जेरी ने जब यह सुना तो उसको शक हुआ कि यह किस के बारे में कह रहा है। उसको यह पक्की खबर मिली थी कि डिक उसी तरफ कहीं आया है और उसने यह सोच लिया था कि आज उसको जरूर पकड़ूंगा। वह था तो नाटा और बसखड़ो मगर हिम्मत की उसमें कमी न थी और वह पहिले भी कई डाकुओं को पकड़कर इनाम पा चुका था। अस्तु उसको भरोसा था कि डिक एक न एक दिन उसके फन्दे में जरूर पड़ेगा और जब उसने उस आदमी को किसी डाकू के बारे में कहते सुना तो उससे न रहा गया और उसने पूछा, "तुम किसके बारे में कह रहे हो?"

आदमी०। डिक टर्पिन॥

जेरी०। (खुशी के साथ) उसको तुमने कहां देखा?

आदमी०। तुम अभी देखने ही को कह रहे हो। अरे वह तो मेरी जानही ले चुका था। मैं इसी सड़क पर से जा रहा था इतने में वह एक तरफ से आया और एक पिस्तौल मेरे आगे करके बोला, "बस जो कुछ तुम्हारे पास है सब दे दो नहीं तो अभी गोली मार दूंगा।" आखिर मैं क्या कर सकता था जो कुछ मेरे पास था सब दे देना पड़ा। हाय मैं तो कहीं का भी न रहा॥

जेरी०। भला तुमने कैसे पहिचाना कि वह डिक था?

आदमी०। वह जाती समय अपना नाम मुझे बताता गया था॥

जेरी०। तुम कह सकते हो कि वह तुम से रुपया लेकर किधर गया?

आदमी०। वह स्टेन की तरफ चला गया॥

जेरी०। भला तुम हमारे साथ चल सकते हो? हम लोग उसे पकड़ने के लिये आये हैं॥

आदमी०। मैं तो अब कभी भी उसके सामने न जाऊंगा। मेरी तो जान डर के मारे निकल गई थी, अब मैं रात यहां काटूंगा और सवेरे अपने घर चला जाऊंगा॥

जेरी ने फिर उससे कुछ न पूछा। उसको तो डिक के पकड़ने की फिक्र पड़ी थी अस्तु वह पीटर को दाम चुका कर सराय के बाहर आया और अपने साथियों सहित घोड़ों पर सवार हो स्टेन शहर की तरफ चला क्योंकि उसने सुन लिया था कि डिक उसी तरफ गया है॥

जब वे लोग कुछ दूर निकल गये तो उस आदमी ने अपना लबादा हटा दिया और जब नकली दाढ़ी हटाई तो उसकी सूरत डिक की सी दिखाई देने लगी। पीटर यह देख बड़े जोर से हँसा और बोला, "तुम कहां से आ गये?"

डिक०। जब तुमने थाली की आवाज की तबही मैं समझ गया कि ये सब पुलिस के आदमी हैं अस्तु मैंने सोचा कि इन सभों को किसी तरह धोखा देना चाहिये। उस कमरे में नकली दाढ़ी मोछें वगैरह तैयार ही थीं बस एक दाढ़ी लगा और

(लवादे की तरफ इशारा करके) इस लवादे को ओढ़ मैं पिछले रास्ते से मकान के बाहर निकल आया ॥

पीटर० । (खुशी के साथ) और अब जेरी तुमको खोजता स्टेन तक जायगा ॥

डिक० । इसमें क्या शक है ॥

पीटर० । अच्छा अब तुम आराम करो ॥

डिक० । वाह अब आराम कैसा? अब तो मैं पहिले इस जेरी को लूटूंगा तब आराम करूंगा । यहां बड़ी शेखी हांक गया है ॥

पीटर० । खैर जो तुम्हारी तबीयत चाहे करो ॥

डिक उठा और अपनी पोशाक पहिन अस्तबल में जा अपनी घोड़ी को बाहर निकाला । उसपर जीन रख कर वह सवार हुआ और पीटर से यह कहकर कि "तुम मेरी राह न देखना ।" उसी तरफ चला जिधर जेरी और उसके साथी गये थे । वह जानता था कि वे सब तेजी के साथ गये हैं इसलिये उसने सड़क पर से जाने का विचार छोड़ दिया और खेतों के बीच से होता हुआ चला । उस तरफ की एक एक इञ्च जमीन उसकी देखी हुई थी और उसको अपने भटक जानेका कोई डर न था । थोड़ी देर तेजी के साथ जाने बाद वह रुका और कुछ घूमकर पच्छिम की तरफ जाने लगा । अब उसको वह सड़क फिर दिखाई देने लगी जिसपर कि जेरी और उसके साथी गये थे । वह रुक गया और एक पेड़ की आड़ में घोड़ी खड़ी कर गौर के साथ सुनने लगा । थोड़ी ही देर में उसको सड़क पर जाते हुए कई घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई पड़ी । वह

समझ गया कि जेरी और उसके साथी आ रहे हैं। वह झाड़ी से बाहर निकला और कुछ आगे बढ़कर एक ऐसी जगह पहुँच कर रुका जहां की सड़क पर दलदल था और घोड़ों के टापों की आवाजें सुनाई नहीं दे सकती थीं। पेड़ों की छाया रहने के सबब से वहां बड़ा अन्धकार छाया हुआ था और डिक भी अँधेरे में एक पेड़ की आड़ में जाकर खड़ा हो गया॥

थोड़ीही देर में वे सवार आ पहुंचे। आगे आगे तो जेरी के दोनों साथी थे और उनसे कोई पचास कदम की दूरी पर जेरी पीछे पीछे चला आ रहा था। उसके दोनों साथियों को यह गुमान भी न था कि डिक जिस को पकड़ने वे जा रहे थे उनके पासही खड़ा है। डिकने उन दोनों को जाने दिया मगर जेरी जब उसके सामने पहुंचा तो वह यकायक घोड़ी घुमाकर उसके सामने आगया और जेब से पिस्तौल निकाल तथा दूसरे हाथ से उसके घोड़े की लगाम थामकर पिस्तौल उसके सिर के सामने कर बोला, "बस खबरदार! आगे न बढ़ना नहीं गोली मार दूंगा॥"

जेरी में हिम्मत की तो कमी न थी लेकिन ऐसे मौके पर वह कुछ नहीं कर सकता था। वह खूब समझता था कि यदि मैं जरा भी हल्ला मचाऊंगा तो यह डाकू गोली मारे विना न छोड़ेगा। आखिर उसने कहाः—

जेरी०। याद रक्खो कि तुम पुलिस के अफसर को लूटा चाहते हो॥

डिक०। तो क्या हुआ, क्या पुलिसके आदमी होने से तुम में कोई खास बात आ गई है? तुम तो मुझे नहीं पहिचानते

मगर मैं खूब जानता हूं कि तुम्हारा नाम जेरी है। [illegible] डिक को पकड़ने आये हो मगर याद रहे कि डिक तुम्हारे सामने खड़ा है। मगर [illegible] हो सकता॥

जेरी: क्या तुम्हीं डिक हो?

डिक: हां मैं हूं। तुम [illegible] न करो तो कुछ तुम्हारे काम भी दूं॥

जेरी अब बहुत घबड़ाया। वह डिक जिसको पकड़ने के लिये वह निकला था आज उसके सामने खड़ा था मगर इस तरह कि [illegible] पर। उसने सामने नजर उठाकर देखा तो अपने साथी दोनों सवार भी उसे नहीं दिखाई दिये क्योंकि वे दोनों बहुत आगे बढ़ गये थे और उनको इस बात का गुमान भी न था कि उनके अफसर पर आफत आई हुई है। आखिर कुछ सोच विचार कर जेरी ने अपने जेब से अशर्फियों की थैली निकाली और डिक को देते हुए कहा, "याद रक्खो, मैं इसका बदला लिये बगैर कभी न छोड़ूंगा।" डिक ने हँसकर कहा, "अभी तो हमारी आपकी कई दफे मुलाकात होगी जो करते बने कर लीजियेगा॥"

इतना कहकर डिक ने जेरी के घोड़े की लगाम जिसको वह इतनी देर से पकड़े हुए था छोड़ दी और अपनी पिस्तौल आस्मान की तरफ छोड़ी। जेरी का घोड़ा पिस्तौल की आवाज सुनकर भड़का और अपने पिछले पावों पर खड़ा हो गया। जेरी अपने को बहुत सँभालने पर भी घोड़े के नीचे आ रहा उसके साथी जो अभी तक बेफिक्री के साथ जा रहे थे पिस्तौल की आवाज सुनकर लौटे और अपने अफसर की यह हालत

देख और डिक को भागता देख अपनी बन्दूक उसके ऊपर छोड़ी मगर डिक उनकी तरफ देखकर हँसा और अपनी घोड़ी तेज कर उनकी नजरों से गायब हो गया॥

उनमें से एक आदमी ने जेरी को जमीन से उठाया, उसकी बड़ी खराब हालत हो गई थी। तलवार बीच में से दो टुकड़े हो गई थी और टोपी उछल कर कुछ दूर पर एक गड़हे में जा गिरी थी जिसमें पानी भरा हुआ था। जेरी की पोशाक दलदल से बिल्कुल लथ पथ हो गई थी और उसका मुँह भी बिल्कुल कीचड़ से रँग गया था। जेरी के दोनों साथी उसकी यह हालत देख कोशिश करने पर भी हँसी न रोक सके। जेरी इसपर और भी बिगड़ा और गुस्से के साथ बोला, "तुमलोग बिल्कुल बहिरे हो तुम्हारे अफसर पर क्या आफत आई इसका कुछ खयाल भी नहीं, आखें बन्द किये बढ़े जाते थे और अब हँसते हो।" उन में से एक बोला, "आखिर मामला क्या है, आपकी यह हालत क्यों हो गई और वह आदमी कौन था जो घोड़े पर सवार भागा जाता था?" जेरी ने सब हाल कहकर कहा, "इस कम्बख़्त ने मुझे बहुत छकाया है मैं भी इसको पकड़े बिना कभी न छोड़ूंगा चाहे मेरी जान ही चली जाय।" इसके बाद एक आदमी जेरी की टोपी गड़हे में से निकालने गया मगर वह इतनी खराब होगई थी कि जेरी ने उसको पहिनना नापसन्द किया और उसी हालत से अपने दोनों साथियों के साथ स्टेन की तरफ चला गया॥

इधर डिक फिर उसी सराय में पीटर के पास चला गया और उससे सब हाल कहा। वह भी सुनकर बहुत हँसा और

बोला,"अफसोस! मैं वहां न था।" डिकने अपनी घोड़ी उसी अस्तबल में बांधी और आप भी उसके ऊपर के एक कमरे में जाके सो रहा क्योंकि वह अपनी घोड़ी से कभी ज्यादे देर के लिये अलग नहीं होता था॥

तीसरा बयान।

उसके दूसरेही दिन जब कि डिकने जेरी को छकाया था जान रंटन और उसकी खूबसूरत लड़की गर्टरूड लंदन के लिये रवाना हुए। जान रंटन एक अमीर आदमी था और जमींदार होने के कारण उसका रोआब भी उस तरफ बहुत ज्यादे था। उसको प्रायः मुकद्दमे वगैरह या रुपये पैसे के लिये लन्दन आना पड़ता था और आज भी वह उसी लिये रवाना हुआ था॥

कुछ दिनों से एक दूसरे जमीदार से उसकी चखाचखी चल रही थी। उन दोनों की जमीदारी सटी हुई थी और बीच में एक टुकड़ा ऐसा था जिसको कि वे दोनों अपना २ बताते थे। आखिर को यह तय पाया था कि वह दूसरा जमीदार जान रंटन को पचीस हजार रुपये देकर वह जमीन लेले जोकि इस दाम से कहीं ज्यादे की थी। जब इस तरह पर आपस का झगड़ा तय हो गया तो रंटन ने एक ज्याफत दी जिस में वह दूसरा जिमीदार भी आया और रंटन का पचीस हजार रुपया भी अपने साथ लाकर उसी वक्त अदा कर दिया। आज सवेरे रंटन उसी रुपये को लेकर लन्दन में बङ्क में जमा करने जा रहा है॥

रंटन के एक बहिन भी थी जोकि उसके घर का काम काज सँभालती थी क्योंकि रंटन की स्त्री मर गई थी और घर में सिवाय गर्टरूड के कोई और औरत न थी। रंटन चाहता था कि उसकी लड़की की शादी किसी अमीर के साथ हो और इसी सबब से वह अमीरों के लड़कों के साथ गर्टरूड की जान पहिचान कराता था मगर गर्टरूड उनसे खुल कर बात भी नहीं करती थी और वे बेचारे अपना सा मुँह लेकर रह जाते थे। जान रंटन और उसकी बहिन गर्टरूड के इस बर्ताव से बहुत अचम्भे में थे मगर कुछ सबब न पूछ सकते थे, लेकिन गर्टरूड के ऐसे बर्ताव का एक सबब था ॥

कोई चार बरस पहिले एक दिन जान रंटन ने शिकार खेलने के लिये आस पास के अमीरों को न्योता दिया था। सब मिला के कोई पन्द्रह आदमी हो गये थे और जान रंटन भी उनके साथ था। मैदान में जाकर उन्हें एक खरगोश दिखाई दिया जिसके पीछे उन सभों ने घोड़े छोड़े। कुछ दूर जाने बाद एक जवान और भी शामिल हो गया जो कि एक तेज घोड़ी पर सवार था। वह ऐसा अच्छा सवार था कि थोड़ीही देर में उस ने सब से आगे निकल कर उस खरगोश का शिकार किया। जान रंटन उस से इतना खुश हुए कि उस को अपने घर पर बुलाया। यह उसने खुशी से मंजूर किया और दूसरे दिन उनके (जान रंटन के) घर पर पहुंचा और दोनों ने एकही साथ भोजन किया। गर्टरूड से भी उसकी वहीं मुलाकात हुई और वह उस की मीठी मीठी बातों से बहुत खुश हुई तथा उसी दिन से उस को चाहने लगी। जान रंटन को जब यह हाल मालूम हुआ

तो वह बहुत बिगड़ा मगर बहुत खोजनेपर भी उस जवान को न पा सका। आखिर उसने गर्टरूड को दो महीने के लिये अपनी बहिन के साथ लन्दन भेजवा दिया। कुछ दिनों के बाद गर्टरूड लैाट तो आई मगर दिल से वह उस आदमी को न भूल सकी। यही सबब था कि उसका दिल किसी से बात करने को भी नहीं चाहता था॥

जिस दिन जान रंटन गर्टरूड के साथ लन्दन को रवाना हुए उस दिन सवेरे ही से पानी बरसने लगा था। गर्टरूड के साथ उसकी एक मजदूरनी भी थी और वे लोग एक मजबूत मगर खूबसूरत गाडी पर सफर कर रहे थे क्योंकि आजकल की तरह उन दिनों रेल नहीं थी। हिफाजत के खयाल से रंटन ने एक सिपाही भी साथ ले लिया था और अपने पास भी एक पिस्तौल रख ली थी॥

डिक जब सोकर उठा तो उसने देखा कि दिन कुछ ज्यादे चढ़ आया है लेकिन बाहर आने पर जब उसने देखा कि पानी बरस रहा है तो वह बहुतही खुश हुआ क्योंकि पानी के कारण सड़कपर लोगों का आना जाना बहुत कम हो गया था। डिक ने अपने कपड़े उतार दिये और एक फावड़ा लेकर वह सड़क पर पहुँचा जो कि उस सराय से थोड़ी दूरी पर थी। वहां पहुंच कर उसने सड़क में इस पार से उस पार तक एक नाली खोदी जो कि करीब हाथ भर के गहिरी और दो हाथ के लगभग चैाड़ी होगी। इसके बाद उस नाली को उसने घास फूस से ढक दिया और तब सराय को लैाट आया। कुछ सुस्ताने बाद उसने कुछ जलपान किया और तब कपड़े पहिन एक खिड़की के पास

आकर बैठ रहा जहां से वह सड़क पर आने जाने वालों को बखूबी देख सकता था॥

उसको बैठे अभी थोड़ीही देर हुई होगी कि जान रंटन की गाड़ी घड़घड़ाती हुई उसी जगह आ पहुंची जहां कि गड्ढा खोदा गया था। डिक बड़ी चाहसे देखने लगा कि उसकी मेह-नत का क्या नतीजा निकलता है। कोचवान को यह खयाल भी न था कि इस जगह सड़क पर कोई गढ़ा है अस्तु उसने घोड़ों की चाल कम न की और उसी तेजी से हांकता रहा। आखिर घोड़े गढ़े में जा गिरे मगर कोचवान ने फिर भी उन्हें न रोका क्योंकि उसने सोचा कि शायद यह कोई मामूली दलदल है आगे बढ़ने पर फिर सूखी जमीन मिलेगी मगर वहां तो बातही और थी। कुछ आगे बढ़ने पर गाड़ीके अगले पहिये भी गड्हे में जा गिरे और गाड़ी का बम वगैरह बिल्कुल टूट गया, घोड़ों को भी इतनी चोट लगी कि वे गढ़े के बाहर नहीं निकल सकते थे, आखिर जान रंटन को गाड़ी से बाहर निकलना पड़ा और गर्टरूड और उसकी मजदूरनी भी बाहर आईं॥

डिक ने जो इतनी देर से सब हाल देख रहा था यह मौका अच्छा समझा और वह सराय से बाहर निकल दौड़ता हुआ उस जगह पहुंचा जहां रंटन खड़े अपना गुस्सा साईसों और कोचवान पर निकाल रहे थे। पहुंचतेही उसने उनको सलाम किया और बड़ी मुलायमियत के साथ पूछा "मैं आशा करता हूं कि आपको कहीं चोट न लगी होगी॥"

रंटन०। नहीं चोट तो नहीं लगी मगर न मालूम क्या सबब है कि इधर की सड़कें आजकल इतनी खराब रक्खी जाती हैं?

यह आम सड़क है, बराबर इधर से लोग आया जाया करते हैं अगर यहीं पर सड़क की यह हालत है तो आगे चलने पर न जाने क्या हालत होगी॥

डिक०। इधर बहुत दिनों से इस तरफ की सड़कें ऐसीही रहती हैं आने जाने वालों को बड़ीही तकलीफ है। न जाने इसका क्या सबब है। (गाड़ी की तरफ देख कर) मगर मैं देखता हूं कि आपकी गाड़ी बिलकुल टूट फूट गई है ऐसी हालत में आप सफर नहीं कर सकते अच्छा हो यदि आप चलकर थोड़ी देर सराय में आराम करें जब तक कि गाड़ी की मरम्मत न हो जाय। आपके साथ औरतें भी हैं और उनका ऐसे मौसिम में बाहर रहना ठीक न होगा॥

जान रंटन यद्यपि चिड़चिड़े स्वभाव का था मगर इस समय इस अजनबी की बातें उस को माननी पड़ीं। उसने एक साईस को लुहार को बुलाने के लिये भेजा और तब गर्टरूड और उसकी मजदूरनी के साथ वह सराय की तरफ बढ़ा। डिक आगे आगे रास्ता बताता हुआ जाता था क्योंकि पानी के सबब से कीचड़ बहुत होगया था। सराय पहुंचकर जब वेलोग कुछ सुस्ता चुके तो डिक ने जान रंटन को अपने ही साथ खाने के लिये कहा। जान रंटन ने कुछ नांही नूकर केबाद मंजूर किया और तब गर्टरूड, रंटन और डिकने एक साथही भोजन किया। डिक की बात चीत से रंटन और गर्टरूड बहुतही खुश हुए और उन्होंने उसके साथ शामको भी खाना मंजूर कर लिया क्योंकि गाड़ी के तब तक तैयार हो जाने की कोई आशा भी न थी। शाम को जब वे खाना खाने बैठे तो डिक ने कह सुनकर गर्टरूड

की मजदूरनी के भी बुला लिया जिसको उसने पहिले ही से सिखा पढ़ा के ठीक कर लिया था। डिक ने जान बूझकर रंटम को इतनी शराब पिला दी कि उस को कुछ होश न रही और वह अनापशनाप बकने लगा। डिक ने गर्टरूड की और अपनी कुर्सी घसीट कर एक खिड़की के पास करली और वहां से वे दोनों खिली हुई चांदनी की बाहर देखने लगे। बातें करते करते डिक ने यकायक गर्टरूड से पूछा, "क्या तुमने मुझे अभी तक नहीं पहिचाना?"

गर्टरूड यह सुनतेही चिहुंक गई। उसको पहिलेही से यह खयाल हो रहा था कि "मैंने इसको कहीं देखा है।" मगर याद नहीं पड़ता था कि कहां और कब। इस समय यकायक उसे उस जवान की याद आगई जिसको एक दफे वह अपना दिल दे चुकी थी। पुरानी बातें उसके सिरमें घूमने लगीं और उसने सिर उठाकर डिक की तरफ देखा। बेशक यह वही सूरत थी जिसको वह पहिले देखचुकी थी जिसको देख न सकने के कारण वह घंटों अकेले में बैठी रोया करती थी और जिसके कारण उसका पिता भी उससे रंज होगया था। वह अब अपने को रोक न सकी और डिक का हाथ अपने हाथ में ले आंखोंसे कोशिश करने पर भी न रुकने वाले आंसुओं की बूंदें गिराने लगी। डिकने उसको समझा बुझा कर शान्त किया और तब फिर उन दोनों में बातचीत होने लगीं। डिकने पहिली दफे बहुत पूछने पर भी उसे अपना नाम नहीं बताया था मगर इस समय गर्टरूड के बहुत जोर देनेसे वह सोच में पड़ गया कि क्या नाम बतावे। वह अपना असल नाम तो बताही नहीं सकता था

अस्तु उसने कुछ बनावटी नाम बतानाही उत्तम समझा और अपना नाम रिचार्ड बताया। यद्यपि उसको इसमें दुःख तो हुआ मगर वह क्या कर सकता था। उस को पकड़ने के लिये बहुत से जासूस उसके पीछे लगे हुए थे और यदि किसी को जरा भी यह मालूम हो जाता कि वह वही मशहूर डाकू डिक है तो वह अपने को कैदखाने की अंधेरी कोठरी से न बचा सकता। यद्यपि उसको अपने ऊपर भरोसा था और यह भी समझता था कि गर्टरूड उसका भेद जान जाने पर भी प्रगट न करेगी तथापि उसने इस मौके को बचा जानाही उत्तम समझा और अपना असली नाम गर्टरूड को न बताया॥

इन दोनों की बातें तो कदाचित कभी भी खतम न होतीं यदि किसी आदमी के खुर्राटा लेने की आवाज से इन्हें चौंक कर पीछे न देखना पड़ता। डिक ने देखा कि जान रंटन टेबुल पर दोनों टांगें फैलाये अपनी कुर्सी पर सोये हुए हैं और गर्टरूड की मजदूरनी का कहीं पता नहीं है। वह डिक के कहे अनुसार जान रंटन को तब तक बराबर शराब पिलाती गई जबतक कि वे नशे के कारण सो न गये। इसके बाद वह अपनी कोठरी में जाकर सो रही थी क्योंकि उसे भी नींद बहुत मालूम होने लगी थी। यही कारण था कि गर्टरूड और डिक इतनी देर तक बराबर बातें करते रहे क्योंकि जान रंटन ऐसे स्वभाव का मनुष्य था कि यदि किसी को गर्टरूड से ज्यादे देरतक बातें करते देखता तो जल जाता और किसी न किसी बहाने से उसे उसके सामने से हटा देता था॥

इतनेही में यकायक डिक को खयाल आया कि जान रंटन

के रुपये जिनको लेने के लिये उसने यह सब मेहनत की थी अभी तक गाड़ीही में पड़े हैं। एक दफे तो उसने सोचा कि वे रुपये न ले क्योंकि वे गर्टरूड के पिता के रुपये थे जिसको वह जी से प्यार करता था मगर जब उसको यह याद आया कि इसी रंटन के कारण उसको पहिली दफे गर्टरूड से अलग होना और गर्टरूड को उससे अलग होकर लन्दन जाना पड़ा था तो उसका वह पहिला खयाल घृणा के साथ बदल गया और उसको जान रंटन से बदला लेने की इच्छा हुई। उसने गर्टरूड से फिर मिलने का वादा करा लिया और तब उसे उसके कमरे में पहुंचा कर सराय के बाहर निकला। जान रंटन की गाड़ी अभीतक वहां पर खड़ी थी जहां कि वह टूटी थी क्योंकि वह अभीतक पूरी तरह से ठीक नहीं हुई थी॥

यद्यपि चन्द्रमा की निर्मल चांदनी डिक के काम में बाधा डाल रहीथीतथापि वह अपनेको पेड़ोंकी आड़में छिपाता हुआ उस जगह पहुंच गया जहां कि रंटन की गाड़ी खड़ी थी। साईस कोचवान सब गाड़ी की छत पर सोये हुए थे और गाड़ीके अंदर कोई भी न था। डिक ने धीरे से गाड़ी का पल्ला खोला और अंदर जाकर वह रुपयोंकी थैली तलाश करने लगा। बहुत खोजने पर वह गद्दी के नीचे बने हुए एक संदूक के अंदर से मिली जिसका ताला शायद भूल से खुला रह गया था। थैली लेकर वह गाड़ी से बाहर निकला और पल्ला धीरे से बंद करके फिर एक पेड़ की आड़ में जाकर खड़ा हो गया और देखने लगा कि कोई उसे देखता तो नहीं है। जब उसने देखा कि साईसों में से कोई होशियार नहीं हुआ और कोई आदमी भी नहीं

दिखाई देता तो वह सराय की तरफ लौटा। आठ दस कदम गया होगा कि उसे ऐसा मालूम हुआ कि जैसे किसीने धीरे से चीख मारी हो, लेकिन वह आवाज ऐसी धीमी थी कि डिक ने उसपर कुछ गौर न किया और कदम बढ़ाये चला गया थोड़ी दूर आगे बढ़ा होगा कि फिर उसे किसी की आहट मालूम हुई। उसने घूमकर पीछे की तरफ देखा मगर जब कुछ दिखाई न दिया तो उसने इसको अपने कानों का भ्रम समझा और फिर कुछ परवाह न कर सराय को लौट आया। वहां पर पहुंच वह अपनी उसी कोठरी में पहुंचा जिस के नीचे वह अपनी घोड़ी को रक्खा और प्रायः रात को सोया भी करता था। वहां पहुंच कर उसको इच्छा हुई कि जरा थैली खोल के देखें कि उसमें कितने रुपए हैं, अस्तु उसने थैली खोली मगर यह क्या ? जब उसने थैली के अंदर हाथ डाला तो उसमें सिवाय कंकड़, पत्थरों के और कुछ भी न मिला !!
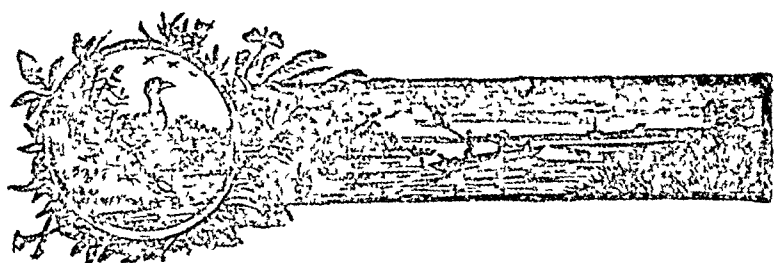
चौथा बयान।

डिक को इस बात पर गौर करने का अच्छा मौका न मिला कि उस थैली के रुपए कहां गये, क्योंकि उसी समय उसे सराय के दर्वाजे पर कई घोड़ों के टापों की आवाजें सुनाई दीं और वह यह देखने के लिये नीचे उतर आया कि ये इतनी रात गये आने वाले कौन हैं ? मगर उसको बड़ाही ताज्जुब हुआ जब उसने देखा कि ये आने वाले जेरी और उसके साथी थे जिन्हें कि वह एक रोज पहिले धोखा दे चुका था। डिक इस समय भी वही पोशाक पहिरे था जिससे कि रंटन और गार्टरूड से मिला था और उसको विश्वास था कि जेरी उसको कदापि न पहिचानेगा। अस्तु वह अपने को उससे मिलने से रोक न सका और उसके सामने पहुंच तथा सलाम कर बोला "आप बहुत दूर से सफर करते हुए आ रहे हैं ?" जेरी ने कुछ कुढ़े हुए ढंग से 'हां' कहा और तब पीटर को खाना लाने के लिये कहकर अपने साथियों समेत कपड़े उतार सुस्ताने लगा। जब वह कुछ सुस्ता चुका तो डिकने फिर उससे कहा, "शायद आप मुझे नहीं पहिचानते हैं। मैं लंदनके मशहूर सौदागर डेविड डेरिक का लड़का हूं, मेरे लायक जो काम हो आप खुशी से कहिये॥"

डेविड डेरिक का नाम सुनते ही जेरी ने बहुत झुककर डिक को सलाम किया और अपनी बेअदबी के लिये माफी मांगी। इतनेही में पीटर जो जेरी और उनके साथियों के लिये खाना लेने गया हुआ था दर्वाजे पर आ पहुंचा। डेविड डेरिक लंदन का एक मशहूर और अमीर सौदागर था और राजदर्बार

में भी उनदिनों उसकी बहुत चलती, थी अस्तु जब पीटर ने यह सुना कि डिक अपने को डेविड का लड़का बता रहा है (क्योंकि पीटर उस समय दर्वाजे पर आ चुका था) तो उसको इतनी हँसी मालूम हुई कि वह अपने को रोक न सका और जोर से हंस पड़ा। उसके हाथ से शराब की एक बोतल छूट कर जमीन पर जागिरी और उसमें से फेन इत्यादि निकल कर उसके हाथ पांव पर जा गिरा जिससे उसकी बड़ी अजीब हालत बन गई। उसका यह हाल देख डिक भी हंस पड़ा और पीटर से बोला, "मालूम होता है आज तुमको कुछ नशा ज्यादा चढ़ गया है। मगर पीटर इसके जवाब में कुछ भी न बोला और अपना बदन साफ करने बाद खाना परोसने लगा। परोसते २ यकायक पीटर बोल उठा "क्यों साहब आप तो डिक को पकड़ने न गये थे? फिर अकेले क्यों लौट आये।" जेरी डिक का नाम सुनतेही बहुत चिढ़ा मगर कुछ बोला नहीं और चुपचाप भोजन करने लगा पीटर भी फिर कुछ न बोला। डिक थोड़ी देर बाद वहां से उठा और उसी कमरे में आ बैठा जहां कि वह पहिले बैठा हुआ था॥

अब डिक को यह पता लगाने की फिक्र पड़ी कि उस थैली के रुपये कौन ले गया जिसको वह जान रंटन की गाड़ी में से उठा लाया था। उसका ख्याल उस आवाज की तरफ गया जिस को थैली लेती समय उसने सुना था और जिसके ऊपर उसने उस समय कुछ ध्यान न दिया था। सड़क पर नाली खोदने और रंटन की गाड़ी रोकने से लेकर अबतक के उसके सब काम बिलकुल वैसेही पूरे उतरे थे जैसा कि वह सोच चुका

था मगर इस थैली के रुपये के बारे में वह कुछ भी निश्चय न कर सका। क्या गाड़ी के साईस या कोचवान का इसमें हाथ लगा? या कोई दूसरा ही डाकू पर डाका मार कर रुपये डकार गया। डिक को यह भी खयाल हुआ कि उसने गर्टरूड को अपना नाम रिचार्ड बताया था और जेरी से अपने को डेविड होरिक का लड़का कहा था। इस के सिवाय, यह बात भी मशहूर हो गई थी कि मशहूर डाकू डिक आज कल उसी तरफ है और इसी लिये पुलिस के भी कान खड़े रहते थे। अस्तु इन्हीं सब बातों को सोच बिचार कर डिक ने कुछ दिनों के लिये उस जगह से जाना ही उत्तम समझा। उसने अपनी घोड़ी को कस कसा कर दुरुस्त किया और पीटर से यह कह कर कि, "सवेरे गर्टरूड से कह देना कि मैं एक जरूरी काम आ पड़ने के सबब से लंदन जा रहा हूं बहुत जल्द लौट कर उससे जहां वह होगी मिलूंगा।" सराय के बाहर निकला और घोड़ी पर सवार होकर अपने एक दोस्त के मकान की तरफ चला जो कि यहां से कुछ दूर पर एक गांव में रहता था। यह कहने की जरूरत नहीं कि डिक का वह दोस्त भी डिक ही की तरह डाकू था॥

जब डिक अपने दोस्त के घर पहुंचा (जिसका नाम टामी था) उस समय सूर्य की लालिमा आकाश पर छा चुकी थी। टामी का मकान एक छोटे से बगीचे के अन्दर था और जब टामी को लूट मार से फुरसत मिलती थी तो वह इसी मकान में आ कर रहा करता था। डिक दर्वाजे पर पहुंच कर घोड़ी से उतर पड़ा और कुन्डा खटखटाने लगा। थोड़ी ही देर में एक औरत ने आकर दर्वाजा खोला जिसे डिक बखूबी पहिचानता था क्योंकि

कि वह उसी घर में रहा करती थी। डिक को देख वह बहुत खुश हुई। उसने बड़ी खातिर से उसको मकान के अंदर बुलाया और एक कमरे में बैठा कर वह डिक की घोड़ी को मलने और दानापानी देने के लिये जाने लगी मगर डिक ने उसे ऐसा न करने दिया और स्वयं जाकर उसने यह सब काम किया। इन कामों से फ़ुरसत मिलने पर डिक ने उससे पूछा, "क्या टामी आजकल यहां नहीं रहता?" जिसके जवाब में उस स्त्री ने जिस को लोग मोल के नाम से पुकारा करते थे कहा कि "वह आते ही होंगे कहीं बाहर गये हैं॥"

डिक को ज्यादे देर तक बैठना न पड़ा क्योंकि थोड़ी ही देर में टामी आ पहुंचा और वह भी डिक को देख बहुत खुश हुआ। दोनों आदमी पास ही पास बैठ कर बातें करने लगे। बातों के सिलसिले में डिक ने अपना सब हाल अर्थात् जेरी को धोखा देने से लेकर इस वक्त तक जो कुछ हुआ था, कह सुनाया। टामी भी थैली के रुपये गायब हो जाने की बात सुन कर बहुत देर तक गौर करता रहा मगर कुछ समझ में न आया आखिर वह बोला, "खैर जो हुआ सो हुआ कभी न कभी पता लग ही जायगा!"

इस के बाद दोनों ने एक साथ ही भोजन किया। शाम को टामी ने डिक से कहा, "आज मैं एक अमीर के घर पहुंचूंगा ताज्जुब नहीं कि बहुत गहिरी रकम हाथ लग जाये। क्या तुम भी चलोगे?"

डिक०। जरूर! मगर पहिले यह जान लेना चाहिये कि उस अमीर के यहां कुछ पहिरे वगैरह का भी इन्तजाम है या नहीं?

टामी० । सुनो मैं तुम को सब हाल बताता हूं । यहां से कुछ दूर एक छोटा सा गांव है जिसका नाम सूर है । उसके एक सिरे पर छोटी सी एक पहाड़ी है ॥

डिक० । हां हां मैं उस गांव में कई दफे जा चुका हूं और उस पहाड़ी को भी देखा है । वही तो जिसके ऊपर एक बड़ा सा मकान है और जिसका मालिक बड़ाही कंजूस है ॥

टामी० । बस बस वही मकान । आज हम लोग वहीं जायंगे ॥

डिक० । लेकिन मैंने तो सुना है कि वह मकान बहुत मजबूत बना है और उसकी दीवार में सेन्ध लगाना बहुत कठिन है ॥

टामी० । सिर्फ यही नहीं, उस मकान में एक बड़ा कुत्ता भी बंधा रहता है जो रात को खोल दिया जाता है । उससे बच कर किसी का मकान में चले जाना मुश्किल है, इसके सिवाय वहां का पहिरेदार भी पूरा भीमसेन ही है । बड़ा मोटा ताजा और ताकतवर है । मकान के मालिक ने उसको एक कोठड़ी अपने खास कमरे के बगल ही में दे रक्खी है और दो बन्दूकें भी दी हैं तथा यह भी कह रक्खा है कि रात को बारह बजे के बाद किसी बाहरी आदमी को देखते ही बेखटके गोली मारदे ॥

डिक० । तब फिर इन सब बातों का तुमने क्या इन्तजाम किया है ?

टामी० । मैंने सब बातों का इन्तजाम कर लिया है । (जेब से एक ताली निकाल कर) उस मकान के पीछे एक बगीचा है

और मकान का एक दर्वाजा उस बगीचे में है जो बहुत मजबूत लोहे का बना हुआ है । यह (ताली दिखा कर) उसी दर्वाजे की ताली है ॥

डिक० । यह तुम्हें क्योंकर मिली ॥

टामी० । एक दिन इत्तफाक से मैं उस तरफ जा रहा था रास्ते में उसी बगीचे के दो मालियों की बातचीत से जिन्हें मैं पहिचानता था मुझे वह जगह मालूम हो गई जहां यह ताली रक्खी जाती थी । कल जा कर मैं इसे वहां से चुरा लाया ॥

डिक० । तो ताली लेने के लिये तुम्हें मकान के अन्दर जाना पड़ा होगा ?

टामी० । नहीं । वह माली उसे किसी काम के लिये मालिक से मांग लाया था और उसे अपने ही पास रक्खे हुए था । अभी तक उसने डर के मारे ताली खो जाने या चोरी जाने का हाल किसी से नहीं कहा है ॥

डिक० । (कुछ सोच कर) अच्छा उस पहरेदार और कुत्ते का क्या इन्तजाम करोगे ?

टामी० । कुछ न कुछ किया ही जायगा ॥

डिक० । अच्छा तो मैं चलने को तैयार हूं तुम कब चलोगे ?

टामी० । रात दस बजे के बाद ॥

इस बातचीत के बाद वे दोनों दोस्त उठे और कुछ देर तक घूम फिर कर मकान के अन्दर चले गये जहां उनके लिये खाना तैयार था । दोनों ने भोजन किया और तब देखने से मालूम हुआ कि दस बजने में थोड़ी ही देर है । टामी डिक को एक ऐसे कमरे में लेगया जहां नकली दाढ़ी मोछ और कई

तरह की पोशाकें तथा और भी बहुत सी उन लोगों के पेशे के सम्बन्ध की चीजें थीं। तरह तरह के ताला तोड़ने और सेन्ध लगाने के औजार तथा हथियार भी एक तरफ रक्खे हुए थे। दोनों ने काली पोशाकें पहिनीं और एक एक लालटेन अपनी अपनी कमर में लगाई जो इस ढंग की बनी हुई थी कि खटका दबादेने से उसका मुंह बन्द हो जाता था और बिल्कुल रोशनी नहीं मालूम होती थी। इन सब सामानों से दुरुस्त हो जाने पर टामी एक टेबुल के पास गया और उसके दराज में से एक शीशी निकाली जिसमें काले रंग का कोई अर्क भरा हुआ था। दूसरे दराज में से उसने माँस का एक टुकड़ा निकाला और ये दोनों चीजें बड़ी हिफाजत के साथ एक कागज में लपेट अपने जेब में रख लीं, एक एक पिस्तौल भी दोनों ने लेली और तब वे मकान के बाहर निकले॥

बदली होने के कारण अंधेरा छाया हुआ था और इस से इन दोनों को काम करने में और भी ज्यादा सुबीता हो गया था॥
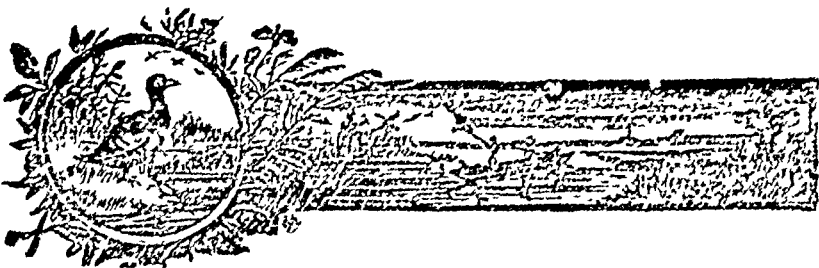
पांचवां बयान ।

अब हम अपने पाठकों के यह दिखाया चाहते हैं कि उस थैली के रुपये क्यों कर गायब हो गये जिसे डिक जान रंटन की गाड़ी से चुरा लाया था ॥

हम ऊपर लिख आये हैं कि डिक को जान रंटनके रुपये लेकर लंदन जाने का हाल पहिले जेक नामक एक उसके साथी ने बताया था। जेक उन लोगों में से था जो जब तक कि किसी से आमदनी की आशा रहती है तब तक तो उसके पीछे जोंक की तरह लिपटे रहते हैं मगर जैसी ही कि उनकी इस आशा पर किसी कारण से पानी पड़ जाता है या किसी कारण से वे उस आदमी से नाराज हो जाते हैं तो उसकी पहिले की की हुई भलाइयों पर कुछ भी ध्यान नहीं देते और उसका बुरा करने में ही अपना भला समझते हैं ॥

जेक एक भले आदमी का लड़का था मगर स्वयं वैसा न था। इसकी झूठ बोलने और जूआ खेलने की आदत से नाराज हो कर उसके बापने उसको घर से निकाल दिया था। कुछ दिनों तक तो वह योंही मारा मारा फिरता रहा मगर अन्त में उस ने एक अमीर आदमी के यहां नौकरी करली। वहां कुछ दिनों तक तो वह अच्छी तरह से काम करता रहा मगर एक दिन उसकी नीयत बदल गई और वह तीन हजार रुपये चुरा कर भाग गया। कुछ दिनों तक तो वह पुलिस से बचा रहा मगर आखिर एक रोज पकड़ गया और चोरी साबित हो जाने पर उसे एक बरस के कैद की सजा मिली। वह सात महीने के बाद

एक दिन मौका पाकर कैदखाने से भी भाग निकला मगर उसे रास्ते में एक सिपाही ने पहिचान लिया और वह फिर इसे पकड़ कर कैदखाने की तरफ़ ले चला। रास्ते में सिपाही को कुछ बेखबर पाकर उसने उसी की तलवार से उसे मार डाला और स्वयं भाग निकला॥

इत्तफाक से डिक भी उसी तरफ कहीं जारहा था। उसने जेक को एक सिपाही का खून करके भागते देखा तो उसे पकड़ा और सब हाल पूछा। जेकने सब हाल उससे कहा मगर सच झूठ मिला कर इस तरह से कि डिक को उसपर दया आगई और उसने उसे इस शर्त पर छोड़ दिया कि फ़िर कभी चोरी न करे। डिक ने उसको एक ऐसी दवा भी बता दी जिसके लगाने से उसका रंग कुछ काला हो गया और तब वह नकली मोछें लगाकर बेफिक्री के साथ फिर घूमने फिरने लगा। वह डिक को कभी कभी मतलब की खबरें बताया करता था और इसके बदले में डिक भी उसे कुछ दे दिया करता था॥

एक दिन उसने डिक को यह खबर सुनाई कि एक बुढ़िया के पास बहुत सी दौलत है और कल वह उसे ले कर कहीं जायगी। मगर डिक ने एक औरत तिस पर बुढ़िया के रुपये जबरदस्ती छीनने से साफ़ इन्कार कर दिया। मगर जेक से न रहा गया। उसने स्वयं जाकर उस बुढ़िया के रुपये छीन लिये। जब डिक को यह मालूम हुआ तो वह बहुत बिगड़ा और उसने जेक से वह सब रुपये बुढ़िया को दिलवा दिये बल्कि अपने पास से भी कुछ दिया: बस उसी दिन से जेक भीतर ही भीतर डिक से नाराज हो गया और उस का बुरा करने की फिक्र में

लग गया । मगर वह खूब समझता था कि गुप्त गुप्त डिक से बिगड़ जाने पर वह कभी उसे जीता न छोड़ेगा । इसलिये वह बाहर से उसका दोस्त बना रहा मगर भीतर ही भीतर इस फिक्र में पड़ा रहा कि उसे किसी तरह नीचा दिखावे वह उसे गुप्त गुप्त पकड़वा भी नहीं सकता था क्योंकि डिक यह बात बता देता कि उसने एक सिपाही का खून किया है और तब उसे फांसी पर चढ़ने की नौबत आ पड़ती ॥

आखिर उसे एक दिन यह खबर लगी कि रंटन कुछ रुपये ले कर लंदन जायगा । उसने वह खबर डिक को सुनाई जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं । जेकने सोचा हुआ था कि जब डिक रुपये लूटने का कुछ उद्योग करेगा तो वह रंटन को सब हाल बता देगा और तब रंटन डिक को पकड़वा देंगे । यही सोच कर वह बराबर उस जगह मौजूद रहा जहां उसको यह भरोसा था कि डिक अपनी कार्रवाई करेगा । उसने डिक को सड़क पर नाली खोदते देखा मगर उसे उसके इस काम का मतलब कुछ भी समझ में न आया कि क्यों यह सब कर रहा है । जान रंटन की गाड़ी उसके सामने ही टूटी थी और वे उसके सामने ही डिक के साथ सराय को चले गये थे मगर डिक के सामने जेक की यह हिम्मत न हुई कि जान रंटन को कुछ समझावे या होशियार करे । आखिर जब रात होगई और तब भी डिक रुपये लेने न आया तो उस को यह ख्याल हुआ कि शायद डिक ने अपना वह इरादा छोड़ दिया है और अब वह रुपये न ले । अस्तु उसको यह खयाल पैदा हुआ कि वे रुपये खुद ले ले और वह इस फिक्र में लगा कि किसी तरह से कोच-

वान और साईस गाड़ी के पास से हट जाँय तब वह पास पहुंच कर रुपये निकाल ले। आखिर उसे यह मैाका भी मिल गया। कोचवान और साईस दोनें गाड़ी की छत पर जाके सो रहे और जब जेक को यह विश्वास हो गया कि वे दोनें सो गये ते वह अपनी जगह से निकला और आहिस्ते २ कदम दबाता हुआ गाड़ी के पास पहुंचा। अन्दर जाकर उसने अपनी जेब से एक झब्बा निकाला जिस में कई तरह की बहुत सी तालियां थीं और उन्हीं में से एक ताली लगाकर उसने वह सन्दूक खोल लिया जिसमें थैली रक्खी थी। उसमें रुपये और नोट तथा अशर्फियां थीं जिन्हें उसने अपनी जेब में रक्खा और ज़मीन पर से कंकड़ वगैरह उठाकर थैली में भर कर थैली फिर उसी जगह रख दी। वह अब सन्दूक का ताला बंद करने की फ़िक्र में था जब उसने किसी की आहट पाई और वह धीरे से गाड़ी के नीचे उतर कर उसी के नीचे लेट रहा॥

इतनेही में डिक उस जगह आपहुंचा और गाड़ीके अंदर घुस कर उसने वह थैली निकाल ली जिसमें वह समझे हुआ था कि रुपये होंगे। जब वह गाड़ी के बाहर निकला और कुछ चांदने में आया ते जेक ने उसे पहिचान लिया और डर के मारे उस के मुंह से एक हलकी चीख निकल गई जिसे कोशिश करने पर भी वह न रोक सका मगर जब उसने देखा कि डिक ने उस आवाज पर गैार न किया ते उस की तबीयत ठिकाने हुई और वह गाड़ी के नीचे से निकला। पहिले ते उस ने चाहा कि डिक के पीछे जाकर देखे कि वह थैली कहां रखता है मगर फिर उसने अपना यह विचार छोड़दिया और अपने ठिकाने चला गया॥

छठवां बयान।

जब डिक और टामी उस मकान के पास पहुंचे तो उन्होंने देखा कि मकान की सब खिड़कियें सिवाय दो तीन के बन्द हैं। टामी एक खिड़की के नीचे जाकर खड़ा हो गया जिसमें देखने से मालूम होता था उस कमरे में बखूबी रोशनी हो रही है। खिड़की में बहुत मोटे २ छड़ लगे हुए थे और उस रास्ते से किसी का अन्दर चले जाना असंभव था। टामी ने डिक को दिखा कर कहा, "इसी ऊपर वाले कमरे में राइट (मकान का मालिक) अपने रुपये रखता और सोता है।" इस के बाद टामी घूम कर मकान के पीछे की तरफ गया और उस दरवाजे के पास पहुंचा जिसकी ताली उस के पास थी। वह दरवाजे को खोला ही चाहता था कि एक कुत्ते के भूंकने की आवाज आई और वह रुक कर देखने लगा। टामी ने अपनी जेब से मांस का टुकड़ा निकाला और उस शीशी का अर्क उसके ऊपर टपका कर वह टुकड़ा उस कुत्ते के आगे फेंक दिया जो अब पास आगया था और जोर २ से भूंक रहा था। कुत्ता थोड़ी देर तक खाता रहा मगर बाद को चुपचाप जमीन पर लेट कर तड़पने लगा। थोड़ी ही देर में मालूम हो गया कि अब उस में जान नहीं है॥

दोनो आदमी कान लगा कर चुपचाप कुछ देर आहट लेते रहे कि कुत्ते के भूंकने से मकान में कोई जागा तो नहीं मगर जब कोई आवाज न सुनाई दी तो उन्हें निश्चय हो गया कि किसी की नींद नहीं टूटी है। टामी ने दरवाजा खोला। ऊपर जाने

के लिये सीढ़ियां दिखाई दीं दोनों ऊपर चढ़ गये। सामने ही एक कमरा दिखाई दिया जो खुला हुआ था। उस कमरे से एक रास्ता एक दालान की तरफ गया था और दूसरा एक कोठरी में। टामी डिक के साथ दालान की तरफ बढ़ा और उस को पार करने बाद एक दूसरे कमरे के दर्वाजे पर जा कर खड़ा हुआ। राइट (मकान का मालिक) इसी कमरे में सोता था॥

टामी और डिक दोनों का यह खयाल था कि कमरे का दरवाजा अन्दर से बंद होगा मगर उनको बड़ा ही ताज्जुब हुआ जब उन्होंने दर्वाजा कुछ खुला हुआ और राइट को अंदर एक कुरसी पर बंदूक हाथ में लिये बैठे पाया। दोनों चुपचाप दर्वाजे के बगल में खड़े होगये। थोड़ी देर बाद अंदर से राइट ने पूछा, "बाहर कौन है?" और जब उसने इस बात का कोई जवाब न पाया तो स्वयम् उठकर देखना चाहा कि बाहर कौन है। राइट बूढ़ा और कमजोर था इसलिये उठने के लिये उसे टेबुल का सहारा लेना पड़ा। उसने बन्दूक टेबुल पर रख दी और एक हाथ का सहारा लेकर खड़ा होगया। यह डिक और टामी के लिये अच्छा मौका था क्योंकि जबतक उस के हाथ में बंदूक थी वे अन्दर घुसने का साहस नहीं कर सकते थे। वे दोनों झपट कर कमरे के अंदर घुस गये और उस बेचारे बुड्ढे पर टूट पड़े। डिक ने एक हाथ से उसकी कलाई पकड़ी और दूसरे हाथ से पिस्तौल उसके सिर के सामने करके बोला, "बस चुपचाप खड़े रहो॥"

राइट चुपचाप एक कुरसी पर बैठ गया। टामीने खोज कर उसकी जेब से तालियों का गुच्छा निकाल लिया और दराज

चीज ऐसी न दिखाई पड़ी जिसपर कुछ शक करते। न तो कहीं कोई लाश इत्यादि दिखाई पड़ी और न किसी के पैर का कोई निशान॥

सातवां बयान।

जब डिक और टामी को अपनी भूल मालूम हुई तो वे बहुत पछताने और अफसोस करने लगे, मगर अब अफसोस करने से क्या हो सकता था। आखिर डिक अपनी जगह से उठा और इधर उधर देखने लगा कि शायद कोई भागने की जगह निकल आवे मगर सिवाय उस खिड़की के और कोई ऐसी जगह न दिखाई पड़ी और खिड़की भी ऐसी थी कि उस रास्ते से किसीका बाहर निकल जाना बिल्कुल असम्भव था। यकायक टामी एक बोतल रखने के लिये उस पत्थर के नीचे की तरफ झुका जिस पर वे दोनों बैठे हुए थे तो उसको कुछ चांदना मालूम हुआ। वह नीचे उतर कर देखने लगा कि यह रोशनी कहाँ से आ रही है। गौर से देखने पर मालूम हुआ कि उस पत्थर के नीचे कोई हाथ भर ऊँची और दो हाथ के करीब लम्बी एक खिड़की सी बनी हुई और उसमें जानवरों के बचाव के लिये एक मामूली जाली लगी हुई है जोकि सहज ही में उखाड़ी जा सकती है। टामी ने यह देखते ही डिक को भी वह जगह दिखाई और इसके बाद वे दोनों दोस्त बैठ कर खाने पर पूरी तरह से हाथ साफ करने लगे क्योंकि अब इनको अपने निकल भागने का अच्छा रास्ता मालूम हो गया था॥

जब वे लोग खा पी चुके तो डिक ने लात मार कर वह अङ्गूला हटा दिया और लेट कर वह उस रास्ते से बाहर निकल गया। वह जगह जमीन से कुछ ऊंची पड़ती थी मगर नीचे मुलायम मिट्टी थी इसलिये डिक को कुछ चोट न आई। टामी भी उसी रास्तेसे बाहर निकल आया और दोनों आदमी अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए जिन्हें वे थोड़ी ही दूर पर एक पत्थर के साथ लगाम अटका कर छोड़ गये थे। चलते समय टामी "मरे! मरे!" कहकर जोर से चिल्ला उठा और साथ ही अपनी पिस्तौल भी हवा में छोड़ी। यही वह आवाज थी जिसे घर के लोगों और जमादार ने भी सुना था। टामी ने यह सिर्फ उन सभों को धोखा देने के लिये किया था॥

इसके बाद कुछ दिनों तक डिक टामी के साथ उसके मकान पर चुपचाप रहा क्योंकि यह उसकी आदत थी कि जब कहीं भारी जगह हाथ मारता था तो कुछ दिनों के लिये फिर चुपचाप होजाता था। एक तो पहिले ही यह उसकी आदत के खिलाफ था कि किसी जगह आठ दस रोज से ज्यादा रहे मगर इसके सिवाय बगैर किसी काम के रहना उसे और भी बुरा मालूम होता था और वह फिर नये शिकार की तलाश में निकल जाता था। जब वह किसी भारी मुहिम पर जाता था तो प्रायः टामी को भी साथ ले लेता था और टामी तो उस को बगैर साथ लिये कहीं जाता ही नहीं था और सच तो यों है कि टामी का जो कुछ नाम और डर लोगों में था वह डिक ही की बदौलत था। डिक मामूली डाकुओं की तरह हर एक पर जब मौका मिलता हाथ साफ नहीं किया करता था। वह

पहिले से सब सोच समझ के जाता था और जहां कि उसको यह मालूम हो जाता था इस काम के पूरा होने में कुछ सन्देह हो तो वह ऐसी जगह जाता ही न था। उसकी आमदनी का आधे से ज्यादा हिस्सा गरीबों के पेट में जाता था लेकिन वह इस तरह से कि जिनको वह देता था उनको यह भी न मालूम होता था कि उनकी सहायता करने वाला कौन है तथा कहां का रहने वाला है। अमीरों और खास कर ऐसे लोगों से जिन को वह जानता था कि गरीबों को दुःख देकर रुपया कमाते हैं वह बहुत चिढ़ता था और उन्हीं को लूटता भी था। अगर उसके हाथ से कभी किसी भले का बुरा हो जाता था तो उसे बड़ा दुःख होता और अपने भरसक वह उनका नुकसान पूरा कर देता था॥

जब डिक को टामी के मकान पर रहते कई दिन हो गये तो वह फिर कहीं जाने को घबड़ाने लगा। आखिर एक रोज दोनों दोस्त एक साथ फिर बाहर निकले। उनका कोई खास जगह जाने का इरादा नहीं था इसलिये घूमते फिरते वह एक गाँव की तरफ जा निकले जिस का नाम "काङ्गरू" था। गाँव के बाहर की तरफ एक सराय थी जिसमें अकसर अमीर लोग भी उतरा करते थे क्योंकि उस तरफ और कोई अच्छी सराय नजदीक में नहीं थी। सराय का मालिक डिक और टामी दोनों को पहिचानता था मगर डिक का असली हाल और नाम उसे मालूम न था। वह उसे टामी की तरह कोई मामूली डाकू ही समझता था। पीटर की तरह वह इनका दोस्त तो नहीं था मगर इन दोनों का भेद पुलिस को बताने से भी वह डरता

था क्योंकि वह अच्छी तरह से समझता था कि अगर इनमें से किसी को भी मालूम होजायगा कि वह पुलिस से मिला हुआ है तो फिर उसकी जान कदापि न बचेगी ॥

अस्तु डिक और टामी दोनों इसी सराय में आकर उतरे। शाम होगई बल्कि कुछ रात भी जा चुकी थी इसलिये आज की रात उन्होंने यहीं काटना उत्तम समझा। दोनोंने सराय के मालिक से कुछ फल और शराब मांगी और तब दोनों आदमी एक खिड़की के पास बैठकर बातें करने और खाने लगे। आजकी रात अँधेरी तो थी मगर तारागणों की चमक आकाश पर फैली हुई थी और इसीलिये रात बड़ी सुहावनी मालूम पड़ती थी। बात करते करते डिक बहुत सी शराब पी गया जो कि उसकी प्रकृति के बिल्कुल विपरीत था क्योंकि वह इसका बुरा फल अच्छी तरह जानता था, और खास करके उसका इस समय नशे में होजाना उसके लिये और भी बुरा हुआ ॥

जिस कमरे में ये दोनों बैठे हुए थे उसके दूसरी तरफ कुछ भले आदमी बैठ कर ताश खेल रहे थे। जब डिक और टामी खा चुके तो ये दोनों भी वहां जा पहुंचे और उनके साथ ताश खेलने लगे। उन लोगों में से एक आदमी जो बातचीत और पोशाक से भला आदमी मलूम होता था रंग का कुछ काला और कुछ मोटा भी था। डिक टामी से उस आदमी की तरफ इशारा करके कहने लगा (इस ढंग से जिसमें वह आदमी भी सुन ले) "वह जो सामने बैठा हुआ है मालूम होता है बहुत अमीर है। कैसी शान के साथ बैठा है जैसे दुनिया बस इन्हीं के रहने के लिये बनी है।" वह आदमी पहिले तो डिक की

बात सुनी अनसुनी कर गया मगर जब डिक इसी तरह आवाजे सवाजे मारने लगा तो वह भी बिगड़ खड़ा हुआ। बातही बात में दोनों में झगड़ा होने लगा। अन्त को यह निश्चय हुआ कि कल सवेरे दोनों आदमी तलवार से आपस में लड़ के निबटेरा करलें। इसके बाद जब वह आदमी जाने लगा तो उसने डिक से उसका नाम पूछा। डिकने अपने को लार्डमेयर का सब से छोटा लड़का बताया और अपने साथी (टामी को) लार्ड चेसफील्ड का भतीजा कहा॥

टामी डिक की बातें सुन सुन कर बड़ी मुशकिल से अपनी हंसी रोक रहा था क्योंकि वह पूरी तरह से समझता था कि डिक इस समय नशे में आकर यह कह रहा है। इसका सबब यह था कि लार्डमेयर का सब से छोटा लड़का उन दिनों फ्रांस गया हुआ था और लार्ड चेसफील्ड का भतीजा आठ दस रोज हुए मर चुका था। डिक इन सब बातों को अच्छी तरह जानता था मगर इस समय नशे ने उसको बिल्कुल बदहवास सा कर दिया था। सौभाग्य वश उन लोगों में से जो वहां मौजूद थे कोई इन बातों को नहीं जानता था और इसी सबब से जब टामी ने देखा कि किसीने डिकके ऊपर शक नहीं किया तो उसे कुछ ढाढ़स हुई। इसके बाद वह समझा बुझा कर डिक को ऊपर के एक कमरे में लेगया और जब वह सो गया तो आप नीचे चला आया क्योंकि अभी उसे नींद नहीं मालूम होती थी॥

टामी नीचे आकर एक कमरे में चला गया जिसमें बहुत सी किताबें रक्खी हुई थीं जो कि उस सराय में टिकने वालों के पढ़ने के लिये थीं। टामी ने एक तस्वीर की किताब उठाली

और एक आराम कुर्सी पर बैठ कर तस्वीरें देखने लगा ॥

टामी को बैठे अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि उसे कई आदमियों के बातचीत की आवाज सुनाई दी जो उस कमरे के बगल में बैठे मालूम होते थे जिसमें टामी बैठा था। टामी ध्यान लगा कर उन की बातें सुनने लगा। एक आदमी ने कहा "मुझे पूरी तरह से पता लगा है कि मशहूर डाकू डिक टर्पिन और टामी किङ्ग* तुम्हारी सराय में उतरे हैं। तुम उन लोगों का नाम बताओ जो आज तुम्हारी सराय में इस समय हैं।" इसके जवाब में दूसरे आदमी ने जो आवाज से टामी को सराय का मालिक मालूम हुआ, कहा "मुझे कभी भी विश्वास नहीं हो सकता कि डिक और टामी आज मेरी सराय में टिके हैं, आज तो कोई नया आदमी भी नहीं आया सिर्फ थोड़ी देर हुई दो भले आदमी आये हैं जिसमें से एक तो लार्डमेयर के सब से छोटे लड़के हैं और दूसरे लार्ड चेसफील्ड के भतीजे हैं॥"

पहिला आदमी०। (चौंक कर जैसाकि उस की आवाज से मालूम होता था) हैं, क्या कहा! लार्ड चेसफील्ड का भतीजा! वह तो आठ दस रोज हुए मर गया है, मरके वह यहां कहां से आ पहुंचा? जरूर वह कोई दूसराही आदमी है जो अपने को लार्ड चेसफील्ड का भतीजा बताता है। वे दोनों कहां टिके हैं मुझे बताओ मैं जरूर उन्हें गिरफ़्तार करूंगा॥

सराय वाला०। वे उस ऊपर वाले कमरे में सो रहे हैं।

पहिला आदमी०। अच्छा तुम पहिले कुछ जलपान करने को ले आओ। मैं और मेरे साथी इतनी दूर से तेजी के साथ

---

* ये उन दोनों के पूरे नाम थे॥

कारण उस की तकलीफ बढ़ती जाती थी। डिक यह नहीं जानता था कि टामी को कहाँ कहाँ चोट लगी है मगर यह बखूबी समझता था कि उसे चोट गहरी लगी है॥

डिक थोड़ी देर के लिये रुक गया और जब टामी उस के पास आ गया तो उसने देखा कि उस का सिर्फ एक ही पैर रिकाब में है और दूसरा पैर रिकाब के बाहर है। देखने से मालूम हुआ कि वह पैर इतना सूज गया था कि रिकाब में नहीं जा सकता था। डिक को अपने दोस्त की यह हालत देख बहुत अफसोस हुआ मगर वह क्या कर सकता था। उस को जान बचाने की फिक्र पड़ी हुई थी और इसी सबब से वह कहीं रुक कर कुछ इलाज भी नहीं कर सकता था। अस्तु वह बराबर टामी को बढ़ावा देता और आगे आगे रास्ता बताता हुआ जाने लगा क्योंकि इधर की रत्ती रत्ती जमीन उसकी देखी हुई थी। थोड़ी दूर आगे जाने पर एक नाला मिला। डिक तो उसे साफ पार कर गया मगर टामी का घोड़ा न जा सका और दूसरे किनारे पर पहुंचने के पहिले ही वह नाले में जा गिरा। टामी बहुत कोशिश करने पर भी अपने को बचा न सका और लुढ़क कर घोड़े के नीचे आ रहा। घोड़े को भी बहुत ज्यादे चोट आई मगर वह इतना डर गया कि तेजी के साथ एक तरफ को भागा। डिक ने पीछा करके उसे पकड़ा और तब उस जगह आया जहां टामी को छोड़ गया था। वह अभी तक उसी जगह बेहोश सा पड़ा हुआ था, डिक ने नाले में से पानी लाकर उसके मुँह पर छिड़का मगर वह पन्द्रह बीस मिनट तक होश में न आया। इसके बाद जब वह होश में आया

तो बहुत सुस्त मालूम होता था। डिक ने उसे उसके घोड़े पर बैठाया मगर वह सम्हल न सकता था, इस लिये उसके कहने पर डिक ने एक कपड़े से जो उसके पास था टामी को काठी के साथ बांध दिया जिसमें वह फिर लुड़क न जाय। इसके बाद फिर दौड़ शुरू हुई। अब आगे की जमीन उतनी ऊबड़ खाबड़ न थी इसलिये वे दोनों बगैर किसी रूकावट के चले गये॥

उधर इनका पीछा करने वाले भी सुस्त न थे। ज्योंही उन्हें मालूम हुआ कि वे दोनों दीवार पार करके जङ्गल की तरफ़ निकल गये त्यों ही उनके अफसर ने अपने आदमी चारो तरफ भेज के कई ऐसे आदमी बुलवा भेजे जो इधर का जङ्गल बखूबी जानते थे। उन को अपने साथ लेकर उसने डिक और टामी का पीछा किया मगर इस बीच में करीब आधे घंटे की देर हो गई थी और डिक और टामी को अच्छा मौका मिल गया था। डिक को सड़क और बस्ती बचा बचा कर बहुत चक्कर खाते हुए जाना पड़ता था और उनके पीछा करने वाले सड़क सड़क जाने के कारण इन बातों से और भी फ़ायदा उठाते थे। आखिर जिस समय टामी नाले में गिर गया था और डिक ने बांध कस कर उसे फिर घोड़े पर सवार कराया था वे पीछा करने वाले भी वहां आ पहुंचे थे। भाग्यवश ऐसा हुआ कि हवा उन पीछा करने वालों की तरफ से डिक की तरफ बह रही थी और डिक ने उनके घोड़ों के टापों की आवाज सुन ली थी। इसलिये वह घोड़ों को तेज करके निकल गया और उन पुलिस वालों को यह न मालूम होने पाया कि वे लोग डिक के इतनी नजदीक पहुंच गये हैं। अगर वे लोग यह जान जाते तो कदा-

चित डिक का बचकर निकल जाना मुश्किल हो जाता। जब वे लोग उस नाले के किनारे पहुंचे तो उन्हें पार करने के लिये कोई पुल वगैरह उन्हें न नजर पड़ा और न उन्हें इतनी हिम्मत ही हुई कि उसे टप जांय। इसके सिवाय अभी तक उनलोगों का भी कुछ पता न लगा था जिन का वे पीछा कर रहे थे आखिर लाचार होकर उन लोगों को पीछे लौट जाना पड़ा॥

जब डिक करीब बारह मील के चला गया तो उसे अपनी चाल कम करनी पड़ी क्योंकि अब टामी का बंधे रहने पर भी घोड़े की पीठ पर बैठे रहना मुश्किल था। आखिर वह एक ऐसी जगह पहुंच कर रुका जहां कि पेड़ बहुत ज्यादे थे और कई झाड़ियां भी ऐसी थीं जिनके अन्दर आदमी बखूबी छिप कर लोगों की नजरों से बच सकता था। डिक ने टामी को घोड़े पर से उतारा और एक झाड़ी में लेजाकर लेटा दिया। उसके घोड़े को लम्बी बागडोर से बांध देने बाद वह फिर अपनी घोड़ी पर सवार हुआ और यह देखने के लिये निकला कि नजदीक में कोई और अच्छी टिकने लायक जगह है या नहीं। वह चाहे घोड़ा फेंके चला आया था मगर इतना जानता था कि इस तरफ प्रायः जिप्सी लोगों के डेरे पड़े रहा करते हैं और ताज्जुब नहीं कि इस समय भी कोई हो और यही समझ कर वह निकला था कि कदाचित कोई मिल जाय॥

डिक को ज्यादा दूर जाना न पड़ा। थोड़ी ही दूर पर उसे कई खेमे दिखाई दिये जिन पर जरा ही गौर करने बाद वह समझ गया कि वे जिप्सियों के हैं। यह विश्वास होते ही वह बेखटके उन खेमों के पास चला गया और नजदीक जाने पर

एक आदमी को खेमों से कुछ दूरी पर टहलते पाया। डिक जिप्सियों का रहन सहन और व्यवहार पूरी तरह से जानता था इस लिये वह बेधड़क उस आदमी के पास चला गया और एक खास तरह से सलाम करने बाद सामने खड़ा हो गया। उस आदमी ने सिर उठा कर उसे कुछ देर तक गौर के साथ देखा और इसके बाद पूछा, "तुम कौन हो?"

इस जिप्सी की अजीब सूरत शक्ल थी। उसके बाल बड़े बड़े और घुंघराले थे और उसके कंधों और पीठ पर लटके हुए थे। उसके हाथ में एक अजीब तरह का हुक्का था जिसमें नैचे की जगह का खोखला बांस करीब हाथ भर लम्बा लगा हुआ था और सिरे पर एक चिलम की शक्ल का गड़हा किया हुआ था। सिर पर उसके बड़ा सा मुड़ासा बंधा हुआ था और उसके कानों में सोने की भारी बालियां पड़ी हुई थीं। उसका कुरता पैरों तक लटक रहा था और कमर के पास एक रस्सी से बँधा हुआ था॥

डिक ने इस जिप्सी के सवाल के जवाब में कहा, "मैं एक सीधा सादा आदमी हूं॥"

जिप्सी०। क्या चोर हो?

डिक०। चोर नहीं मैं डाकू हूं॥

जिप्सी०। हूं!! तुम्हारा नाम?

डिक०। मुझे लोग डिक टर्पिन कहकर पुकारते हैं॥'

जिप्सी०।(उत्कंठा के साथ)क्या तुम वही मशहूर डिक टर्पिन हो जिसके साहस से भरे काम और मशहूर घोड़ी बेस(यह डिक की घोड़ी का नाम था) की मैं बहुत तारीफ सुनता हूं॥

डिक०। हां मैं वही हूं॥

जिप्सी०। अहा! मैं कितने दिनों से तुम से मिला चाहता हूं मैंने तुम्हारे......

डिक०। (बात काट कर) अच्छा पहिले तुम यह बताओ कि मैं यहां पर टिक सकता हूं या नहीं! पुलिस वालों ने मेरा और मेरे एक साथी का पीछा किया है और हमलोग कांगरू से यहां तक भागते चले आये हैं। हमारा पीछा करने वाले शायद हमको न पाकर लौट गये हों॥

जिप्सी०। तुम लोग खुशी के साथ यहां रह सकते हो, हम लोग अपनी जान रहते तुम्हारे ऐसे बहादुर का बाल न बांका होने देंगे। मगर तुमने क्या कहा? क्या कांगरू से आ रहे हो? काङ्गरू यहां से पचीस मील है!!

डिक०। (आश्चर्य के साथ) पचीस मील?

जिप्सी०। हां यह जङ्गल उस गांव से पचीस मील की दूरी पर है। मैंने पहिले बहुत दफे सुना था कि तुम अपनी विचित्र घोड़ी बेस पर बहुत लम्बे लम्बे सफर किया करते हो मगर मैं अभी तक इन बातों पर विश्वास न करता था। आज मैं आ-खों से देख रहा हूं कि जो कुछ मैं सुना करता था वह सब सही है। अच्छा वह तुम्हारा साथी कहां है?

डिक०। वह यहां से थोड़ी ही दूर पर है। वह बहुत जख्मी हो रहा है और रास्ते में घोड़े से गिर भी चुका है॥

जिप्सी०। उस को जल्दी यहां ले आओ कुछ दवा वगैरह का इन्तजाम किया जाय॥

डिक तुरन्त वहां से लौटा। अब उसको किसी बात का डर न था

क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि जिप्सी एक दफे जो मुंह से कह देते हैं अपने भरसक उसे नहीं बदलते। जो उनका अतिथी होता है उसकी बहुत खातिर करते हैं और उसे किसी बात की तकलीफ नहीं होने देते। सब से भारी बात तो उनमें यह है कि किसी आदमी का भेद कभी नहीं खोलते जब तक कि वह उन का कुछ बुरा न करे। हां यह बात भी जरूर है कि जो एक दफे भी उनके साथ विश्वासघात करता है उसके पीछे जी जान से पड़ जाते हैं और बिना उसकी जान लिये नहीं छोड़ते॥

डिक उस जगह पहुंचा जहां टामी को छोड़ गया था। टामी अभी तक उसी जगह पड़ा हुआ था मगर अब बिल्कुल बेहोश था। आखिर डिक ने अपनी घोड़ी को वहीं छोड़ा और टामी को उठाये हुए उसी जगह आ पहुंचा जहां जिप्सियों के खीमे थे। वह जिप्सी अभी तक उसी जगह टहल रहा था। डिक ने टामी को उसके सामने जमीन पर लेटा दिया और आप फिर उस जगह लौटा जहां अपनी घोड़ी और डिक का घोड़ा छोड़ आया था। वह बेस पर सवार हुआ और दूसरे घोड़े की लगास पकड़ कर फिर अपने टिकाने लौट आया। वह जिप्सी टामी के ऊपर झुका हुआ उसके बदन को देख रहा था। डिक को देख वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "तुम्हारे साथी को चोट गहरी आई है, दाहिनी पसली की दो हड्डियां टूट गई हैं और घुटने में भी बहुत चोट लगी है इसके सिवाय सिर में भी कुछ चोट लगी है लेकिन कोई डर की बात नहीं है॥"

इतना कहकर उस जिप्सी ने खीमों की तरफ मुंह करके

"जीला! जीला!!" करके कई आवाजें दी। थोड़ी देर में एक अधेड़ औरत एक खेमे से बाहर आई। जिप्सी ने अपनी विचित्र भाषा में देर तक उससे कुछ बातें कीं जिसे डिक बिल्कुल न समझ सका। जब उनकी बातें खतम हुई तो वह औरत थोड़ी देर के लिये कहीं चली गई और हाथ में एक बकस लिये हुए लौटी जिसमें तरह तरह की शीशियां दवाइयों से भरी हुई रक्खी हुई थीं। वह औरत टामी के बगल में बैठ गई और एक शीशी में से कोई दवा निकाल टामी को खिलाई। इस के बाद उसने एक मरहम लेकर टामी की पसलियों और घुटने पर लगाया और उस के ऊपर से एक साफ कपड़े का टुकड़ा बांध दिया। तब वह टामी का सिर देखने लगी मगर वहां कुछ ज्यादा चोट नहीं थी इस लिये उस जगह सिर्फ एक पट्टी पानी से तर करके बांध दी गई। इसके बाद उस औरत और जिप्सी ने मिल कर टामी को उठाया और एक खीमें में लेजा कर एक मुलायम बिछौने पर लेटा दिया॥

इस बीच में डिक ने दोनों घोड़े मल दल डाले थे और पेड़ के साथ बांध कर थोड़ी घास दोनों के आगे डाल दी थी जो उसी जगह पड़ी हुई थी। अब सवेरा हुआ ही चाहता था इस लिये डिक की सोने की इच्छा तो नहीं थी मगर नींद और थकावट के कारण उसे उस जिप्सी का कहना मानना ही पड़ा और वह जाकर सो रहा। जब उसकी आंख खुली दोपहर दिन चढ़ चुका था। डिक हाथ मुंह धोकर खीमे के बाहर आया और जरूरी कामों से निपट के टामी के पास गया और उससे तबीयत का हाल पूछा। उसके पसलियों में बहुत दर्द था और घुटना

भी सूज आया था, डिक के जिप्सी से पूछने पर मालूम हुआ कि अभी वह दस पंद्रह दिन विछौने से उठ न सकेगा॥

डिक टामी के पास बैठ गया और वह जिप्सी तथा उस की स्त्री जीला थोड़ी देर के लिये उठकर खीसे के बाहर चले गये। टामी ने डिक से कहा, "मैं समझता हूं अब कोई डर की बात नहीं है॥"

डिक०। नहीं अब कुछ डर नहीं है ये जिप्सी अपने भर-सक हमें किसी मुसीबत में पड़ने न देंगे॥

टामी०। जीला कहती थी कि आज सब कोई एपिङ्ग के जंगल में जायँगे वहां उन लोगों की कोई सभा होने वाली है। मुझे भी उसके साथ जाना होगा॥

डिक०। तो यह तो हमारे लिये और भी अच्छा है वह जङ्गल बस्ती से बहुत दूर पड़ता है॥

टामी। हां सो तो है। अच्छा तुम मेरा एक काम कर सकोगे?

डिक०। क्या॥

टामी। मोल * वहां बहुत घबराती होगी उसको जाकर सब हाल कह आते और यह भी कह देते कि मैं पंद्रह बीस रोज में उससे जरूर मिलूंगा॥

डिक०। अच्छा मैं जाकर उससे कह देता हूं॥

टामी०। वहां से लौट कर तुम मुझ से इसी जङ्गल में मि-लोगे?

डिक०। हां जरूर॥

इसके बाद डिक वहां से उठा और खेमे के बाहर आया।

* वह स्त्री जो टामी के घर पर रहती थी।

वहां उसे वह जिप्सी और उसकी स्त्री बैठे हुए दिखाई दिये। डिक ने सब हाल उससे कहा और यह भी कहा कि मैं लौटकर "एपिङ्ग" में तुम लोगों से मिलूंगा। उनसे बिदा होने बाद वह अपनी घोड़ी बेस के पास आया और उसपर जीन वगैरह कसा। वह बिल्कुल ताजी मालूम होती थी और कल की इतनी लंबी दौड़ का कोई चिन्ह उस पर न था। डिक ने बड़े प्यार से उसकी गरदन थपथपाई और इसके बाद सवार हो जंगल के बाहर की तरफ चला॥

डिक अभी थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसे एक औरत दिखाई दी जो उसी जगह जङ्गली फूल तोड़ रही थी। वह बहुत सुन्दर थी और उस सुन्दरता को उसने शहर की औरतों की तरह बढ़ाने का उद्योग नहीं किया हुआ था। डिक को वह स्वाभाविक सुन्दरता कुछ ऐसी भाई कि वह थोड़ी देर के लिये गर्टरूड को भी भूल गया। वह घोड़ी से उतर कर उस् के पास गया और उससे मीठी आवाज में पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है और तुम यहां क्या कर रही हो?"

उस लड़की ने कुछ लज्जित सी हो कर अपना सिर नीचे कर लिया इसके बाद सिर उठा कर डिक की तरफ देखा। कुछ देर तक वह योंही डिक को देखती रही मानो आंखों के रास्ते से डिक के मन का सब हाल जाना चाहती है। उसकी आंखों में इतना तेज था और उसके चेहरे पर ऐसी पवित्रता थी, कि डिक उसकी तरफ देर तक देख न सका और आंखें फेर कर पीछे की तरफ देखने लगा॥

वह लड़की डिक को इसी तरह थोड़ी देर तक देखती रही

इसके बाद गम्भीर स्वर से बोली, "डिक! तुम यह न समझो कि मुझे भी और औरतों की तरह धोखा दे सकोगे। जाओ और उस औरत की खुशामद करो जिसने अपने को तुम्हारे हाथ में दे दिया है, जाओ और उस औरत को धोखा दो जिस को तुम चार बरस पहिले से अपने जाल में फँसा चुके हो, जाओ और उस औरत की सुन्दरता को सराहो जिसके पिता को तुम लूटा चाहते थे परन्तु ईश्वर ने जिसका धन किसी दूसरे ही को दिला दिया॥"

डिक सोचने लगा, "क्या यह लड़की कोई अद्भुत शक्ति रखती है? इसे मेरा यह सब हाल क्योंकर मालूम हुआ? क्या टामी ने तो इससे नहीं कहा। मगर मैंने तो इसे जिप्सियों के खेमे में कहीं देखा न था और टामी ने भी इस का कोई जिक्र मुझसे नहीं किया जिससे मैं यह समझ सकूं कि वह इसे देख चुका है॥"

वह लड़की फिर कहने लगी, "यह मैं मानती हूं कि औरतों को वश में कर लेने की अद्भुत शक्ति तुम में है पर इससे यह न समझो कि मुझे भी अपने वश में कर लोगे। यह तुम को मुनासिब नहीं कि अपनी पहिली प्रेमिका को छोड़ कर मेरे प्रेमी बनो। देखो! देखो! मेरी बात काटने की इच्छा न करो। जो कुछ मैं कहती हूं खूब समझ बूझ कर और ठीक कहती हूं। डिक! एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। खैर अभी तो मैं तुम से कई बार मिलूंगी फिर बातें होती रहेंगी॥"

इतना कह वह लड़की चुप हो गई और डिक अचम्भे के साथ उसका मुंह देखने लगा। थोड़ी देर बाद वह लड़की बिना कुछ कहे एक ओर को चली गई और डिक ने भी उससे कुछ न

कहा, अब उसे तरह तरह के खयालों ने घेर लिया ॥

यह लड़की किस तरह जान गई कि मैं किसी और औरत से भी प्रेम करता हूं? वह यह बात भी जानती है कि मैं चार बरस पहिले भी एक बार गर्टरूड से मिल चुका हूं। लेकिन सब से ताज्जुब की बात तो यह मालूम होती है कि वह इस बात को भी जानती है कि मैंने जान रंटन को लूटने का इरादा किया था और मेरी सब मेहनत बरबाद जा कर यह दौलत किसी दूसरे ही को मिल गई। गलती हुई जो मैंने उससे कुछ पूछा नहीं, नहीं तो शायद मुझे यह मालूम हो जाता कि उस थैली के रुपये चुराने वाला कौन था ॥

इसी तरह की बातें डिक देर तक सोचता रहा। अन्त में वह अपनी जगह से यह कहता हुआ लौटा, "यह लड़की विचित्र मालूम होती है, मैं कोशिश करके अवश्य इससे मिलूंगा और पूछूंगा कि इसे यह सब हाल क्योंकर मालूम हुआ। अवश्य इसकी ये सब बातें भेद से खाली नहीं हैं ॥"

इतने ही में उसे फिर उसी लड़की की आवाज सुनाई दी। वह गौर से सुनने लगा पर कुछ समझ में न आया, सिर्फ यही सुनाई दिया, "किसी से बदला लेना बहुत कठिन है।" जिस के सुनने से उसे विश्वास हो गया कि वह लड़की उसके ही बारे में कुछ कह रही है ॥

डिक अपनी घोड़ी के पास आया और उस पर सवार हो वह फिर जङ्गल के बाहर की तरफ जाने लगा मगर उसके कानों में यह शब्द अभी गूंज रहे थे, "किसी से बदला लेना बहुत कठिन है ॥"

आठवां बयान।

पाठक कदाचित् भूले न होंगे कि हमने जान रंटन को टेबुल के ऊपर पैर फैलाये पीटर की सराय में सोये हुए छोड़ा है। अब हम उसी तरफ का कुछ हाल लिखा चाहते हैं॥

जानरंटन दूसरे दिन सवेरे बहुत देर करके उठे क्योंकि एक तो कल के सफर की हरारत थी दूसरे वे शराब भी बहुत पी गये थे। उठते ही उन्हों ने जरूरी कामों से छुट्टी पाकर चलने की तैयारी कर दी और फिर रास्ते में कहीं न रुककर सीधे लन्दन चले आये। रास्ते में उनको वह सन्दूक खोलने की कोई जरूरत न पड़ी थी जिसमें उन्होंने रुपया रक्खा था और इसलिये जबतक वे रास्ते में थे उन्हें इस डाकेजनी का हाल मालूम न हुआ मगर जब अपने ठिकाने पहुंच कर उन्होंने सन्दूक खोला और उसमें थैली न पाई तो गुस्से और अफसोस से उन का बुरा हाल होगया। वे कभी तो गर्टरूड को कहते कि "तुम्हारे ही साथ रहने से मुझे रास्ते में ठहरना पड़ा और नहीं तो बराबर चला आता और रूपया भी नहीं जाता।" तथा कभी कहते थे कि उन के नौकरों और साइसों ने ही मिल कर यह काम किया है॥

आखिर सोच बिचार कर उन्हों ने अपने साईसों और नौकरों ही को चोर ठहराया तथा अदालत में नालिश की। उन नौकरों में से एक के पास कुछ रुपया था अस्तु उसने भी एक वकील किया और मुकद्दमा चलाने को तैयार होगया। जान रंटन अपने नौकरों के चोरी करने का कुछ अच्छा सबूत नहीं

दे सके इसलिये उनके नौकरों पर मुकद्दमा साबित न हो सका और उनको मुकद्दमे का खर्च अपने नौकरों को देना पड़ा। इसका उन्हें और भी रंज हुआ। एक तो कई हजार रुपये पहिले ही चले गये थे ऊपर से यह झोंकी भी सहनी पड़ी। वे तो अपने को बिलकुल लुट गया हुआ समझने लगे॥

लेकिन उनका यह तरद्दुद गर्टरूड और उसकी मजदूरनी के लिये अच्छा ही हुआ क्योंकि उन को लंडन में बहुत दिन रहने का मौका मिल गया और अच्छे अच्छे गहने कपड़े भी पूरी तरह से मिल गये। इस के सिवाय जानरंटन को यहां शादी करने की धुन सवार हुई। गर्टरूड की मजदूरनी भी खूबसूरत थी इसलिये जानरंटन ने उसी के साथ शादी करने का विचार किया। उसने भी अच्छा मौका देख रंटन को अपने फंदे में फंसाना आरंभ किया और आखिर रंटन ने एक दिन उससे यह प्रतिज्ञा करली कि घर चलकर जितनी जल्दी हो सकेगा वे उससे शादी करलेंगे॥

चोरी के बारे में कुछ लोगों ने सोचा कि शायद डिक का इसमें कुछ हाथ हो क्योंकि यह सुना जा चुका था कि वह डाकू आज कल उसी तरफ कहीं है। इसके सिवाय राइट के घर पर डाका पड़ने और डाकुओं के पकड़े न जाने का हाल भी सभों को मालूम हो गया था तथा सभों का यह भी विश्वास था कि उन दोनों डाकुओं में से एक जरूर डिक था जिन्होंने राइट के मकान पर डाका डाला था। डिक का डर लोगों में बढ़ता जाता था और पुलिस की तरफ से कई इनामों की भी नोटिस दी गई थी जो डिक को पकड़ने या उसका पता देने

वालेको मिलते, इस कारण भी बहुत से आदमी डिक का पता लगाने की कोशिश कर रहे थे मगर उसका पता न मिलने तबतो ॥

लोगों का शक इतना बढ़ गया था कि एक दिन एक भला आदमी बन्दूक लेकर शिकार खेलने जाता था लोगों ने उसको भी डाकू समझा और जब उसने अपने को बचाने के लिये बन्दूक चलाने की धमकी दी तो उसे जमीन पर गिरा कर इतना मारा कि वह उठके चलने लायक न रह गया ॥

जब रंटन घर लौटने को तैयार हुए तो इन बातों को सुन सुन के उनका डर इतना बढ़ गया कि हिफाजत के लिये उन्हें कई सिपाहियों को साथ लेना पड़ा और खर्च में खर्च एक यह भी बढ़ गया अस्तु जब वह घर पहुंचे और उनकी बहिन को जब यह हाल मालूम हुआ कि उनका सब रुपया जो वे साथ लेगये थे रास्ते में लुट गया तो उसने सारा घर सिर पर उठा लिया और रंटन को बहुत कुछ बुरा भला कहा। ऊपर से जब उसे मालूम हुआ कि रंटन ने अपने नौकरों पर शक किया था और सबूत न दे सकने पर उनको बदले में नौकरों को बहुत कुछ देना पड़ा, तब तो उसकी अजीब ही हालत हो गई और वह घंटों तक जानरंटन का सिर खाती रही ॥

दूसरे दिन जब खाना खाकर जानरंटन बैठे तो वह फिर उनके पास पहुंची और उसी बात पर फिर से उन को लानत मलामत करने लगी। आखिर जानरंटन ने घबड़ा कर पूछा, "क्या तुम्हारा यह पंचड़ा कभी खतम न होगा, तुम कल से जितना चिल्ला रही हो उतना अगर कहीं मुझे बकना पड़ता तो मैं तीन दिन तक मुंह से बोल न सकता !!"

इसके जवाब में प्रिस्किला (रंटन की बहिन) ने कहा, "मैं देखती हूं कि अब तुम अकेले कहीं जाने लायक नहीं रहे। पहिली दफे जब तुम लंदन गये थे तो अपनी अंगूठी खो आये थे और अब की जाने पर.........

रंटन०। (बात काट कर) हां तुम्हारा यह कहना बहुत ठीक है अब मैं अकेला कहीं जाने या रहने लायक नहीं हूं। मुझे एक साथी की जरूरत है॥

प्रिस्किला०। इस का क्या मतलब॥

रंटन०। मतलब यह है कि अब मैं तुमपर अपने घर का भार नहीं रक्खा चाहता अब तुम बूढ़ी हो गई हो, खा लिया करो और आराम से पड़ी रहा करो॥

प्रिस्किला०। तब तुम किसे अपने घर का भार दोगे?

रंटन०। अपनी स्त्री को॥

प्रिस्किला०। (ताज्जुब से) हैं क्या शादी करोगे॥

रंटन०। हां॥

प्रिस्किला०। और मुझे घर से निकाल दोगे॥

रंटन०। मैं तो तुम्हें नहीं निकालूंगा हां अगर तुम्हें चले जाने का शौक हो तो कल के जाते तुम आजही चली जाओ मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा॥

प्रिस्किला०। मैं बेइज्जती के साथ तुम्हारे घर में रहना कभी नहीं पसन्द करूंगी। आखिर यह तो बताओ कि किससे शादी करोगे?

रंटन०। खैर यह भी तुम्हें समय आने पर मालूम ही हो जायगा अभी जल्दी क्या है॥

इसके बाद कुछ दिनों तक घर में शांति रही लेकिन जब जानरंटन को एक जरूरी काम से लन्दन जाना पड़ा तो उन्होंने प्रिस्किला से कह दिया कि "मैं गर्टरूड की मजदूरनी से शादी करूंगा और इस समय उसी का सब इन्तजाम करने लंदन जाता हूं।" प्रिस्किला यह सुनकर फिर और भी नाराज हुई और गर्टरूड ने भी उस का साथ दिया क्योंकि इधर उस की मजदूरनी कुछ सिर पर चढ़ गई थी और उस का कहा नहीं मानती थी। दोनों ने पहिले तो रंटन को बहुत कुछ समझाया मगर जब उन्होंने नहीं माना तो प्रिस्किला बोल उठी, "मैं तो कभी तुम को उससे शादी न करने दूंगी भला मजदूरनी से शादी करके तुम अपने नाम में बट्टा लगाओगे॥"

रंटन ने इसके जवाब में कुछ कहा तो नहीं मगर अपने मन में निश्चय कर लिया कि यदि ये दोनों जिद्द करेंगी तो इनको अपने घर से उसी दम निकाल दूँगा। इस के बाद वह लंदन पहुंचे और जब वहां से लौटने पर भी उन्होंने देखा कि प्रिस्किला उन का मजदूरनी से शादी करना नहीं पसन्द करती तो उन्होंने उसे घर से निकाल दिया। गर्टरूड ने भी उस का साथ दिया क्योंकि एक तो उसे यह मंजूर न था कि उसी की मजदूरनी उसके ऊपर मालिक बनकर हुकूमत करे और दूसरे लंदन में रहने से उसे अपने प्यारे को ढूंढने और उससे मुलाकात होने की भी उम्मीद थी। उसे इस बात का कोई डर न था कि उसके पिता के नाराज हो जाने से उसे कुछ खाने पीने की तकलीफ होगी क्योंकि थोड़े ही दिन हुए उस का नाना एक अच्छी जायदाद और लन्दन में एक खूबसूरत अच्छा सा मकान छोड़कर

मरा था और उसने गर्टरूड ही को अपना वारिस बनाया था। प्रिसिला ने गर्टरूड को उसी मकान में चल कर रहने को कहा। गर्टरूड अगर चाहती तो अकेली जाकर उस मकान में जो लंदन में था रह सकती थी मगर इसमें एक तो उसे अपनी बदनामी का डर था दूसरे यह भी ख़याल था कि प्रिसिला का कहीं और कोई ठिकाना नहीं है और ऐसे समय में उसे छोड़ देना ठीक नहीं है इसीलिये उसने उसे भी अपने साथ रख लिया। यद्यपि गर्टरूड और प्रिसिला की पूरी तरह नहीं पटती थी परन्तु इस समय दोनों ने आपस में मिलकर रहना ही ठीक समझा ॥

जब वे दोनों अपना असबाब एक गाड़ी पर लाद लन्दन को रवाना हुईं तो गर्टरूड को अपने पिता से बिछुड़ते समय कुछ दुःख हुआ, पर रंटन को इसका कुछ भी खयाल न हुआ जिससे गर्टरूड का रंज और भी बढ़ गया और फिर वह बिना किसी से कुछ कहे गाड़ी पर सवार हुई और लन्दन को चल पड़ी। रास्ते में कुछ सुस्ताने के लिये वह फिर पीटर की सराय में थोड़ी देर के लिये ठहरी और इस बीच में पीटर से और उस से बहुत सी बातें हुईं जो कि बहुत करके रिचार्ड (डिक) से सम्बन्ध रखती थीं। दूसरे दिन सवेरे गर्टरूड लन्दन को रवाना हुई और वहां पहुंच अपने मकान में रहने लगी ॥

नौवां बयान।

डिक अपने विचारों में ऐसा डूबा हुआ था कि उसको इस बात का कुछ भी खयाल न रहा कि वह किधर जा रहा है। उस लड़की के बारे में तरह तरह के विचार उसके मन में उठ रहे थे और वह चुपचाप सिर झुकाये बेस की पीठ पर बैठा हुआ जा रहा था॥

यकायक टापों की आवाज सुनकर वह चौंका और सामने की तरफ देखने लगा। दो सवार सामने से आ रहे थे जो बात की बात में इसके पास आ पहुंचे और उन में से एक ने घोड़ा रोक कर डिक से समय पूछा। अपनी स्वाभाविक सावधानता को भूल कर डिक ने जेब में से सोने की घड़ी निकाली जो कुछ दिन हुए उसने एक भले आदमी से छीनी थी और उस पर एक बेपरवाही की नजर डालकर कहा, "सात बजेगा॥"

ये शब्द अभी डिक के मुंह से निकलने भी न पाये होंगे कि बड़ी फुर्ती से उन दोनों सवारों ने अपना अपना घोड़ा डिक की घोड़ी की बगल में कर लिया और एक ने बायें हाथ से बेस की लगाम पकड़ी और दाहिने हाथ से भरी हुई पिस्तौल डिक के माथे से लगा कर कहा, "बस खबरदार जो जरा भी अपनी जगह से हिले हो॥"

पलक झपकते में यह सब काम हो गया और डिक अपने बचाव का कोई भी ढंग न कर सका। आखिर अपने को सम्हाल उसने हंस कर दोनों सवारों से कहा, "क्या आप लोगों को मुझपर कोई शक है?"

एक सवार०। हां, हम लोग पुलिस के आदमी हैं, तुम्हारी शक्ल डिक टर्पिन नामक मशहूर डाकू से मिलती है और तुम्हारी घोड़ी भी उसकी घोड़ी बेस की तरह है। इसलिये हमलोग तुम्हें गिरफ़ार करते हैं॥

डिक०। (कुछ गुस्से के ढंग से) क्या तुम हमारे ऐसे भले आदमी की बेइज्जती किया चाहते हो। समझ रक्खो कि इस बेइज्जती का मैं पूरा पूरा बदला लूंगा॥

सवार०। अच्छा इन सब बातों को इस वक्त आप रहने दें अगर आप डिक टर्पिन नहीं हैं तो बतलाइये कौन हैं॥

डिक०। मैं विरहसर किले की फौज का अफ़सर हूं॥

सवार०। आप के इस जुबानी जमा खर्च को मैं नहीं मान सकता यदि आप डिक टर्पिन नहीं हैं तो साबित करिये कि विरहसर किले की फौज के अफसर हैं॥

डिक०। बड़ी खुशी से, मगर इस जगह मैं क्या सबूत दे सकता हूं। कार्य्यवश मैं इस समय हंसली की तरफ जा रहा हूं। वहां मेरे जान पहिचान के बहुत आदमी हैं आप मेरे साथ चलिये मैं साबित कर दूंगा और वहीं अपनी इस बेइज्जती का आप से बदला भी लूंगा॥

सवार०। अच्छी बात है, मगर पहिले मैं आप की तलाशी लूंगा कि आप के पास कोई हथियार तो नहीं है। अपने दोनों हाथ ऊपर करिये॥

अब डिक कुछ निराश सा हो गया पर अपने चेहरे से उस ने यह बात जाहिर होने न दी। अपने दोनों हाथ सिर के ऊपर कर उसने कहा, "आप अपना मन भर लीजिये।" उन दोनों

सवारों में से एकने अपने हाथ की पिस्तौल जेब में रखली और बेस की लगाम छोड़ दोनों हाथों से झुक कर डिक की कोट के बटन खोलने लगा। डिक ने यह मौका अच्छा समझा। वह इस तरह से कांपा और एक ओर को झुका जैसे घोड़े से गिरा चाहता है। इस के बाद मानो अपने को सम्हालने के लिये यकायक उसने अपने दोनों हाथ बेस की गरदन में डाल दिये। बेस उस से भड़क उठी और दोनों सवारों के भी घोड़े भड़क गये। दोनों सवारों ने अपने घोड़े सम्हालने के लिये डिक के घोड़ी की लगाम छोड़ दी। इस के साथ ही डिक ने बेस की लगाम ढीली करदी और कुछ बढ़ावे की आवाज ऐसी कही जिससे वह एक दम हवा से बातें करने लगी। ये बातें इतनी फुर्ती के साथ हुईं कि वे दोनों सवार डिक को रोक न सके और वह बात की बात में उनसे आगे निकल गया॥

अब दोनों सवारों ने भी पीछा किया। उनके घोड़े भी बहुत ताकतवर और तेज जाने वाले थे मगर बेस फिर भी चाल में उन से तेज थी। जिस सड़क पर ये तीनों जा रहे थे उसके दोनों तरफ़ बड़े बड़े गड्हे थे इसलिये डिक सड़क छोड़कर मैदान में न जा सकता था लाचार वह बराबर सड़क परही लगा रहा॥

कुछ आगे जाकर सड़क बहुत तंग होगई थी और दोनों तरफ़ के गड्हे आपस में मिल जुल कर एक खाई की तरह से दोनों ओर से सड़क को रोके हुए थे तथा उनकी चौड़ाई भी ऐसी कम न थी कि कोई घोड़ा उसे फाँद सके। जब वे तीनों इस जगह आकर पहुंचे तो सामने एक बैल गाड़ी दिखाई पड़ी जो बिलकुल सड़क को रोक कर आ रही थी। अब इस जगह या तो दोनों सवारों

तक चल फिर नहीं सकता। मौल टामी का हाल सुन बड़ी दुःखी हुई और उसी समय उसे देखने को जाने के लिये तैयार होगई मगर डिक ने समझा बुझा कर उसे शांत किया॥

डिक ने भोजन किया और वह रात वहीं बिताई। दूसरे दिन वह घूमने के लिये बाहर निकला तो उसने कई जगह बड़े बड़े नोटिस छिपके हुए देखे। उसने एक नोटिस पढ़ी जिसे पढ़ कर उसे कुछ डर मालूम हुआ क्योंकि उसमें डिक को पकड़ा देने या उसका पता देने वाले को चार हजार रुपये इनाम में मिलने का हाल लिखा हुआ था। चार हजार रुपै एक अच्छी रकम समझी जाती है। डिक को और भी कई नोटिसें दिखाई पड़ीं जोकि उन अमीर आदमियों की ओर से थीं जिन्हें उसने लूटा था॥

डिक मौल पर पूरी तरह से कभी भरोसा न करता था पर न जाने क्यों टामी उसको कभी अविश्वास की दृष्टि से नहीं देखता था। यद्यपि इन दोनों में किस तरह का संबंध न था फिर भी टामी मौल को ज्यादा दिनों के लिये अकेला छोड़ कर कहीं जाना पसन्द नहीं करता था और यदि किसी कारण से उसे ऐसा काम आ भी पड़ता तो वह किसी न किसी तरह अपने हाल चाल की खबर मौल को देता और उस की आप मालूम कर लेता था। दो एक बार जब डिक ने टामी से इस संबंध में कुछ कहा भी तो उसने कुछ ऐसे ढङ्ग से डिक को जवाब दिया जिससे मालूम होता था कि वह मौल के बारे में कोई बुरी बात नहीं सुना चाहता॥

डिक जानता था कि मौल लालची है। उसको बराबर इस

बात का डर लगा रहता था कि कहीं कोई उसे कुछ रुपये की लालच दिला कर उसका और टामी का भेद न जान ले। इस समय जो उसने चार हजार रुपये इनाम मिलने की नोटिस देखी तो खयाल हो गया कि यदि मौल यह बात जान लेगी तो आश्चर्य नहीं कि सब भगड़ा फोड़ दे॥

इन्हीं सब खयालों में गोते लगाता हुआ वह टामी के घर की ओर लौटा। मौल ने दर्वाजा खोला पर इस समय बहुत ही घबराई हुई मालूम होती थी। डिक को देखतेही वह एक बार कांप उठी पर तुरत ही उसने अपने को सम्हाला और हंस कर बातें करने लगी, डिक इस बात को ताड़ गया और इस फिक्र में पड़ गया कि मुझे देख यह इतना घबराई क्यों मगर उसे इस बात का कोई पता न लगा॥

जो हो मगर इस बात से इतना हो गया कि डिक मौल से खटक गया और उसने अपने दिल में निश्चय कर लिया कि अपनी कोई भेद की बात इससे कभी न कहनी चाहिये इसके साथ ही साथ उसने यह भी विचार कर लिया कि अगर हो सके तो टामी को भी इसकी तरफ से होशियार करदें मगर यह जरा कठिन था॥

ऊपर से डिक अपने को ऐसा बनाये रहा कि मौल को यह बिल्कुल नहीं मालूम हुआ कि उसके ऊपर डिक को कुछ शक है डिक भी फिर ज्यादे न ठहरा और अँधेरा होने पर मौल से बिदा हो "एपिङ्ग" की तरफ चला॥

एपिङ्ग का जङ्गल उन दिनों बदमाशों और लुटेरों का घर हो रहा था। पुलिस के दिलेर और बहादुर अफसर भी वहां

जाने से डरा करते थे। बहुत लोगों का विश्वास था कि इस जङ्गल में भूत प्रेत रहते हैं इसको में होकर बिना कोई डरावनी चीज देखे बाहर आना असम्भव है पर पढ़े लिखे लोग इन बातों को नहीं मानते थे, उन का सिर्फ यही कहना था कि "यह लुटेरों और कानून को न मानने वालों का ठिकाना है॥"

हर साल वहां जिप्सियों की एक सभा हुआ करती थी जिस में हजारों जिप्सी इकट्ठे हुआ करते थे। दस पन्द्रह दिनों तक खूब चहल पहल रहा करती थी और उसके बाद फिर वही सन्नाटा हो जाता था। जिप्सी की एक विचित्र ही जात थी वे लोग हम लोगों के कानून कायदों को नहीं मानते पर उसके खिलाफ भी नहीं करते थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि ऐसा करने से जेल जाना होता है, तथापि जब कभी वे कोई ऐसा काम कर बैठते थे तो अक्सर लोगों को तरह दे जाना पड़ता था क्योंकि इनमें एकता बहुत थी और मार काट से भी नहीं डरते थे॥

डिक को एपिङ्ग की ओर जाते जाते रास्ते में एक सराय में कुछ देर के लिये ठहरना पड़ा क्योंकि उसे बहुत प्यास मालूम होती थी। उसने बेस को सराय के बाहर एक कुन्डे के साथ लगाम अटका कर छोड़ दिया जो इसी काम के लिये बना हुआ था। इसके बाद सराय के मालिक से पानी और थोड़ी शराब ले उसने बेस को पिलाया और तब अन्दर जाकर उस कमरे में गया जहां लोग बैठ कर खाना खाया करते थे॥

इस समय उस कमरे में बड़ा शोर गुल हो रहा था। डिक को उस का सबब थोड़ी ही देर में मालूम हो गया। कमरे के बीचो बीच में एक टेबुल रक्खा हुआ था और चारों ओर बहुत

से आदमी बैठे शराब पी रहे थे, जिसका दाम एक मोटा किसान अपने पास से दे रहा था। वह बार बार दाम चुकाने के लिये अपनी जेब से एक थैली निकालता और इस बेपरवाही से रुपये दे रहा था कि जिससे मालूम होता कि अभी थैली भरी हुई है॥

डिक की निगाह उस थैली और उसमें के रुपयों पर बार बार पड़ने लगी। अन्त में उसने उस थैली को अपने जेब के हवाले करना ही निश्चय किया। यद्यपि इस समय इस कमरे में करीब चालीस आदमियों के बैठे हुए थे मगर डिक ने इस बात की कोई परवाह न की। उसने अपनी पिस्तौल आड़ में आकर देखी और जब उसे ठीक और भरी हुई पाया तो वह उस मोटे किसान के पास गया और उसके हाथ से थैली छीन कर बोला, "महाशय! मैं देख रहा हूं कि आप को बार २ थैली खोलने में बड़ी तकलीफ हो रही है और इसके सिवाय इतनी फजूल खर्ची भी किसी काम की नहीं इसलिये मैं यह थैली ले लेता हूं अपने पास रक्खूंगा जब आपको इस की जरूरत पड़ेगी तो मुझसे मंगवा लीजियेगा। मेरा नाम डिक टर्पिन है॥"

उसके अपना नाम कहने का लोगों पर बड़ा असर पड़ा। कुछ लोग तो डिक का नाम सुनते ही डर के मारे इधर उधर घसक गये कुछ मन ही मन उसके इस साहस की प्रशंसा करने लगे, इसके सिवाय बचे हुए लोग उसको पकड़ने की फिक्र में पड़े क्योंकि उनकी आंखों के सामने वह चार हजार का इनाम घूम गया आखिर उनमें से एक मजबूत आदमी उठा और डिक से लिपट गया जिसके साथ ही और भी कई आदमी उस पर टूट

पड़े और उसे जमीन पर गिरा दिया। वह मोटा किसान भी अपनी जगह से उठा मगर शराब बहुत पी जाने के कारण उसका पैर लड़खड़ाया और वह जमीन पर गिर पड़ा। अपने को सम्हालने की नीयत से उसने टेबुल को पकड़ लिया मगर उसकी बदकिस्मती थी कि टेबुल भी उसी के ऊपर लुढ़क गया और बेचारा उसके नीचे से पड़ा पड़ा मदद के लिये चिल्लाने लगा। टेबुल गिर जाने के कारण वह लंप भी जो उसके ऊपर जल रहा था गिर कर बुझ गया और अब उस कमरे में पूरा अंधकार छा गया॥

अंधेरा हो जाने के कारण अब और भी गड़बड़ मच गई। लोग शराब के नशे में चूर होही रहे थे इस लिये जो जिसे सामने पाता उसे ही डिक समझ कर चपत लगाने लगता तथा उसे जमीन पर गिराने की कोशिश करता था। एक आदमी ने यह सोच कर कि कहीं डिक कमरे के बाहर न निकल जाय, दर्वाजा बन्द करके उसमें ताला लगा दिया। अगल बगल वाले कमरों के आदमी जो यह शोर गुल और गाली गलौज सुन कर हाल देखने के लिये आये वे दर्वाजा बन्द पाकर खुलवाने के लिये उसपर ठोकर मारने लग गये जिससे कमरे के अन्दर वालों ने समझा कि डिक के और साथी बाहर आगये हैं और दर्वाजा तोड़कर अन्दर घुसा चाहते हैं जिसका फल यह हुआ कि उन्होंने दरवाजा और भी मजबूती के साथ अन्दर से बन्द कर लिया॥

आखिर कुछ देर के बाद कुछ शांति हुई और लोगों ने खोज ढूँढ कर मोमबत्ती बाली क्योंकि लंप टूट गया था। उस किसान के ऊपर से टेबुल हटाया गया और लोगों ने उन्हें पकड़ थाम कर

किसी तरह एक कुर्सी पर बैठाया। दर्वाजा खोल दिया गया और बाहर के सब आदमी भी अन्दर चले आये॥

अब डिक की खोजाई शुरू हुई मगर कमरे भर में वह कहीं न दिखा। जिस आदमी ने उसे जमीन पर गिरा दिया था वह स्वयं इतना घबड़ा गया था कि कुछ ठीक न कह सका कि डिक उसके नीचे से कहां निकल गया क्योंकि डिक को पकड़ने की नीयत से उस बेचारे के ऊपर कई आदमी गिर पड़े थे और उसे अपनी जान बचाने की फिक्र पड़ गई थी॥

अब डिक के बारे में लोगों को तरह तरह के खयाल होने लगे। कुछ लोग कहने लगे कि उसने पिशाच को बस में कर लिया है और कुछ कहने लगे कि उसमें हवा में मिल जाने की शक्ति है, एक हजरत कसम खाकर कहने लगे कि वह आग की तरह चमक कर एक मक्खी बन गया था इत्यादि तरह तरह की बातें लोग कहने लगे मगर कुछ लोगों को इन अक्लमंदों की बातों पर विश्वास न हुआ और वे डिक को खोजने के लिये सराय के बाहर निकले। शायद उनको यह खयाल था कि जिस आदमी को वे चारो तरफ से बन्द कमरे में न पकड़ सके थे उसे खुले मैदान में अच्छी तरह पकड़ सकेंगे॥

अब डिक का हाल सुनिये। जिस समय वह जमीन पर गिरा दियागया और चारो तरफ से आदमी उसके ऊपर टूट पड़े तो पहिले तो वह कुछ घबराया पर इसके बादही सम्हला और अपने बचाव की तर्कीब करने लगा। भाग्यवश उसी समय कमरे में अंधेरा हो गया और उसके ऊपर चढ़ा हुआ आदमी इतना घबड़ा गया कि डिक को छोड़ कर जमीन से उठने की

दर्वाजे पर पहुंचा और कुण्डा खटखटाने लगा। थोड़ी ही देर में मौल ने आकर दर्वाजा खोला और डिक को देख कर आ-श्चर्य्य से बोली, "हैं! तुम तो टामी से मिलने न गए थे फिर लौट क्यों आये?" डिक ने जवाब में कहा, "एक जरूरी काम आ पड़ने के कारण मैं वहां न जा सका॥"

इसके बाद डिक मौल से तरह तरह की बातें करने लगा जिसमें उसको यह न मालूम होने पावे कि उसे उसके ऊपर कुछ शक हो गया है। थोड़ी देर बाद मौल ने खाना बनाया और डिक खाने बाद कुछ देर आराम करने की नीयत से लेट रहा। जब शाम हुई तो डिक बिदा हुआ क्योंकि मौल के बहुत जोर देने पर भी उसने रात को वहां रहना पसन्द न किया। मौल के यह पूछने पर कि "अब किधर जाओगे?" उसने यह जवाब दिया, "इस वक्त मैं हंसली को जाता हूं क्योंकि सुना है कि एपिङ्ग के रास्ते में कई पुलिस वाले मेरी ताक में लगे हुए हैं और मैं जान बूझ कर अपने को फँसाना नहीं चाहता॥"

डिक ने मौल से यह सिर्फ धोखा देने के लिये ही कहा था कि वह एपिङ्ग की तरफ नहीं जायगा। वास्तव में उसका इरा-दा एपिङ्ग जाने का ही था मगर इसलिये कि मौल इस बात को न जान सके उसने उससे ऐसी बात कही और कुछ दूर तक हंसली की तरफ गया भी मगर इसके बाद घूम कर दुश्मनों से बचता हुआ वह फिर एपिङ्ग की तरफ रवाना हुआ॥

जब डिक एपिङ्ग के जङ्गल में पहुंचा तो उसे बहुत से जिप्सी दिखाई दिये जो कि उसी जङ्गल में टिके हुए थे। इसका कारण यह था कि उनका सालाना जलसा शुरू हो गया था।

डिक को अपने दोस्त जिप्सी का खेमा ढूंढने में ज्यादा तरद्दुद न उठाना पड़ा क्योंकि वह जिप्सियों का सरदार था और वे लोग उसे सरदार कहकर पुकारते भी थे। हम भी उसे सरदार ही कह कर पुकारेंगे ॥

जब डिक सरदार के पास पहुंचा तो उसे उसका पुराना साथी पीटर भी वहीं दिखाई दिया जिसे देख उसको बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि अभी तक उसे यह नहीं मालूम था कि वह जिप्सी है या जिप्सियों से सम्बन्ध रखता है। दोनों उसी जगह पास ही पास बैठकर बातें करने लगे। पीटर ने डिक को जानरंटन और गर्टरूड का पूरा पूरा हाल कह सुनाया जिसे डिक कुछ भी नहीं जानता था। डिक इन बातों को बड़े गौर से सुनता रहा क्योंकि ये उसके मतलब की बातें थीं। सब से ज्यादे खुशी तो उसे इस बात की थी कि गर्टरूड अभी तक उसे भूली नहीं है ॥

पीटर से बातचीत कर लेने के बाद डिक सरदार और उसकी स्त्री जीला से मिला जिन्होंने इसे बड़ी आवभगत के साथ लिया। उनसे कुछ देर तक बातचीत करने बाद डिक टामी से मिला जो अब अच्छा हो चला था। कुछ देर मामूली बातचीत के बाद टामी ने डिक से मौल का हाल पूछा, डिक ने जवाब दिया, "वह बहुत अच्छी तरह है, यहां आने के लिये बहुत जिद्द करती थी मगर मैंने लाना मुनासिब न समझा।" इसके बाद मौका पाकर डिक ने पूछा, "क्या तुमको पूरी तरह से भरोसा है कि मौल हमलोगों को धोखा देकर हमारा भेद न खोलेगी?"

टामी०। मुझे पूरी तरह से विश्वास है कि जान चली जाने पर भी मौल हमलोगों का भेद न खोलेगी॥

डिक०। मगर मुझे तो इसमें कुछ शक मालूम होता है॥

टामी०। (हँस कर) अगर तुम्हें मौल के ऊपर किसी तरह का शक है तो वह शक बिलकुल बेजड़ है। मौल के ऊपर शक करना मानो अपने ही ऊपर शक करना है॥

डिक०। तो भी यह कैसे कहा जा सकता है कि मौल सदा ऐसी ही रहेगी॥

टामी०। भाई तुम चाहे जो कहो मगर मुझे तो कभी उसके ऊपर शक न होगा अभी तक न मैंने कभी उसके ऊपर शक किया है और न कभी करूंगा। खैर तुम यह तो बताओ कि यह शक तुम्हें हुआ क्योंकर॥

डिक०। नहीं कुछ नहीं मैंने योंही पूछा था॥

इसके बाद फिर इधर उधर की बातें होने लगीं। डिक ने मौल के ऊपर सन्देह करने का कारण टामी से कहना इसलिये ठीक न समझा कि एक तो टामी इस समय कमजोर है ऐसी हालत में उसे किसी तरह की गुस्सा दिलाने वाली बात कहना ठीक नहीं है दूसरे इस बात का कोई सबूत भी डिक के पास नहीं था। सिर्फ मौल का जेरी के साथ बातें करना इस बात को साबित नहीं कर सकता था कि वह विश्वास घातिनी है॥

उस रात को डिक को अच्छी तरह नींद नहीं आई। इसका सबब यह न था कि पत्तियों का बिछौना जिस पर वह सोया हुआ था उसे आराम से सोने नहीं देता था। नहीं डिक को इस बात की कोई तकलीफ नहीं थी। वह पत्थर की चट्टान पर,

कंकड़ीली जमीन पर, यहां तक कि अपनी घोड़ी की पीठ पर भी उसी आराम से नींद ले सकता था जिस तरह कि अच्छे मुलायम बिछौने पर। इस समय उसे कई तरह के तरद्दुद आराम से सोने नहीं देते थे।

सब से बड़ा तरद्दुद उसे मैाल के बारे में था। वह खूब समझता था कि टामी मैाल को कभी शक की निगाह से नहीं देखेगा और इस बात में भी डिक को कोई शक नहीं मालूम होता था कि वह सब भण्डाफोड़ किया चाहती है क्योंकि यदि ऐसा न होता तो वह उससे (डिक से) यह जरूर कहती कि "जेरी आजकल इसी तरफ टोह लगाता फिर रहा है और मुझ से मिल भी चुका है।" और उसका ऐसा न करना ही डिक का शक बढ़ाता था। कभी कभी डिक यह सोचता कि शायद वह जेरी को पुलिस का अफसर न समझती हो और कोई मामूली आदमी ही जानती हो और इसीसे उसका जिक्र न किया हो मगर यह खयाल उसके दिल में जमता न था॥

गर्टरूड के बारे में भी उसे बहुत तरद्दुद हो गया था। यह तो साफ ही जाहिर था कि वह इसे प्यार करती थी और वह (डिक) भी उसे चाहता था। लेकिन डिक में और उस में जमीन आसमान का फर्क था। डिक जगह जगह मारा फिरने और लोगों का रुपया लूटने वाला मामूली डाकू था और वह एक जमींदार तथा अमीर की लड़की थी, इसलिये यह तो सम्भव ही न था कि डिक अपना असल असल हाल उसे बता कर तब उससे शादी करे क्योंकि चाहे गर्टरूड प्रेम के सबब से उसकी हालत लोगों से न कहे मगर एक तो औरत के पेट में बात पचनी

ही मुश्किल दूसरे यह भी खयाल था कि कहीं सच्चा सच्चा हाल जान कर वह नाराज न हो जाय और सब चौपट करदे॥

डिक खूब समझता था कि यदि एक दफे भी पुलिस के हाथ में पड़ा तो फिर फांसी या जन्म कैद उसके लिये रक्खी हुई है और इसी लिये वह बहुत फूंक फूंक कर पैर रखता था और अपना भेद किसी को कहते डरता था। यद्यपि उसने अभी तक किसी की जान नहीं ली थी और न वह ऐसा करना पसन्द ही करता था तथापि जिन अमीरों और जमीदारों को वह लूटा और दिक किया करता था वे उसके बहुत बड़े विपक्षी हो रहे थे और यही चाहते थे कि किसी तरह उसे कैदखाने की अंधेरी कोठरी नसीब हो। यदि कोई ऐसा आदमी डिक का साथी हो जाता जिसका खूब प्रभाव होता तो शायद डिक बच जाता मगर ऐसा होना असम्भव था और इन्हीं सब बातों को सोच कर डिक गर्टरूड से भी अपना हाल कहते हिचकता था॥

इन्ही सब खयालों में गोते लगाते हुए डिक को नाम मात्र की ही नींद आई और वह सुबह बहुत सवेरेही अपने खीमे से जहां वह सोया था बाहर निकला। वह अपनी घोड़ी को देखने के लिये उसी तरफ चला मगर रास्ते ही में उसकी निगाह उस लड़की पर पड़ी जिसे वह पहिली दफे एपिङ्ग के बाहर जाते समय जंगल में देख चुका था और जिसकी बातों ने उस समय उसे ताज्जुब में डाल दिया था। उसका नाम लीना था और वह सरदार की लड़की थी तथा सरदार के सबब से उसमें और डिक में जान पहिचान भी हो गई थी॥

डिक को देख लीना ने पूछा, "इतना सबेरे किधर?"

डिक०। अपनी घोड़ी को देखने जा रहा हूं॥

लीना०। यह बहुत अच्छी बात है। आदमी को अपने घोड़े की उतनीही खबरदारी रखनी चाहिये जितनी अपनी॥

डिक०। (हंस कर) और खास कर मेरे ऐसों को जिनका काम बिना अच्छे घोड़े के चलही नहीं सकता और अच्छे घोड़े को अच्छी ही हिफाजत और खबरदारी भी चाहिये॥

इसके बाद दोनो कुछ देर तक चुप रहे जिसके बाद फिर डिक ने पूछा, "अच्छा यह तो कहो कि उस दिन जो तुमने मुझसे विचित्र ढंग की बातें की थीं उनका क्या मतलब था और वे बातें तुम्हें क्योंकर मालूम हुईं ?"

लीना०। तुम यह पूछ कर क्या करोगे ?

डिक०। नहीं करना तो कुछ नहीं है सिर्फ.......(रुक कर) अच्छा तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि मैं किसी को प्यार करता हूं और चार बरस पहिले ही से उसे जानता हूं ?

लीना०। इस बात का मैं पीछे जवाब दूंगी तुम को और कुछ पूछना हो तो पूछ लो॥

डिक०। और तुम्हारे इस कहने का क्या मतलब था "कि यह तुमको मुनासिब नहीं कि अपनी पहिली प्रेमिका को छोड़ कर मेरे प्रेमी बनो॥"

लीना०। इसका सिर्फ यही मतलब था कि जब तुम एक औरत को चाहते हो तो दूसरी को चाहने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है॥

डिक०। मगर यह तुम कैसे जान सकती हो कि मैं तुम्हें चाहने या प्यार करने लगा था। मुझसे उस समय तुम्हारी

पहिले पहिल मुलाकात हुई थी इसके पहिले मैंने तुम्हें देखा भी नहीं था॥

लीना०। अब इस बात का मैं क्या जवाब दूं तुम अपने दिल से पूछ देखो कि जो मैंने कहा था वह ठीक था या नहीं॥

डिक०। (कुछ देर तक कुछ सोचने के बाद) अच्छा अब मुझे और कुछ इस वक्त नहीं पूछना है, तुम मेरी पहिली बात का जवाब दो॥

लीना०। उसका ठीक ठीक जवाब तो मैं नहीं दे सकती हां इतना कह सकती हूं कि मनुष्य का अंग प्रत्यंग तथा हाव भाव देख कर यह कहा जा सकता है कि वह कैसे स्वभाव का है, अमीर है या गरीब या सदा अमीर या गरीब ही बना रहेगा और जो लोग इस विषय में कुछ ज्यादे जानते हैं वे भूत भविष्य वर्तमान का हाल भी कह सकते हैं॥

डिक०। तो क्या तुम भी भविष्य का हाल कह सकती हो?

लीना०। हां कुछ कुछ॥

डिक०। अच्छा तो मेरे बारे में कुछ कहो॥

लीना०। तुम्हारे बारे में क्या कहूं?

डिक०। (कुछ सोच कर) अच्छा यह बताओ कि कोई हमारे साथ विश्वासघात कर रहा है या करेगा?

लीना०। हां तुम्हारे साथ कई आदमी विश्वासघात कर रहे हैं और करेंगे तथा तुम भी किसी के साथ करोगे॥

डिक०। (आश्चर्य्य से) मैं! किसके साथ?

लीना०। टामी के साथ॥

डिक०। तुम्हारी बातें तो मेरा ताज्जुब बढ़ा रही हैं अच्छा

यह बताओ मैं कैसा विश्वासघात करूंगा ?

लीना० । (धीरे से) तुम्हारे ही हाथ से टामी की जान जायगी ॥

बारहवां बयान ।

लीना की बात सुन डिक चैांक उठा। उसके बदन से पसीना छूटने लगा और वह एकटक खड़ा जमीन की तरफ देखने लगा। कुछ देर बाद जब उसने लीना से कुछ और पूछने के लिये सिर उठाया तो उसे न पाया। वह उसे उसी तरह सोच विचार में गोते लगाता छोड़ कहीं चली गई थी। कुछ देर तक इधर उधर देखने बाद डिक वहां से हटा और अपनी घोड़ी बेस के पास आ तथा उसे मल दल और जीन कसकर बाहर निकला। उस की तबीयत घबड़ा रही थी और बिना कुछ देर घूमे उसको चैन नहीं मिल सकता था ॥

डिक थोड़ीही दूर गया होगा कि उसे अपनी तरफ आते हुए कई घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई दी। वह ताज्जुब के साथ कुछ देर तक सुनता रहा और इसके बाद सड़क से नीचे उतर उसने बेस को तो एक आड़ की जगह खड़ा कर दिया और आप फिर वहीं आ और आड़ की एक जगह से छिप कर उसी तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आ रही थी। डिक को ज्यादे देर तक राह न देखना पड़ा। थोड़ी देर के बाद उसने जेरी को एक घोड़े पर सवार उस तरफ आते देखा जिसके पीछे पीछे उसके पांच या छः साथी भी थे ॥

यकायक जेरी को वहां देख डिक को बड़ाही ताज्जुब मालूम हुआ और उसे निश्चय हो गया कि यह उसे ही गिरफ़ार करने की नीयत से यहां आया है। वह जल्दी उस जगह पहुंचा जहां बेस को खड़ी कर गया था और उस पर सवार हो तेजी के साथ चक्कर खाता हुआ जिप्सियों के खेमों की तरफ चला। वहां पहुंचते ही उसने सरदार से सब हाल कहा और बात की बात में यह बात सब जगह फैल गई। सरदार ने डिक से कहा, "अच्छा हो अगर तुम अपनी सूरत भी कुछ बदल लो जिसमें पहिचाने जाने का कोई डर न रहे।" और इसके बाद जवाब की कोई राह न देख उसने लीना को बुलाया और उससे अपनी भाषा में कुछ कहा जिसे सुन वह एक बगल वाले खेमे में चली गई और कई तरह के रङ्ग वगैरह ले कर थोड़ी ही देर में लौट आई। पहिले तो उसने एक मसाला डिक के चेहरे पर लगाया और इसके बाद कुछ रंग रोगन भी लगाया। जब इस काम से उसे फुरसत मिल गई तो उसने डिक के बाल जिप्सियों की तरह बांध दिये और उन्हीं की एक पोशाक भी उसे पहिना दी। यह सब करने बाद उसने एक शीशा डिक के हाथ में दिया जिसमें अपनी सूरत देखते ही डिक हँस पड़ा क्योंकि अब वह खासा जिप्सी मालूम होता था और शक्ल सूरत में इतना फर्क पड़ गया था कि अगर उसकी मां भी वहां मौजूद होती तो उसे पहिचान न सकती॥

उधर जेरी जब जिप्सियों के डेरों के पास पहुंचा तो कई जिप्सी उसके सामने जा खड़े हुए और उनमें से एक ने उससे पूछा, "तुम कौन हो?"

जेरी ने कुछ घमण्ड के साथ जवाब दिया, "मैं पुलिस का अफसर हूं और यहां दो डाकुओं का पता लगाने के लिये आया हूं क्योंकि सुना गया है कि वे दोनों यहीं हैं॥"

जिप्सी०। उनका नाम?

जेरी०। एक का नाम डिक टर्पिन और दूसरे का टामी है?

जिप्सी०। तो तुम उन्हें खोजने के लिये यहां क्यों आये? क्या हमलोग चोर और डाकू हैं जो ऐसों को अपने पास टिकाया करेंगे? जाओ वे दोनों यहां नहीं हैं, तुम को गलत खबर मिली है॥

जेरी०। (गुस्से के साथ) तुम झूठे हो वे दोनों जरूर यहां हैं?

इतना कहकर जेरी अपने साथियों को आगे बढ़ने का इशारा करके आगे की तरफ बढ़ा मगर वह आगे जा न सका क्योंकि उसी समय इधर उधर के पेड़ों और चट्टानों की आड़ में छिपे हुए पचासों जिप्सी बाहर निकल आये और उसको घेरकर खड़े हो गये। हर एक के हाथ में एक एक लाठी थी और कइयों के पास पिस्तौलें भी दिखाई देती थीं। लाचार जेरी को रुकना पड़ा और वह कुछ कहा ही चाहता था कि इतने में सरदार भी डिक और लीना के साथ वहीं आ पहुंचा। डिक की सूरत अब ऐसी बदल गई थी कि उसे किसी से पहिचाने जाने का डर न था। सरदार के आते ही जिप्सी सब कुछ दूर हटकर खड़े हो गये और वहां सन्नाटा छा गया॥

सरदार ने जेरी से पूछा, "तुम कौन हो और यहां क्यों आये हो?

जेरी०। मैं अपने बादशाह की ओर से दो डाकुओं को

पकड़ने के लिये आया हूं॥

सरदार०। तो तुम यहां उनको ढूंढने क्यों आये?

जेरी०। मुझको पता लगा है कि वे दोनों यहीं हैं॥

डिक०। (सरदार को और पूछने से रोक कर) तुम को जिसने यह खबर दी है उसका नाम क्या है?

जेरी०। यह मैं तुमको नहीं बता सकता॥

डिक०। अच्छा यह बता सकते हो कि वह मर्द है या औरत?

जेरी०। (कुछ सोचकर) नहीं यह भी नहीं॥

डिक०। अच्छा मान लिया कि वे दोनों यहां मौजूद हैं मगर तुम उनको पहिचानोगे क्योंकर?

जेरी०। मेरे पास उनका हुलिया मौजूद है॥

इतना कहकर जेरी ने अपनी जेब से एक कागज निकाला और उसमें से पढ़ कर डिक और टामी का हुलिया सभों को सुनाया। डिक अपना हुलिया इस तरह बयान किये जाने के कारण मुस्कुरा उठा मगर अपने को रोक कर बोला:—

डिक०। अच्छा जो इन दोनों को पकड़वा देगा उसे कुछ इनाम भी मिलेगा?

जेरी०। हां, हां, चार हजार रुपये॥

डिक०। (कुछ सोचता हुआ) अच्छा जो हुलिया आपने डिक का बयान किया है उसी तरह का कोई और आदमी भी है?

जेरी०। नहीं कोई नहीं॥

डिक०। (खुशी जाहिर करता हुआ) ओहो तब तो मेरी

किस्मत कुछ जागी मालूम पड़ती है। अच्छा साहब सुनिये, आज सवेरे मैं एक दवाई बनाने के लिये कुछ बूटियां तलाश करने जङ्गल में गया था। वहां...........(कुछ रुक कर) आप तो शायद मेरी इस दवा का गुण न जानते होंगे॥

जेरी०। नहीं मुझे नहीं मालूम खैर तुम अपना हाल कहो दवा को जाने दो॥

डिक०। वाह साहब दवा को जाने कैसे दूँ? कैसी मेहनत करने बाद तो किसी तरह वह दवा हाथ लगी है आप कहते हैं जाने दो। वैसी दवा आपने कभी देखी भी न होगी। अगर आप को गठिया हो गई हो, किसी किस्म का दर्द होता हो, या टांग टूट गई हो..............

जेरी०। (गुस्से से) अजी तुम अपना हाल कहो, मुझे गठिया नहीं हुई है॥

डिक०। अच्छा आप को नहीं तो आपकी स्त्री या लड़के...

जे०।(और भी गुस्से से)तुम अपनी दवाका जिक्र न छोड़ोगे?

डिक०। (शान्त भाव से) जाने दीजिये साहब जब आप को उसका जिक्र अच्छा नहीं लगता तो मुझे कौन सी गरज पड़ी है कि मैं कहने जाऊँ, मैं तो आप ही के भले के लिये कहता था कि शायद आपकी या आपके लड़के बालों की नहीं तो किसी और रिश्तेदार.........

अब जेरी बरदाश्त न कर सका और आगे बढ़ कर डिक की तरफ उँगली से इशारा करता हुआ सरदार से बोला, "देखो जी! तुम इस बेवकूफ को मना करो नहीं तो मैं बिना पीटे इसको न छोड़ूंगा!!"

सरदार ने जवाब दिया,"जो आदमी अपनी दवा की तारीफ करता है वह बेवकूफ कहलाने या सजा पाने लायक नहीं है खास कर जब वह दवा वैसी ही है जैसी वह कह रहा है। मैं खुद उस दवा को कई बार आजमा चुका हूं॥"

लाचार जेरी ने फिर डिक की तरफ देखकर कहा,"अच्छा कहो क्या कहते हो,मगर इस बात का खयाल रखना कि दवा का जिक्र न आने पावे॥"

डिक०; बहुत अच्छा वैसा ही होगा। अच्छा तो मैं क्या कह रहा था? हां याद आया। आज मैं अपनी उस दवा के लिये कुछ जड़ी बूटी तलाश करने के लिये जङ्गल में गया था जिसका जिक्र करने से ही आपको गुस्सा आ जाता है और जिसके लिये ताज्जुब नहीं आपको कभी मेरी खुशामद करनी पड़े क्योंकि गठिया बाई या दर्द की उससे बढ़ कर और कोई दवा नहीं है। मैं तो उसका जिक्र सिर्फ इसीलिये करता था कि आपके बहुत से जान पहिचान वाले हैं अगर आप उनसे सिफारिश कर देंगे तो मेरी दवा की कुछ बिक्री हो जायगी और ईश्वर न करे आपको कहीं कुछ हो गया तो आप किसी तरह का खयाल न करके सीधे मेरे पास चले आइयेगा। मैं आपको बात की बात में...............

इतना सुनते सुनते जेरी का गुस्सा फिर बढ़ गया और वह तरह तरह की बातें बकने लगा मगर डिक इस तरह चुपचाप खड़ा रहा मानो कुछ सुनताही नहीं और इस सबब से उसका गुस्सा और भी बढ़ता गया। सरदार और लीना चुपचाप खड़े मन ही मन में डिक की तारीफ कर रहे थे और ताज्जुब कर

रहे थे कि इस तरह जेरी को चिढ़ाने से उसका क्या मतलब है क्योंकि अगर जेरी को जरा भी यह शक हो जाता कि जिससे वह बातें कर रहा है वही डिक है तो फिर जो होता उसको डिक स्वयम् ही सोच सकता था ॥

जब कुछ देर बाद जेरी कुछ ठंढा हुआ तो डिक ने फिर कहा, "हां ! तो आप दवा का जिक्र नहीं सुना चाहते ?"

अब जेरी बरदाश्त न कर सका और डिक के पास आकर तथा जेब से पिस्तौल निकाल कर बोला, "देखो जी ! अब जो तुमने दवा का जिक्र करके मुझे और तकलीफ पहुंचाई तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा ॥"

डिक ने बड़ी शान्ति के साथ कहा, "नहीं हुजूर आप का गलत खयाल है। मेरी दवा तकलीफ नहीं देती वह तो तकलीफ कम करती है ॥"

इतना सुनते ही सब के सब खिलखिलाकर हँस पड़े यहां तक कि जेरी के साथी भी जो अभी तक बड़ी मुश्किल से अपने को हँसने से रोके हुए थे अब रोक न सके और जोर से हँस पड़े जिसे देख जेरी का क्रोध और भी बढ़ गया। आखिर जब उसके एक साथी ने उसकी बहुत खराब हालत देखी तो उसकी जगह पर आप बढ़ कर बातें करने लगा ॥

साथी०। अच्छा भाई तुम मुझसे कहो क्या कह रहे थे मगर अब दवा का जिक्र मत करो ॥

डिक०। हां साहब यही तो मेरी भी इच्छा है मगर बात यह है कि मैं अपनी दवा की बेइज्जती नहीं सह सकता ॥

साथी०। नहीं नहीं तुम्हारी दवा की कौन बेइज्जती कर रहा

है? मैं तो खुद कई बार उसकी तारीफ सुन चुका हूं। तुम जो कह रहे थे उसे जल्दी खतम करो तो मैं तुमसे वह दवा थोड़ी सी मोल लूँगा॥

डिक०। ठीक ठीक! तुम कुछ अक्लमन्दों की तरह बातें करते हो और उतने बेवकूफ नहीं मालूम पड़ते जितना (जेरी की तरफ इशारा करके) वह आदमी है॥

बेचारे जेरी ने कुछ कहना चाहा मगर उसके साथी ने उसे रोक कर कहा, "देखो जी, तुम्हारे जी में और जो आवे सो कहो मगर किसी अफसर की निन्दा न करो॥"

डिक०। आपका कहना ठीक है मगर क्या करूं मुझे और लोगों की तरह बातें बनाना तो आता नहीं है। मेरे तो जो जी में आता है मैं साफ साफ कह देता हूं किसी की परवाह नहीं करता। (जेरी की तरफ दिखा कर) यदि इन्हें मेरी बातें अच्छी नहीं मालूम होतीं तो न सुनें कान में तेल डाल लें। खैर इससे कोई मतलब नहीं आप मेरी बात सुनिये, जब मैं उस दवा के लिये जिसका जिक्र ऊपर कर चुका हूं कुछ बूटियें तलाश करने जङ्गल में गया तो कुछ दूर चले जाने बाद दो आदमियों के बातचीत की आवाज सुन कर मुझे ताज्जुब मालूम हुआ और मैं उनकी बातें सुनने के इरादे से छिपता हुआ उनके पास तक चला गया॥

जेरी०। (आगे बढ़ कर) तब क्या हुआ?

डिक०। पहिले तो मैंने समझा था कि शायद वे दोनों कोई भले आदमी हैं घूमते फिरते इधर आ निकले हैं मगर थोड़ी ही देर में मालूम हुआ कि मेरा वह खयाल गलत था। वे दोनों

एक पत्थर पर बैठे हुए थे और उनके बीच में रुपयों और अशर्फियों का एक ढेर लगा हुआ था ॥

जेरी०। वे दोनों क्या क्या बातें कर रहे थे ॥

डिक०। दूर होने के कारण मैं साफ़ साफ तो न सुन सका मगर इतना समझ में आया कि किसी सराय से ये रुपै उनके हाथ लगे थे। कुछ देर तक बात करने बाद वे सब उठ कर एक टूटे फूटे मकान की तरफ़ चले गये जो वहां से थोड़ी ही दूरी पर था। मैं भी फिर वहां न ठहरा और सीधा चला आया॥

जेरी०। तुम उनकी सूरत भी देख सके थे ?

डिक०। दोनों की तो नहीं मगर एक की सूरत शक्ल डिक के उस हुलिये से मिलती थी जो आपने अभी बयान किया है। जहां तक मैं खयाल करता हूं वह डिक ही था॥

जेरी०। (उत्कंठा के साथ) तुमने उन को कब देखा था?

डिक०। आज ही सवेरे॥

जेरी०। (आगे बढ़ कर और डिक के कंधे पर हाथ रख कर) देखो जी ! अगर तुम मुझे वह जगह दिखादो जहां तुमने उन दोनों को देखा था तो मैं तुम्हें पचास रुपये दूंगा॥

डिक०। (कुछ पीछे हट कर) क्यों पचास ही रुपै क्यों ? अभी तो तुमने चार हजार बतलाया था और अब पचास हो गया ?

जेरी०। चार हजार उसे मिलेगा जो उन दोनों को पकड़ा देगा। तुम तो सिर्फ उनका पता ही बताते हो॥

डिक०। हां जब तुमने सब हाल मुझसे जान लिया है तब तो ऐसा कहोहीगे अगर पहिले मुझे मालूम होता कि इतनी

मेहनत करने पर सिर्फ पचास ही रुपे मिलेंगे तो मैं क्यों तुमसे वह हाल कहता। और अब तो गलती होही गई अब इस पचास को भी जाने देना ठीक नहीं। लाओ निकालो रुपया॥

जेरी०। अभी क्यों दूं! तुम पहिले हम लोगों को उस जगह ले चलो तब रुपया भी मिल जायगा॥

डिक०। और अगर वहां चल कर तुम रुपया न दो तब?

जेरी०।(हंस कर) नहीं नहीं ऐसा न होगा घबड़ाओ मत॥

डिक०। अच्छा तो फिर मेरे साथ चलो। हां! एक बात और है। अगर वहां चल कर तुम उन दोनों को न पकड़ सके या इस समय तक वे वहां से चलेही गये तब भी मैं तुमसे पचास रुपये ले लूंगा॥

जेरी०। वाह तब तुम्हें कैसे रुपये मिलेंगे? जब हम लोग उन दोनों को पकड़ लेंगे तो तुम्हें रुपया मिलेगा॥

डिक०। अच्छा तो फिर आप ही जाकर उन्हें खोज भी लीजिये। मुझे कोई गरज नहीं है कि इतनी दूर जाऊँ और फिर बैरंग वापस आऊँ। मैं सिर्फ वह जगह आपको दिखा दूँगा और पचास रुपया ले लूँगा। इस बात से कोई मतलब नहीं कि आप उन्हें पकड़ सकें या नहीं। अगर मंजूर हो तो मेरे साथ चलिये नहीं जाइये हवा खाइये॥

आखिर सोच बिचार कर जेरी ने पचास रुपया देना स्वीकार किया और आप अपने साथियों से कुछ सलाह करने के लिये पीछे की तरफ हट गया। डिक ने भी कुछ हट कर लीना से कहा,"क्यों! हमारे साथ चल कर तमाशा देखना है?"लीना यह सुनते ही चलने के लिये तैयार हो गई क्योंकि उसे यह

जानने की बड़ी उत्कंठा हो रही थी कि डिक इन सभों को साथ लेजाकर क्या किया चाहता है॥

थोड़ी ही देर में जेरी डिक के साथ चलने के लिये तैयार हो गया। डिक और लीना आगे आगे चलने लगे और जेरी तथा उसके साथी उनके पीछे पीछे रवाना हुए॥

तेरहवां बयान।

इस समय डिक जेरी को जिस तरफ ले चला था उधर का जंगल बहुतही घना और कुछ भयानक भी मालूम पड़ता था। ऊँचे २ पेड़ों के सबब से दिन को भी एक प्रकार का अंधकार ही छाया रहता था। उस तरफ कुछ दूर जाने बाद एक नाला भी पड़ता था जो बरसात के दिनों में नदी का रूप धारण कर लेता था तथा उसके सबब से उधर की जमीन बराबर तर रहा करती थी और कहीं कहीं दलदल भी हो जाता था जो कि आने जाने वाले मुसाफिरों के लिये बहुतही खतरनाक होता था क्योंकि अंधेरे के सबब से जल्दी इस बात का पता न लगता था कि सामने थोड़ी ही दूरी पर किस तरह की जमीन है॥

चलते चलते लीना ने डिक से धीरे से पूछा, "इसका क्या नाम है?"

डिक०। जेरी जर्विस॥

लीना०। मालूम होता है इसके साथ तुम्हारी पहिले भी मुलाकात हो चुकी है॥

डिक०। हां मैं इसे बहुत दिनों से जानता हूं और एक दफे

इसपर हाथ भी साफ़ कर चुका हूं॥

लीना०। वह क्या?

इसके जवाब में डिक वह सब हाल धीमे स्वर से लीना से कह गया जब उसने डिक के पीछे जाकर उसकी अशर्फ़ियों की थैली लूटी थी। लीना यह सुन बहुत हँसी और बोली, "अब तुम इसे इतना दिक़ कर चुके हो तो यह तुमसे बहुत चिढ़ता होगा?"

डिक०। भला यह भी कुछ पूछना है देखो खाक छानता यहां भी पहुंच गया॥

इसके बाद कुछ ज्यादा बातचीत करने का इन्हें मौका न मिला क्योंकि अब वह जगह आगई थी जहां डिक पहुंचा चाहता था अस्तु वह रुक कर जेरी और उनके साथियों के आने का इन्तज़ार करने लगा जो कि पीछे छूट गये थे॥

थोड़ी ही देर में साथियों सहित जेरी वहां आ पहुंचा। रास्ते में एक पेड़ की डाल की चोट बचाते समय उसे दूसरी डालकी ऐसी चोट लगी थी कि उसका सिर भिन्ना उठा था। वह अपना सिर टटोलता तथा इधर उधर देखता हुआ डिक से बोला, "तुम यह कैसी जगह हमलोगों को ले आये हो? क्या यहीं वे दोनों डाकू हैं?"

डिक०। हां मैंने यहीं उन दोनों को देखा था। अच्छा तो तुमलोग उनका मुकाबला करने को तैयार हो?

जेरी०। हां हमलोग तैयार हैं॥

डिक०। तो मैं पहिले जाकर देख आऊं कि वे दोनों हैं या नहीं अगर वे होंगे तो मैं वहीं से अपना दोनों हाथ जोर

से हिलाऊंगा तुमलोग तेजी से दौड़कर उन्हें गिरफ़ार कर लेना। मगर फुर्ती करना कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आने की आहट पाकर वे दोनों भाग जायँ। हां! एक बात का और खयाल रखना! जहां तक मैं समझता हूं उनके पास घोड़े जरूर होंगे सो तुम लोग भी घोड़ों पर सवार ही रहना और जब मैं बुलाऊँ आ जाना॥

इतना कह और जवाब की कुछ राह न देख डिक आगे की तरफ बढ़ा और इशारे से लीना से कहता गया कि वह कहीं खड़ी होकर तमाशा देखे॥

अब डिक जिस तरफ जा रहा था उधर एक बड़ा दलदल था। चौड़ाई में तो वह ज्यादे न था मगर लम्बाई में बहुत दूर तक फैला हुआ था और उसके उस पार जाने के लिये कोई ठीक रास्ता न था, बहुत चक्कर लगाकर जाना पड़ता था। सब से भयानक बात इस दलदल में यह थी कि इसका ऊपरी हिस्सा सूखकर ठोस हो गया था और देखने से यह नहीं मालूम होता था कि इसके नीचे दलदल है मगर वह ऊपरी हिस्सा इतना मजबूत भी न था कि आदमी का बोझ बरदाश्त कर सके॥

डिक ने इस दलदल को एक ऐसी जगह से पार किया जहां की जमीन कुछ ज्यादे ठोस होने के कारण आदमी का बोझ सम्हालने लायक थी। जब वह उस पार पहुंच गया तो उसने कदम दबाकर चलना शुरू किया और जब उस टूटे हुए मकान के पास पहुंचा जो वहां से थोड़ीही दूरी पर था तो जमीन पर लेटकर चलने लगा। कुछ देर तक इसी तरह चलने और कान लगा कर सुनने के बाद वह यकायक उठा और अपने दोनों

हाथ सिर से ऊपर उठाकर जोर जोर से हिलाने लगा ॥

जेरी और उसके साथी जो घोड़ों पर सवार बड़े गौर से डिक की सब हरकतें देख रहे थे यह इशारा पातेही घोड़े तेज कर उस तरफ बढ़े जिधर डिक था । उन में से किसी को भी इस बात का गुमान न था कि सामने दलदल है इसलिये उन्हों ने किसी तरह का खयाल न किया और बराबर बढ़े गये। यकायक डिक का घोड़ा दलदल में जा फँसा और जबतक जेरी उसे रोके रोके तब तक तो और भी आगे बढ़ गया और अपनी जान बचाने के लिये उछल कूद करने लगा । जेरी के साथियों की भी यही हालत हुई और वे सब अपनी अपनी जान बचाने की फिक्र में पड़ गए । घोड़ों के उछल कूद के सबब से कीचड़ की छीटायें उड़ उड़ कर तथा उनके चेहरों पर पड़ पड़ के उन्हें और भी अन्धा बना रही थीं ॥

डिक ने जब देखा कि वे सब अपनी अपनी फिक्र में पड़ गये हैं और मेरी तरफ किसी का खयाल नहीं है तो उसने अपनी पिस्तौल कमर से निकाल कर दो दफे हवा में छोड़ी और आप डरता और कांपता हुआ इस तरह एक पेड़ की आड़ में जा छिपा मानो किसी ने उसपरही पिस्तौल छोड़ीहो॥

बड़ी मुश्किल से किसी तरह जेरी दलदल के बाहर आया और उसके बाद उसके साथी भी बाहर आये तथा सभों ने खींच तानकर बचे हुए घोड़ों को भी किसी तरह बाहर किया मगर इस समय उन सभों की शक्ल ऐसी हो गई थी कि हँसी रोके नहीं रुकती थी । टोपी किसी के सर पर न थी और कपड़ा कीचड़ में इतना लथपथ हो रहा था कि यही मालूम

होता था कि वे कीचड़ ही बदन से लपेटे हुए हैं। जेरीने अपना कोट उतार डाला और चेहरे की कुछ सफाई करने बाद गालियों की बौछार करता हुआ डिककी तरफ बढ़ा जो अब आड़ से बाहर आ गया था। डिक ने बड़ी मुश्किल से अपने को हँसने से रोका और जेरी से पूछा, "क्यों आप मुझे क्यों गालियां दे रहे हैं?"

जेरी ने अपनेको कुछ सम्हाल कर कहा, "तुमने हमलोगों को पहिले यह क्यों नहीं बताया कि सामने दलदल है?"

डिक०। तुम्हारे आंख थी या नहीं जो मैं तुम्हें बताता? तुमने यह खयाल न किया कि मैं जो इतना चक्कर लगा कर यहां आया हूं सो किस लिये? तुम भी उसी रास्ते से इधर आ जाते जिधर से मैं आया था॥

जेरी०। अच्छा अच्छा बहुत बकवाद न करो यह बताओ डाकू कहां हैं?

डिक०। वे कुछ आंख कान बन्द करके तो बैठे नहीं थे कि इतना शोर, गुल, चीखना, चिल्लाना, सुनकर भी बैठे रहते। वे तो कभी के निकल भागे और (कांप कर) जाती समय मुझ पर गोली भी चलाई बारे में किसी तरह बच गया॥

जेरी का एक साथी०। हां पिस्तौल की आवाज तो मैंने भी सुनी थी॥

जेरी०। (डिक से) अच्छा तो अब वे किस तरफ गये हैं?

डिक०। (उंगली से बता कर) एक तो उस तरफ चला गया मगर दूसरा किधर गया सो मैंने देखा नहीं। मैं डर के मारे पेड़ की आड़ में छिप गया था॥

जेरी ने अपने कपड़ों की तरफ देखा और फिर अपने साथियों की तरफ। सब कीचड़ से लथपथ हो रहे थे। ऐसी अवस्था में डाकुओं का पीछा करके अपनी बेइज्जती करना उसे मंजूर न था इसलिये उसने अपने साथियों से कहा, "अब मेरी समझ लौट चलना ही बेहतर होगा?" सभों ने उसकी हां में हां मिलाई और पीछे की तरफ लौटे। जब वे कुछ दूर चले गये तो डिक ने जोर से पुकार कर कहा, "अजी मेरा रुपया तो देते जाओ भागे क्यों जाते हो?"

जेरी ने पीछे घूम कर पूछा, "रुपया कैसा?"

डिक०। अब इनको बतलाना पड़ेगा कि रुपया कैसा! अजी जनाब वही रुपया जो आपने मुझे देने को कहा था॥

जेरी०। (चिढ़ कर) अब तुमको कैसा रुपया दिया जाय? क्या तुमने डाकुओं को पकड़ा दिया जो रुपया मांगते हो?

डिक ने जहां वह खड़ा था वहां से देख लिया था कि उस टूटे मकान के बाहर की तरफ कुछ हंडिया पत्तल पड़ी है जिससे यह गुमान होता था कि वहां किसी मुसाफिर ने रसोई बनाई है, अस्तु उसने जेरी के पास जाकर कहा, "मैंने आपसे यह वादा तो किया नहीं था कि उनको पकड़ा दूंगा। मैंने तो सिर्फ वह जगह आपको बतला देने को कहा था जहां वे दोनों थे। यदि आप उन्हें पकड़ न सकें तो मेरा क्या कसूर? यदि आप को इस बात का विश्वास न होता हो कि वे दोनों वहां थे तो आप वहां चल कर देख सकते हैं कोई न कोई निशान उनके रहने का जरूर दिखाई पड़ेगा॥"

जेरी ने यह सोच कर कि शायद कोई ऐसी चीज दिखाई

दे जाय जिससे उनके पकड़ने में सुभीता हो डिक के साथ चलना मंजूर किया। सब के सब उस मकान के पास आये। वह मकान नाम मात्र को ही मकान था असल में सिर्फ एक दालान था जो अब बहुत टूट फूट गया था मगर तिस पर भी इस लायक था कि बरसात में पानी रोक सके॥

इस समय उस दालान में पत्तल इत्यादि पड़ी हुई थी और एक कोने में कुछ राख इत्यादि भी पड़ी हुई थी जिसे देख जेरी को निश्चय हो गया कि जरूर वे दोनों डाकू यहां टिके थे। वह फिर बाहर आया और घोड़े पर सवार हो जेब में से दो अशर्फी निकाल कर डिक की तरफ फेंका और इसके बाद साथियों को साथ ले चला गया। डिक चिल्लाता ही रह गया कि "बाकी का बीस?" मगर किसी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया॥
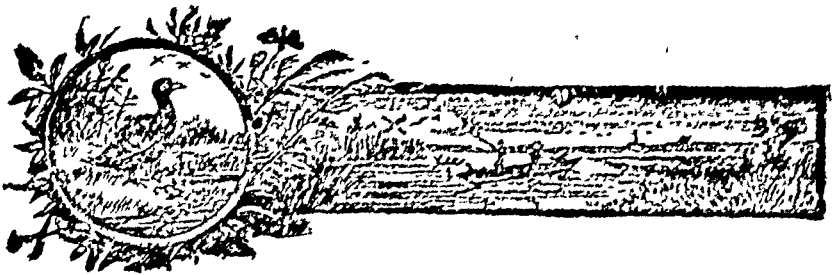
चौदहवां बयान ।

गर्टरूड ने लंदन आकर अपने बाप से बिल्कुल ही सम्बन्ध छोड़ दिया क्योंकि थोड़े ही दिन बाद उसके बाप ने मजदूरनी से शादी करली और इसके सिवाय कई जरूरी काम पड़ने पर भी उसने गर्टरूड को नहीं बुलाया जिससे उसका दिल और भी खट्टा हो गया। इस खींचातानी में रंटन की बहिन प्रिस्किला ने गर्टरूड को और भी शह दे रक्खी थी क्योंकि अपने भाई के घर से निकाल दिये जाने के कारण उसे अब सिवाय गर्टरूड के और किसी का सहारा न था और वह यह समझती थी कि जब तक गर्टरूड अपने बाप से बिगड़ी रहेगी तभी तक उसके लिये भी खैर है ॥

लेकिन गर्टरूड ने जो बात सोचकर प्रिस्किला को साथ लिया था वह न हुआ क्योंकि थोड़े ही दिनों बाद उसने हाथ पांव फैलाना शुरू किया और धीरे धीरे गर्टरूड के ऊपर भी हुकूमत करने लगी जो उसे (गर्टरूड को) बिल्कुल पसन्द न था। प्रिस्किला ने जिसे अब हम सुबीते के लिये पिकी कहकर पुकारेंगे यह सोचा था और उसका यह सोचना ठीक भी था कि जब तक गर्टरूड उससे दबती रहेगी तभी तक खैर है नहीं तो जब वह खुदमुख़ार हो जायगी तो उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर करेगी। इसी बात को सोच कर पिकी इस बात का भी ख्याल रखती थी कि गर्टरूड मर्दों से ज्यादा मुलाकात बढ़ाने न पाये क्योंकि ऐसा होने से कदाचित् वह जल्दी शादी करलेती और ऐसा होने पर भी उसे गर्टरूड का साथ छोड़ना पड़ता ॥

भाग्य से पिकी को मार्था नाम की एक मजदूरनी भी ऐसी मिल गई थी कि जो उसी के मन लायक थी। पिकी ने उसे विश्वास दिला दिया था कि वही घर की मालकिन है और उसीके कहने के मुताबिक सब काम होने चाहिये। सब कामों में एक काम गर्टरूड के ऊपर निगरानी रखने का भी शामिल था और इसी पर ज्यादा जोर भी दिया गया था॥

यद्यपि गर्टरूड को लन्दन रहते बहुत दिन बीत गए मगर वह अपने दिल से डिक का खयाल न भुला सकी जिसे वह रिचार्ड के नाम से जानती थी क्योंकि आखिरी दफे जब उस को डिक से मुलाकात हुई थी तो डिक ने कुछ सोच विचार रिचार्ड ही नाम गर्टरूड को बताया था और असली नाम छिपा रक्खा था। वह उससे मिलने के लिये घबराती और तरह तरह के बांधनू बांधती मगर ठीक एक भी न होता था॥

आखिर एक दिन उसने यह निश्चय किया कि किसी के हाथ रिचार्ड को एक चीठी भेजवाये मगर इसमें मुश्किल इस बात की थी कि उसे पता नहीं मालूम था। सोचते सोचते उसे यह खयाल आया कि पीटर शायद उसका पता जानता हो क्योंकि उसी के पास रिचार्ड (डिक) प्रायः ठहरा करता था। यह खयाल आते ही उसने पीटर के नाम की एक चीठी लिखी और उसमें उससे रिचार्ड का पता पूछा॥

चीठी ले जाने के लिये उसने मार्था को बुलाया और पीटर की सराय का पता उसको बतला कर चीठी देदी और कह दिया कि कोई सवारी करके जल्दी चली जाय और उस का जवाब ले आवे, साथ ही यह बात भी चिता दी कि इस

चीठी का हाल किसी को मालूम न हो अगर मालूम हो जायगा तो उसके लिये अच्छा न होगा। मार्था बड़ी धूर्त थी, उसने देख लिया कि अगर यह काम ठीक तरह से कर देगी तो उसे कुछ इनाम मिलने की उम्मीद है अस्तु उसने पिकी के समझाने बुझाने को तो ताक पर रख दिया और चीठी लेकर जाने के लिये तैयार हो गई। यह कह कर कि "एक रिश्तेदार को देखने जाना है।" उसने पिकी से एक दिन की छुट्टी ली और और पीटर की सराय में पहुंची जो लन्दन शहर के बाहर की तरफ थी॥

मार्था ने पीटर को अपनी सराय में न पाया क्योंकि वह तो आजकल जिप्सियों के साथ था मगर उसकी स्त्री ने वह चीठी लेली और वादा किया कि कल तक पीटर को चीठी मिल जायगी। मार्था ने लौट कर गर्टरूड को सब हाल सुनाया और वह उत्कंठा के साथ जवाब का इन्तजार करने लगी॥

जब पीटर को वह चीठी मिली तो उसने डिक को दिखलाया और उससे पूछा कि इसका क्या जवाब दिया जाय। डिक वहां रहते रहते घबड़ा गया था इससे उसने यही निश्चय किया कि कुछ दिनों के लिये लन्दन चला चले और वहीं गर्टरूड से मुलाकात भी करे। यद्यपि लन्दन जाने से उसके पकड़े जाने का बड़ा डर था मगर उसे इन बातों का कुछ खयाल ही न था और वह यह जानता ही न था कि डर किस चिड़िया का नाम है। उसने कह सुन कर टामी और जिप्सियों से कुछ दिनों के लिये छुट्टी लेली और पीटर की सराय में आया जहां दो तीन दिन रहकर उसने सब हाल चाल की खबर लेली और

इसके बाद लन्दन जाकर वहां की एक सराय में डेरा डाल दिया। एक दिन मैाका पाकर उसने गर्टरूड के एक चीठी लिख कर यह पूछा कि वह किस दिन उससे मिलने के लिये आवे॥

गर्टरूड ने अपनी चीठी के जवाब की राह इतने दिनों तक देखी और जवाब न पाकर निश्चय कर लिया था कि वह चीठी पीटर के नहीं मिली मगर आज खुद रिचार्ड की चीठी पाकर उसे बहुत खुशी हुई। कुछ देर तक तो वह तरह तरह के खयालों में डूबी रही और इसके बाद यह सोचने लगी कि डिक के क्या जवाब दिया जाय या उसे कब बुलाया जाय। वह बहुत देर तक इसपर गैार करती रही मगर कुछ निश्चय न कर सकी। अन्त में उसने यह निश्चय किया कि मार्था के भी अपने इस भेद में शामिल कर ले और उससे इस बारे में सलाह पूछे॥

जब शाम हुई तो उसने मार्था के अपने कमरे में बुलाया और जब वह आई तो उससे बाल साफ करने के कहा। मार्था चुपचाप उस कुर्सी के पीछे जा खड़ी हुई जिसपर गर्टरूड बैठी थी और उसका बाल साफ करने लगी। गर्टरूड ठहर ठहर कर लम्बी सांसें लेती थी जिससे मार्था ने पूछा, "क्या आप की तबीयत कुछ खराब है?" गर्टरूड ने जवाब दिया, "नहीं कुछ नहीं एक बात सोच रही हूं॥"

मार्था०। क्या मैं भी वह बात जान सकती हूं?

गर्टरूड०। हां अगर तू किसी से कहे नहीं तो॥

मार्था०। नहीं अगर आप मना कर देंगी तो फिर मैं क्यों किसी से कहने लगी। आप इस बात से घबड़ावें नहीं मैं कभी

किसी से जिक्र न करूंगी॥

गर्टरूड०। (कुछ सोच कर) अच्छा तू ने कभी किसी से प्रेम किया है?

सार्थी०। हाँ कइयों से॥

गर्टरूड०। कइयों से! इसका क्या मतलब?

सार्थी०। यही कि जब मैं जवान थी तो कई आदमियों की दहेती थी॥

गर्टरूड०। सो मैं नहीं पूछती, यह बतला कि कभी किसी से सच्चा प्रेम भी किया है॥

सार्थी०। अब जब आप पूछती ही हैं तो मैं क्यों कोई बात आप से छिपाऊँ। बात यह है कि मैं प्यार तो सच्चे ही तौर से करती थी मगर वह प्यार ज्यादा दिनों तक नहीं रहता था थोड़े ही दिनों के लिये होता था॥

गर्टरूड०। वाह! जब सच्चा प्रेम था तो थोड़े दिनों के लिये क्यों?

सार्थी०। इस बात का जवाब तो मैं नहीं दे सकती हां यह कह सकती हूं कि जो मैंने कहा वह सच कहा है। एक बात और भी है॥

गर्टरूड०। वह क्या?

सार्थी०। यही कि मैंने अभी तक किसी को किसी से सच्चा प्रेम करते देखा भी नहीं, जितना देखा वह सब एक तरह का लेनदेन या सौदा ही देखा। मर्द औरतों को तभी तक प्यार करते हैं जब तक उनमें खूबसूरती रहती है, अगर किसी कारण से वा बीमारी से औरत की खूबसूरती में फर्क आ गया

तो बस उनका प्रेम भी हवा हो जाता है। इसी तरह औरतों का भी हाल समझिये। जब तक मर्द अमीर रहे और उनके गहने कपड़े की फरमाइश अच्छी तरह पूरी करता रहे तब तक तो ठीक है नहीं इसके बाद बस !!

गर्टरूड०। तो फिर तू यह क्यों कहती है कि "मैं सच्चा प्रेम कर चुकी हूं॥"

मार्था०। मैं मामूली तरह से औरतों की गिनती के बाहर तो हूं नहीं। जैसा ये लोग कहती हैं और जैसा मैं सुना करती हूं वही आप से भी कहती हूं !!

गर्टरूड०। (कुछ देर तक चुप रहने बाद) तो तेरे कहने का यह मतलब है कि कोई किसी से सच्चा प्रेम नहीं कर सकता॥

मार्था०। नहीं मेरा यह मतलब नहीं है। सभी लोग ऐसे नहीं होते। कुछ लोगों में सच्चा प्रेम भी देखा जाता है मगर ऐसों की गिनती बहुत कम है। शायद आप भी किसी को......

गर्टरूड०। हां मैं भी एक आदमी को प्यार करती हूं। उससे पहिले पहिल मेरी जान पहिचान कई बरस हुए मेरे बाप के यहां हुई थी जब मैं वहां रहा करती थी। उसके बाद बहुत दिनों तक मैंने उसे नहीं देखा मगर अब थोड़े दिन हुए फिर मुलाकात हुई है॥

मार्था०। उनकी उमर क्या होगी ?

गर्ट०। यही कोई अट्ठाईस उन्तीस बरस की। रंग रूप में बहुत अच्छे हैं। आज ही उनकी एक चीठी भी मुझे मिली है, ठहर मैं तुझे वह चीठी दिखाऊँ॥

इतना कह कर गर्टरूड उठी और डिक की चीठी खोज

कर मार्था को दिखाई। जब मार्था पढ़ चुकी तो बोली, "तो आपने इसका क्या जवाब दिया है ?"

गर्ट०। बस इसी सोच में तो हूं कि क्या जवाब दूँ! मुलाकात करने की तो बड़ी इच्छा होती है॥

मार्था०। तो फिर इसमें रुकावट क्या है ?

गर्ट०। यही कि मैं अपनी चाची को इस बात की कोई खबर नहीं होने दिया चाहती॥

मार्था०। यह तो मुश्किल बात है। वह तो थोड़ी देर के लिये भी आप से अलग नहीं होतीं॥

इतना कह कर मार्था कुछ देर तक इस तरह खड़ी रही मानो किसी बड़े भारी सोच में डूबी हुई है इसके बाद बोली, "अच्छा कल तो नहीं आप उन्हें परसों बुलाइये तब तक मैं कोई न कोई ढंग सोच लूंगी॥"

गर्टरूड ने बड़ी खुशी से यह बात मान ली और उसी समय चीठी भी लिख डाली जो कि उसी दिन डिक के पास भेजवा भी दी गई॥
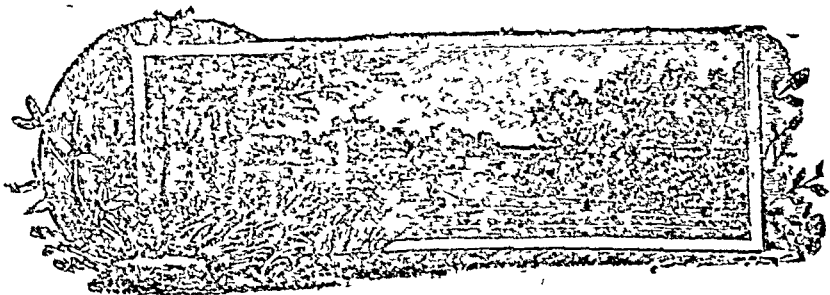
पन्द्रहवां बयान।

दूसरा दिन और रात भी किसी तरह बीत गई और वह दिन आ गया जिस दिन गर्टरूडने रिचार्ड को आने को कहा था। जब गर्टरूड और उसकी चाची करीब दस बजे के खाना खा कर उठे तो गर्टरूड ने पिकी से कहा,"चाची! परसों मेरा जन्म-दिन है और मेरे पास पहिनने को कोई अच्छा कपड़ा नहीं है अगर तुम जाकर मेरे लिये कोई अच्छा कपड़ा ले आतीं तो बहुत अच्छा होता॥"

पिकी को बाजार में घूम घूम कर चीजें खरीदने का बड़ा शौक था आज जब उसने गर्टरूड की यह बात सुनी तो बहुत खुश हुई और बोली,"हां बेटी मैं जरूर जाऊंगी,मेरे पास भी कोई अच्छा कपड़ा नहीं है लगे हाथ अपने लिये भी कुछ ले लूंगी, तुम जाओ जल्दी से कपड़ा पहिन कर तैयार हो जाओ। दोनों साथ ही बाजार चलेंगे॥"

मगर गर्टरूड यह कब चाहती थी कि अपनी चाची के साथ बाहर जाये। उसे तो अपनी चाची ही को आज घर से टालना था। इसलिये जब उसने देखा कि पिकी उसे भी साथ ले जाया चाहती है तो सोच में पड़ गई कि किस तरह उसे टालें॥

उसको सोचते देख पिकी ने पूछा,"क्यों किस सोच में पड़ गई?"

गर्ट०। कुछ नहीं यही सोचती हूं कि आज सवेरे से मेरा सिर कुछ दर्द कर रहा है सो मेरा इस समय धूप में निकलना ठीक होगा या नहीं॥

पिकी०। नहीं नहीं जब तबीयत खराब है तो बाहर जाना ठीक नहीं। मैं भी आज न जाऊंगी कलही जाऊँगी॥

गट०। नहीं नहीं मुझे कुछ ऐसी तकलीफ नहीं है जिसके सबब से तुम अपना जाना छोड़दो, कुछ सिर भारी मालूम होता है कोई बात नहीं है कुछ देर सो रहने से ठीक हो जायगा॥

पिकी ने चलने की तैयारी की। जब कपड़े पहिन कर तैयार हुई तो मार्था को बुला कर कहा, "मार्था! मैं थोड़ी देर के लिये एक काम से बाहर जाती हूं। गट्रूड की तबीयत कुछ खराब है सो तू उसी के पास रहियो और उसकी तरफ से होशियार रहियो कुछ लड़कपन न करने पाये॥"

मार्था०। जैसा आप कहती हैं वैसा ही होगा आप बेफिक्र रहें॥

पिकी०। जब मैं लड़की थी तो कोई धोखे फरेब का नाम भी नहीं जानता था मगर आज कल की लड़कियां तो बात बात में धोखा देती हैं। देखने में तो बड़ी सीधी मगर नस नस में खुटाई भरी रहती है, शायद गट्रूड भी किसी चालाकी की फिक्र में हो। सिवाय मेरे और कोई आवे तो दर्वाजा न खोलियो॥

पिकी इसी तरह से कुछ देर तक मार्था को तरह तरह की नसीहत देती रही और इसके बाद मकानके बाहर चली गई। उसे यह खबर न की कि मार्था भी दूसरे मेल में मिली हुई है और उसकी सब नसीहत पानी में मिल गई है। मार्था ऐसी धूर्त थी कि जब पिकी के सामने रहती तो उसके मेल की बातें करती और जब गट्रूड से बात करती तो उसके ढब

की हो जाती तथा इस तरह से दुतर्फी नफा उठाती थी। अस्तु इस समय जैसे ही पिकी घर से बाहर निकली वह गर्टरूड के कमरे में चली आई और उससे कह दिया कि "तुम्हारी चाची चली गई॥"

गर्टरूड जो अभी तक मुंह ढांपे पड़ी हुई थी यह सुन कर उठ खड़ी हुई और हंसकर मार्था से बोली, "तेरी तर्कीब तो खूब कारगर हुई! अच्छा तू अब नीचे जाकर बैठ जब कोई दरवाजा खट खटाये तो खोल दीजियो॥"

मार्था नीचे चली गई और गर्टरूड खिड़की के पास बैठ कर आने जाने वाले आदमियों और घोड़ों पर निगाह दौड़ाने लगी। उसे ज्यादे देर तक राह न देखनी पड़ी। थोड़ी ही देर के बाद एक गाड़ी दरवाजे पर आकर खड़ी हुई और उस में से उतर तथा गाड़ी बिदाकर रिचार्ड दरवाजा खटखटाने लगा। गर्टरूड बड़ी खुशी से आकर एक कुर्सी पर बैठ गई और साथ ही मार्था के साथ रिचार्ड या डिक भी कमरे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया॥

हम यह लिख कर पाठकों का समय नष्ट नहीं किया चाहते कि दोनों में किस तरह से बातें हुईं, कैसी कैसी शिकायतें हुईं या किस किस तरह के वादे किये गये। अगर उन को मौका मिलता तो न जाने कितनी देर तक वे उसी तरह बातें करते रहते मगर ऐसा न हुआ क्योंकि यकायक मार्था जो कमरे के बाहर चली गई थी अन्दर आई और घबड़ाई हुई आवाज से बोली, "अब क्या किया जाय! अब क्या किया जाय!! आपकी चाची तो अभी ही लौट आईं और दर्वाजे पर

खड़ी हैं !!"

गर्टरूड यह सुनतेही भौंचकसी रहगई। उसे स्वप्न में भी इस बात का खयाल न था कि उसकी चाची इतनी जल्दी लौट आवेगी और उसकी सब करी कराई मेहनत तर्कीब चौपट कर देगी। आखिर कुछ देर के बाद उसने अपने को सम्हाला और यह सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिये। थोड़ी ही देर में उसने एक ढंग सोच लिया और डिक का हाथ पकड़ कर यह कहती हुई एक कोठड़ी में चली गई, "जल्दी चुपचाप चले आओ।" उस कोठड़ी में से एक दूसरी कोठड़ी में जानेका रास्ता था। गर्टरूड ने उस दूसरी कोठड़ी का दर्वाजा खोला। उसमें दीवार में लगी हुई खूंटियों के सहारे कपड़े लटक रहे थे और वह कोठड़ी कपड़े ही रखने के लिये बनी हुई थी गर्टरूड ने थोड़े कपड़े खूंटियों से उतार कर जमीन पर डाल दिये और डिक को उस पर बैठा कर कहा, "जब तक मैं आकर दर्वाजा न खोलूं इसके बाहर निकलने की कोशिश न करना इसके बाद वह कोठड़ी के बाहर आई और दरवाजा बन्द कर तथा उसमें एक ताला लगा और ताली अपनी जेब में रख अपने कमरे में आई और मार्था को जो अभी तक वहीं खड़ी थी दर्वाजा खोलने के लिये कहा॥

उधर पिकी इतनी देर तक दर्वाजे पर खड़ी घबरा उठी और उसने फिर जोर से कुन्डा खटखटाया। इसके साथ ही मार्था ने आकर दर्वाजा खोला और वह भीतर आई। अन्दर आतेही पिकी ने गुस्से के साथ मार्था से पूछा, "क्यों रे। दर्वाजा खोलने में इतनी देर क्यों लगाई?"

मार्था ने जवाब दिया, "मुझे इस बात का खयाल नहीं था कि आप इतनी जल्दी लौट आवेंगी। इसी से दर्वाजा खोलने में देर हो गई॥"

पिकी ने और गर्म होकर कहा, "तो क्या तुझे यह बात नहीं सूझी कि कोई दर्वाजा खटखटा रहा है तो अन्दर आने के लिये ही खटखटाता होगा?"

मार्था०। हां यह बात तो मैं समझ गई थी मगर तुम्हीं ने न कहा था कि मेरे सिवाय और कोई अन्दर आना चाहे तो दर्वाजा न खोलना॥

पिकी ने अब कुछ ठंढी होकर कहा, "हां यह तो मैं कह गई थी मगर तू खिड़की से झांक कर देख तो सकती थी कि कौन है॥"

मार्था०। हां यही तो मैंने किया और इसीसे तो इतनी देर होगई॥

अब पिकी को इस विषय में और कुछ कहने सुनने को न मिला इससे उसने पूछा, "गर्टरूड कहां है?"

मार्था०। वह अपने कमरे में सो रही हैं॥

पिकी गर्टरूड के कमरे की तरफ चली। कमरे में पहुंचते ही आहट पाकर गर्टरूड ने आंखें खोल दीं और ताज्जुब से पूछा, "हैं! तुम अभी हो लौट आईं?"

पिकी०। हां मैं जल्दीही लौट आई। अब तुम्हारी तबीयत कैसी है?

गर्टरूड०। अब तो कोई शिकायत नहीं है। तुम्हारे जाने के थोड़ी ही देर, बाद मुझे नींद आगई और तब से मैं अभी

तक सोई ही रही थी, अभी तुम्हारे पांव की आहट पाकर नींद खुली है। नींद आजाने के कारण अब तबीयत बिलकुल साफ है॥

पिकी०। चलो यह बहुत अच्छा हुआ कि तुम्हारी तबीयत ठीक हो गई। मैं इसी वास्ते यहां आई हूं कि तुम्हें अपने साथ कपड़े वाले की दूकान पर ले चलूँ। कई नए ढङ्ग के कपड़े आये हैं तुम अपनी आंख से देख कर पसन्द कर लेना॥

गर्टरूड०। मगर........

पिकी०। (बात काट कर) अब अगर मगर कहने का समय नहीं है तुम जल्दी उठो और कपड़े पहिन कर तैयार हो जाओ। मैंने गाड़ी दर्वाजे पर रोक रक्खी है। उठो उठो जल्दी करो कपड़े पहिन कर तैयार हो मैं अभी आई॥

इतना कह कर पिकी कमरे के बाहर चली गई और गर्टरूड खड़ी होकर उसको मन ही मन बुरा भला कहने लगी। पाठक स्वयम् ही सोच सकते हैं कि इस वक्त का बाहर जाना उसे कैसा अखरा। वह डिक को कोठरी में बन्द छोड़ कर जा नहीं सकती थी और न अपना बाहर जाना ही रोक सकती थी। इसके सिवाय यह बात भी नहीं हो सकती थी कि पिकी की मौजूदगी में किसी तरह डिक को निकाल दे। खैर उसने यह सोच कर ढाढ़स किया कि जाती दफे ताली मार्था को देती जाऊँगी और उससे कह दूँगी कि डिक को मौका पा सब हाल समझाकर घर के बाहर कर दे॥

पिकी जब अपनी कोठरी में पहुंची तो टोपी उतारने पर उसे मालूम हुआ कि उसमें कीचड़ की दो तीन छीटायें पड़ी हुई हैं जिससे वह कुछ मैली हो रही है। जब वह दूसरी टोपी

लेने के लिये उस कोठड़ी के पास पहुंची जिसमें कपड़े रक्खे जाते थे तो दर्वाजे में ताला बन्द पाकर उसे बहुत ताज्जुब हुआ क्योंकि उस कोठरी में कभी ताला बन्द नहीं होता था। आखिर कुछ देर तक ताली ढूंढने और उसके न मिलने पर उसने मार्था को आवाज दी और जब वह आई तो उसने पूछा, "इस कोठरी में ताला किसने बन्द किया?"

मार्था को तो मालूम ही था कि इस कोठरी की ताली गर्टरूड के पास है मगर वह यह बात पिकी से कह नहीं सकती थी क्योंकि ऐसा होने से पिकी गर्टरूड से ताली मांगती और गर्टरूड रिचार्ड के खयाल से उसे चाभी कभी नहीं देती, इस लिये वह झूठ मूठ ही इधर उधर आले आलमारियों पर ताली ढूंढने लगी मगर उसने मिलना क्यों था?

आखिर पिकी ने खड़े खड़े घबरा कर पूछा, "इसमें ताला बन्द किसने किया?"

मार्था ने देखा कि अब बिना कुछ ढंग किये ठीक न होगा इससे उसने कुछ सोच बिचार के जवाब दिया, "जब मैं यहां झाड़ू दे रही थी उस वक्त भी दर्वाजे में ताला बंद था मगर ताली तालेही में लगी हुई थी॥"

पिकी०। तो फिर ताली कहां गई?

मार्था०। (चेहरा बना कर) मैं क्या जानूं चाभी कहां गई कुछ मैं निगल तो गई नहीं। यहीं कहीं गिर पड़ी होगी ढूंढती रही हूं॥

अब पिकी को कुछ शान्त होना पड़ा क्योंकि वह जानती थी कि अगर मार्था किसी कारण से नोकरी छोड़ देगी तो फिर उसके ऐसी मजदूरनी मिलनी मुश्किल होगी। वह ताली के

लिये कुछ देर और ठहरी और जब वह मिलती नजर नहीं आई तो मार्था से बोली, "खैर इस वक्त रहने दे फिर खोजियो। जा गर्टरूड को कपड़े पहिना॥"

मार्था तो यह चाहती ही थी। वह जल्दी गर्टरूड के कमरे में गई और उसे कपड़े पहिनाते २ सब हाल कह सुनाया। गर्टरूड ने उससे कहा, "मैं साथ जाती हूं तू उस कोठरी की ताली ले, रिचार्ड को सब हाल कह कर मकान के बाहर कर दीजियो।" इतना कह उसने अपने जेब से ताली निकाल मार्था के हाथ में दी मगर उसी समय पिकी उस कमरे में आई और मार्था की तरफ देख कर बोली, "जा तू भी कपड़े पहिन कर तैयार होजा हम लोगों के साथ चलना होगा॥"

अब गर्टरूड के बदन में काटो तो लहू नहीं। उसकी इस उम्मीद पर भी पानी पड़ गया। वह मार्था से कुछ कहा चाहती थी मगर पिकी ने मौका न दिया और मार्था कमरे के बाहर चली गई॥

थोड़ी देर बाद मार्था भी तैयार होकर आगई और तीनों आदमी मकान के बाहर आये। दरवाजेही पर गाड़ी खड़ी थी। गर्टरूडऔर पिकी गाड़ी में बैठ गईं। मार्था बैठा ही चाहती थी कि यकायक चौंक कर गर्टरूड से बोल उठी, "कैसी भारी गलती होगई! आपका रूमाल तो टेबुल ही पर छूट गया!!"

गर्टरूडने भी जेब में हाथ डाल कर कहा, "हां, हां, रूमाल तो हई नहीं, तू कैसी भुलक्कड़ है, मैंने चिता दिया था कि रूमाल लेती आइयो फिर भी भूल गई। जा जल्दी लेकर आ, जल्दी कर॥"

पिकी ने कहा, "बिना रूमाल के क्या काम नहीं चल सकता?" मगर गर्टरूड क्यों मानने लगी थी? उसने मार्था को मकान के अन्दर भेजा और उसके लौटने की राह देखने लगी। मार्था थोड़ी ही देर में रूमाल ले कर लौट आई और उसके चेहरे की तरफ देखने से गर्टरूड को मालूम हो गया कि रिचार्ड मकान के बाहर हो गया॥

सोलहवां बयान।

जब डिक को गर्टरूड ने कोठड़ी में बन्द कर दिया तो वह बहुत ही घबड़ाया और इसका सबब सोचने लगा मगर कुछ समझ में न आया। कभी कभी उसको यह खयाल होता कि शायद गर्टरूड ने उसे धोखा दिया मगर यह बात उसके दिल में बैठती न थी। आखिर जब उसे बैठे बैठे बहुत देर हो गई और कोई दरवाजा खोलने न आया तो वह यह सोचकर दर्वाज़े के पास आया कि पिस्तौल की गोली से ताला तोड़कर बाहर निकले मगर उसे ऐसा करने की जरूरत न पड़ी क्योंकि उसी समय मार्था ने आकर दर्वाजा खोल दिया। डिक ने उससे अपने कोठरी में बन्द किये जाने का सबब पूछा और उसने जल्दी से सब हाल उसे सुना कर एक पिछले दरवाजे से मकान के बाहर कर दिया। जाती समय डिक ने एक अशर्फी मार्था के हाथ में रख दी जिसे उसने कुछ नाकर नूकर के बाद अपनी जेब में रख लिया॥

अपने डेरे पर लौट कर उसने गर्टरूड को एक चीठी लिखी

मगर दो दिन तक राह देखने पर भी उसे उसका कोई जवाब नहीं मिला जिससे उसे कुछ ताज्जुब हुआ। एक जगह बैठे बैठे उसे बड़ी घबराहट मालूम हुई और वह घूमने के लिये बाहर निकलने की इच्छा करने लगा। यद्यपि ऐसा करने में बड़ा डर था मगर उसकी प्रकृति ही ऐसी थी कि वह ऐसी बातों का खयाल नहीं करता था। आखिर उससे न रहा गया और वह शाम के वक्त एक बगीचे की तरफ चला जहां किसी तरह का जलसा था। अपनी सूरत उसने बदल ली थी और कपड़े भी अमीरों की तरह पहिने हुए था तथा एक सोने की घड़ी भी लगाई हुई थी जिसे उसने कुछ दिन हुए एक अमीर से छीना था॥

बाग के पास पहुंचने पर सब से पहिले जिस चीज पर उस की नजर पड़ी वह एक नोटिस थी जिसमें मोटे मोटे हरफों में डिक का हुलिया तथा उसके पकड़ने वालों को इनाम वगैरह मिलने की बात लिखी हुई थी। नोटिस के नीचे एक आदमी खड़ा उसे देख रहा था और जब डिक उस आदमी से कुछ पूछने के लिये उसके पास गया तो उसे यह देख बड़ा ही ताज्जुब हुआ कि वह आदमी स्वयम् जेरी ही था॥

जेरी को देखते ही एक दफे तो डिक झिझका मगर फिर सम्हल कर आगे बढ़ा गया और उसके बगल से होता हुआ बाग के अन्दर चला गया। जेरी ने इसको देखा तो जरूर मगर पहिचान न सका और बात की बात में डिक बाग के अन्दर घुस कर भीड़ में मिल गया॥

बाग के अन्दर पहुंच कर डिक इधर उधर घूमने फिरने लगा। उसके दो तीन साथी भी उसे यहां दिखाई दे रहे थे

मगर डिक ने इस समय उनसे मिलना उचित न समझा। वह इससे पहिले कभी इस बाग में नहीं आया था इससे इस समय बड़े शौक के साथ घूम फिर कर अपना दिल बहलाने लगा॥

घूमते घूमते डिक एक ऐसी जगह पहुंचा जहां कई तरह के नकली कुंज बने हुए थे और फूल पत्तों से अच्छी तरह ढँके रहने के कारण बहुत ही सुहावने मालूम होते थे। डिक भी एक कुंज के अन्दर घुस गया। अन्दर बैठने के लिये जगह बनी हुई थी जहां डिक बैठ गया और फिर कुछ सुस्ताने के इरादे से लेट रहा॥

उस कुंज के बगल में एक दूसरा कुंज था जिसमें इस समय एक मर्द और दो औरतें बैठी हुई बातें कर रही थीं। नजदीक होने के कारण उनकी बातें साफ सुनाई देती थीं इससे डिक का ध्यान भी उसी तरफ चला गया और वह उन की बातें सुनने लगा॥

एक औरत ने कहा, "सुना है कि डिक टर्पिन आज कल इसी शहर में आया हुआ है॥"

मर्द०। सुना तो मैंने भी है मगर मुझे विश्वास नहीं होता क्योंकि अभी कल ही मेरी मुलाकात पुलिस के अफसर जेरी जर्विस से हुई है उन्होंने मुझसे इस विषय में कुछ नहीं कहा॥

दूसरी औरत०। सुना था कि जेरी उसकी खबर पाकर "एपिङ्ग" गए थे फिर क्या हुआ?

अब डिक कुछ गौर से सुनने लगा क्योंकि उसे यह जानने की बड़ी उत्कंठा हो रही थी कि जेरी ने अपने कीचड़ से स्नान करने का हाल लोगों पर जाहिर किया है या नहीं॥

मर्द०। हां वह एपिङ्ग गए थे। वहां जाने और खोज करने पर मालूम हुआ कि डिक वहां नहीं है हां एक आदमी से इतना पता मिला कि वह उसी तरफ़ एक दिन दिखाई दिया था मगर इसके बाद फिर कहां गया सो मालूम नहीं हुआ इससे वह लौट आये॥

डिक को यह जान कर ताज्जुब हुआ कि जेरी ने असल हाल बहुत कुछ घटा कर लोगों को सुनाया है मगर इतने ही में उसे उस पहिली औरत की आवाज सुनाई दी और वह फिर गौर से सुनने लगा॥

पहिली औरत०। मगर मैं ने तो कुछ और ही बात सुनी है॥

मर्द०। वह क्या?

औरत०। मैं ने सुना है कि जेरी और उनके साथियों को एक आदमी डिक को पकड़ा देने की लालच देकर घने जङ्गल में ले गया और वहां सभों को धोखा देकर एक दलदल में फँसा दिया जिसमें से बड़ी मुश्किल से उन सभों की जान बची॥

मर्द ने इस बात का क्या जवाब दिया सो डिक सुन न सका क्योंकि उसी समय और भी कई आदमी उसी कुञ्ज में चले आये जिसमें डिक था और उनकी बातचीत के कारण उस मर्द की आवाज सुनाई न दी। डिक भी फिर वहां न ठहरा और उन दोनों औरतों और उस मर्द की शकल एक झलक देखने के इरादे से उस कुञ्ज की तरफ चला जिसमें से उनके बातचीत की आवाज आती मालूम होती थी॥

बाहर ही से डिक ने देख लिया कि वह आदमी जो उन दोनों औरतों से बातें कर रहा था अब वहां नहीं है। डिक ने

एक सरसरी निगाह से उन दोनों औरतों को देख लिया जो एक टेबुल के पास बैठी हुई बातें कर रही थीं और इसके बाद वह फिर इधर उधर घूमने लगा। अब शाम हो गई थी बल्कि अंधेरा हो चला था और लम्प बाले जा रहे थे। बहुत से आदमी जो इस बाग में थे इस समय बाग के बीच वाले एक बड़े चौतरे की तरफ जा रहे थे। डिक भी सभों के साथ उसी तरफ चला मगर वहां जाने पर उसे मालूम हुआ कि यहां लेकचर होगा। डिक को लेकचरों से कुछ शौक न था इस लिये वह वहां न ठहरा और फिर उसी तरफ चला जहां से उसने ऊपर लिखी बातें सुनी थीं, शायद उसने यह सोचा हो कि इतनी देर में वह मर्द वहां आ गया हो जो उन औरतों से बातें कर रहा था। यह ठीक२ नहीं कहा जा सकता कि डिक को उस आदमी के देखने की इतनी क्यों चाह हो गई थी? शायद इसका सबब यह हो कि वह अपने को जेरी का दोस्त बताता था॥

डिक का खयाल ठीक था। इस समय वह आदमी भी वहां मौजूद था और उन औरतों में तथा उसमें बातचीत हो रही थी। वह कोई बहुत ही अमीर आदमी मालूम होता था। उस की पोशाक बहुत कीमती थी और हाथ की उँगलियों में कई अँगूठियें भी थीं जो कीमती मालूम होती थीं। ऐसा अच्छा शिकार देख कर डिक के मुँह में पानी भर आया और वह उसपर हाथ साफ करने की फिक्र में पड़ गया। यकायक उसकी निगाह एक छड़ी पर पड़ी जो कि उस आदमी के पास ही में पड़ी हुई थी और उसी की मालूम होती थी। छड़ी की मूठ सोने की थी और उसमें कई बड़े बड़े हीरे जड़े हुए थे जिस से वह कुछ भद्दी

तो मालूम होती थी मगर डिक ने पहिलीही निगाह में जान लिया कि बहुत कीमती है ॥

छड़ी देख डिक की लालच और भी बढ़ गई और उसने बिना किसी तरह का खयाल किये जेब में से पिस्तौल निकाल कर हाथ में लेली और इसके बाद वह कुञ्ज के अन्दर घुस गया। वे सब अपनी बातचीत में इतने डूबे हुए थे कि उन्हें डिक का आना जरा भी मालूम न हुआ और वह बेखटके उनके पास पहुंच गया। पास पहुंच कर उसने एक दफे खखारा जिससे चौंक कर उस आदमी ने पीछे की तरफ़ घूम कर देखा, इसके साथ ही डिक ने अपनी पिस्तौल उस आदमी के माथे से लगा कर कहा, "कृपा कर अपनी वह छड़ी आप मुझे दे दीजिये नहीं तो आपके लिये भला न होगा ॥"

यह सुनते ही वह आदमी बहुत घबड़ा गया। पिस्तौल का ठंढा लोहा उसके माथे से लगते ही वह कांप उठा और अपनी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया। डिक ने हाथ बढ़ाकर वह छड़ी उठा ली और उसके बाद उसको अपनी उँगली में से एक अँगूठी भी उतार कर दे देने को कहा जो सब से ज्यादे कीमती मालूम होती थी। उस आदमी ने बगैर उज्र वह अँगूठी उतार कर डिक को दे दी और डिक ने उसे अपने जेब में रख लिया। इसके बाद डिक ने चिढ़ाने की नीयत से बहुत ही झुक कर उसे सलाम किया और कुञ्ज के बाहर निकल आया जहां से वह उस तरफ भागा जिधर भीड़भाड़ कुछ कम थी और अभी तक लम्प न बाले जाने के कारण अँधेरा था ॥

डिक के बाहर जाते ही उस आदमी की अक्ल कुछ ठिकाने

हुई और वह कुञ्ज के बाहर निकल जोर जोर से "चोर! चोर!!" पुकारने लगा जिससे थोड़ीही देर में वहां भीड़ इकट्ठी होगई। जब उसने देखा कि अब भीड़ होगई है और कोई डर की बात नहीं है तो फिर उसने जोर से चिल्ला कर कहा, "मेरी छड़ी और अँगूठी लेकर भागा है जो कोई उसे पकड़ेगा उसे सौ रुपया इनाम दिया जायगा॥"

इनाम की लालच से बहुत से आदमी इधर उधर दौड़ने लगे। इतनेही में एक पुलिस का अफसर भी गुल शोर सुनकर वहां आ पहुंचा और उस आदमी से तरह तरह के सवाल करने लगा जिसको छड़ी और अँगूठी गई थी। यह हजरत वास्तव में हमारे पुराने साथी जान रंटन थे और उन दोनों औरतों में से एक उनकी नई व्याही हुई स्त्री थी॥

रंटन ने उस आदमी का पूरा पूरा हुलिया पुलिस के अफसर से कह दिया जिसे उसने उसी समय जोर से चिल्लाकर और सभों को भी सुना दिया। साथ ही उसने बाग के सब फाटक बन्द करवा दिये जिससे चोर का बाहर निकलना उसकी समझ में एक प्रकार से असम्भव हो गया॥

थोड़ीही देर में चोर चोर की आवाज चारो तरफ फैल गई और लोग इधर उधर पागलों की तरह दौड़ने लगे क्योंकि रंटन ने इनाम एक सौ से बढ़ाकर अब दो सौ कर दिया था, मगर इस बात का किसी को पता भी न था कि चोर भागा किस तरफ है॥

सत्रहवां बयान।

डिक मुश्किल से पचास कदम गया होगा कि पीछे से चोर चोर की आवाज आने लगी और थोड़ीही देर में वह आवाज चारो तरफ फैल गई। पहिले तो डिक फाटक की तरफ गया मगर उसको बन्द पाकर वह कुछ घबरा गया। आखिर हिम्मत बाँधकर वह फिर उस तरफ लौटा जिधर अँधेरा था॥

डिक थोड़ीही दूर गया होगया कि किसी आदमी ने उस को भागते हुए देख लिया और यकायक "यहां है! यहां है!!" कहकर चिल्ला उठा। उसके चिल्लाते ही बहुत से आदमी जो अभी तक बेमतलब इधर से उधर दौड़ रहे थे अब उस तरफ लपके जिधर डिक था। डिक ने यह देख लुक छिप कर बचने का खयाल छोड़ दिया और अपने पैरों पर भरोसा कर तेजी के साथ दौड़ने लगा। थोड़ी ही देर बाद वह बाग की चारदीवारी के पास जा पहुंचा मगर वह इतनी ऊंची थी कि उसको टपकर या और किसी तरह से पार कर जाना असम्भव था॥

अगर डिक पहिले कभी इस बाग में आ चुका होता तो उसको इतनी घबराहट न होती जितनी अब उसको हुई, क्योंकि वह पहिली ही दफे इस बाग में आया था और यह बात नहीं जानता था कि बाहर निकलने में किस तरफ से सुबीता होगा। बाग की चारदीवारी इतनी ऊंची देख पहिले तो वह बहुतही घबराया मगर थोड़ी ही देर में उसने अपने को सम्हाला और अपने पीछा करने वालोंको नजदीक आगया हुआ पाकर फिर दीवार के साथही साथ तेजी से एक तरफ

को दौड़ना शुरू किया। यहां पर लम्पों की रोशनी न होने और घने पेड़ों की छाया रहने के कारण बहुत अँधेरा था मगर डिक बराबर दौड़ता ही गया॥

कुछ देर तक दौड़ते जाने के बाद डिक ऐसी जगह पहुंचा जहां की दीवार बहुत ही टूटी फूटी और नीची थी। उसने इसी जगह से बाग के बाहर निकल जाने का इरादा किया और बिना कुछ सोचे विचारे एक फलांग में दीवार पार कर उस पार कूद गया॥

दीवारके उसपार एक बड़ा सा गड़हा था जिसमें इस समय कमर भर से ज्यादे पानी था। डिक को यह बात नहीं मालूम थी और न अँधेरे के सबब से वह गड़हा ही उसको दिखाई दिया था अस्तु वह दीवार के इस पार आकर उस गड़हे में गिर पड़ा और उसके सब कपड़े पानी से तर हो गये॥

किसी तरह से डिक ने अपने को गड़हे से बाहर निकाला और कुछ दूर हटकर एक पेड़ की आड़ में खड़ा हो गया। उस का पीछा करने वाले भी थोड़ी ही देर में वहां आ पहुंचे और धम्माकों की आवाज ने डिक को बता दिया कि वे भी उसी तरह पानी में गिर रहे हैं। डिक को यह जान ऐसी हँसी मालूम पड़ी कि वह अपने को रोक न सका और खिलखिला कर हँस पड़ा॥

डिक ने थोड़ी ही देर में अपने को सम्हाला और गीले ही कपड़ों से एक तरफ को भागना शुरू किया। अब उसको अपना पीछा करने वालों की कुछ आहट नहीं मालूम होती थी क्यों-कि पानी में गोता लगा लेने बाद लोगों की यह हिम्मत नहीं रह

अट्ठारहवां बयान।

लन्दन से चल कर डिक सीधा एपिङ्ग पहुंचा जहां वह अपने दोस्त टामी को बीमार छोड़ आया था। सब से पहिले उसकी मुलाकात लीना से हुई जो जिप्सियों के खेमे से कुछ दूर सड़क के किनारे फूल तोड़ रही थी। वह डिक को देखकर बहुत खुश हुई मगर यकायक बोल उठी, "अबकी दफे तो तुम बेतरह फँसे थे?"

सुनतेही डिक चिहुंक कर बोल उठा, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" मगर इसके साथही अपनी बात काटकर फिर बोला, "तुम किस बात का जिक्र कर रही हो? मुझ को कुछ भी खबर नहीं!!"

लीना ने हँसकर कहा, "सो तो तुम्हारे यह कहने से ही मालूम हो गया कि "तुम्हें कैसे मालूम हुआ?" खैर जो तुम उस बात को छिपाया चाहते हो तो मैं भी फिर उसका जिक्र नहीं किया चाहती और न यही कहा चाहती हूं कि किस तरह तुम्हारा कई आदमियों ने पीछा किया और तुम्हें उनके सबब से पानी में कूदना पड़ा या फिर किस बूढ़े के यहां तुमने छिप कर अपनी जान बचाई। मुझे भला इन बातों के कहने से क्या फायदा है॥"

यह सुन डिक समझ गया कि लीना को सब बातों की खबर है अस्तु उसने कुछ ठहर कर जवाब दिया, "हां तुम्हारा कहना कुछ कुछ तो बेशक ठीक है। भला तुम्हें इन सब बातों की खबर क्योंकर मिली?"

लीना०। तुम यह बात नहीं जान सकते और न मैं अभी तुम्हें बतायाही चाहती हूं॥

डिक०। "अभी नहीं बताया चाहती हूं।"से क्या मतलब? क्या तुम कुछ दिनों के बाद मुझे यह बतला दोगी कि तुम्हें इन सब बातों की खबर क्योंकर लग जाती है?

लीना ने डिक की इस बात का कुछ जवाब न दिया और यह कहती हुई कि "तुम जाकर टामी से मुलाकात करो वह तुमसे मिलने के लिये बहुत घबड़ा रहा है।" एक तरफ को जाने लगी। डिक उससे और भी बहुत कुछ पूछा चाहता था मगर यकायक उसे किसी आदमी के पाँव की आहट सुनाई पड़ी और पीछे घूमकर देखने पर उसने पीटर को अपनी तरफ आते पाया। पीटर के सामने लीना से कुछ पूछना उसने अच्छा न समझा इसलिये उसने लीना को तो जाने दिया और आप आगे बढ़कर पीटर से बोला, "हैं! तुम अभी तक यहीं हो?"

पीटर०। हां मैं यहीं हूं मगर तुम अपना हाल तो कहो' यहां से जाने बाद क्या क्या हुआ?

इसके जवाब में डिक ने जो कुछ हुआ था सब पीटर से कहा जिसे वह बड़े गौर से सुनता रहा। जब डिक ने कहना बन्द किया तो वह बोला, "तो यह पिकी ही तुम्हारे रास्ते का कांटा है?"

डिक०। हां उसी के सबब से मेरी दाल गलती नजर नहीं आती॥

पीटर०। तो उसे किसी तरह हटाना चाहिये॥

डिक०। यह तो मुश्किल ही मालूम होता है॥

पीटर०। क्यों मुश्किल क्या है? भला गर्टरूड यह चाहती होगी कि पिकी उसी के घर में रहकर और उसी का रुपया खा कर उसी के ऊपर हुकूमत करे? नहीं कभी नहीं, यह तो खुद यह चाहती होगी कि पिकी किसी तरह से टले। इसके सिवाय तुम इतना करनेही क्यों जाओ, खुद गर्टरूड को यहां बुलालो॥

डिक०। (हँसकर) खूब कासे! भला गर्टरूड यहां क्यों आने लगी? उसे कौन गरज पड़ी है कि मेरे लिये जङ्गल जङ्गल मारी मारी फिरे? यह बिल्कुल नामुमकिन है॥

पीटर०। वाह! डिक टर्पिन जिसके नाम से लोग कांपते हैं ऐसे सहज काम को कहे कि नामुमकिन है!!

डिक०। नहीं वह बात तो नहीं है मगर मुश्किल यह है कि मुझे रिचार्ड बने रहकर यह सब काम करना पड़ेगा। अगर कहीं गर्टरूड को यह मालूम हो गया कि मैं डाकू हूं तब तो वह मुझसे बिल्कुल ही बदल जायगी, कभी भूल कर भी मेरा नाम न लेगी बल्कि ताज्जुब नहीं कि मुझे पकड़ा देने की कोशिश करे॥

पीटर०। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या सोच रहे हो? भला गर्टरूड को इन सब बातों की खबर क्यों होने लगी?

डिक०। अभी कहते हो खबर क्यों होने लगी! भला यह भी कभी हो सकता है कि गर्टरूड मेरे साथ अकेली कहीं बाहर जाना मंजूर करे और सो भी इस एपिङ्ग के जङ्गल में और जिप्सियों के खेमों के पास?

पीटर०। क्यों इसमें बात ही क्या है?

डिक०। अच्छी बात है अगर तुम्हारी समझ में यह सहज

काम है तो तुम कोशिश करो। अगर वह अपनी मर्जी से यहां आजाय तो जो कहो मैं देने को तैयार हूं॥

पीटर०। अच्छी बात है मैं कोशिश करूंगा। अगर वह अपनी मर्जी से यहां आजाय तो मैं एक हजार रुपये लूंगा॥

डिक०। एक हजार नहीं मैं दो हजार देने को तैयार हूं मगर हो भी तो सही॥

पीटर०। अच्छा मैं आजही इस फिक्र में रवाना होता हूं॥

इतना कह कर पीटर वहां से चला गया और डिक भी टामी से मिलने उसके खेमे की तरफ चला॥

उन्नीसवां बयान॥

डिक को देख टामी बहुत ही खुश हुआ। उसकी तबीयत इस बीच में बहुत कुछ सम्हल गई थी और वह उठ कर चलने फिरने के लायक हो गया था। उसने डिक को अपने पास बैठा लिया और बड़ी देर तक उससे तरह तरह की बातें पूछता रहा॥ डिक ने भी अपना हाल उसको पूरा पूरा सुना दिया मगर गर्टरूड के बारे में बहुत कमबेश करके॥

बात ही बात में डिक ने इशारे से यह बात कहनी चाही कि शायद जेरी का यहां (एपिङ्ग में) उसको खोजते हुए आना कहीं मोल के पता देने से न हो मगर टामी को इस बात पर बिल्कुल विश्वास ही न था और वह इसके जिक्र से भी चिढ़ता था। लाचार डिक ने भी कुछ ज्यादा जोर न दिया और मन ही मन उस समय का इन्तजार करने लगा जब वह इस बात को

पूरी तरह से साबित कर सके क्योंकि अब उसे इस बात का निश्चय हो चुका था कि मौल के मन में कुछ बुराई है चाहे इस बात का उसे कोई सबूत न मिला हो॥

पांच छः दिन के बाद टामी में इतनी ताकत आगई कि वह घोड़े पर सवार हो सके। यह जानते ही उसने अपने घर जाने का विचार किया और डिक से अपनी इच्छा बताई। डिक ने उसको बहुत समझाया कि अभी वह कमजोर है और घोड़े की पीठ पर लम्बा सफर करने लायक नहीं है मगर उसने एक न सुनी और घर जाने के लिये जिद्द करने लगा। जब डिक ने देखा कि समझाने से टामी नहीं मानता तो लाचार उसने भी उसके साथ जाने का निश्चय कर लिया॥

दूसरे दिन सवेरे ही दोनों ने चलने की तैयारी की और आठ बजते बजते वे जिप्सियों से विदा होकर अपने घोड़ों पर सवार हो टामी के घर की तरफ चले। चलने से पहिले टामी ने पीटर से एक दफे और मुलाकात करके इस बात का निश्चय कर लिया कि उसने जो छः सात रोज पहिले गर्टरूड को ले आने के बारे में बातचीत की थी वह भूला तो नहीं क्योंकि डिक को पीटर के पांच छः रोज रुक जाने से यह खयाल हो गया कि कहीं वह उस बात को भूल न गया हो॥

डिक ने चलते समय लीना से भी मुलाकात करना चाहा था मगर ताज्जुब की बात थी कि वह जिप्सियों के खेमे में कहीं दिखाई न दी और डिक को उससे मुलाकात करने का खयाल छोड़ देना पड़ा॥

डिक की घोड़ी बेस इतने दिनों तक बेकार रहने के कारण

बड़ी ही चंचल हो रही थी और डिक को उसकी चाल पर इतनी खुशी हो रही थी कि अगर कोई उसको उस घोड़ी का एक लाख रुपया भी देता तो कभी वह अपनी घोड़ी बेचने पर तैयार न होता ॥

ठीक समय पर दोनों टामी के घर पर पहुंचे। मौल घर पर ही थी। उसने टामी और डिक को देखकर इतनी खुशी जाहिर की कि टामी की आंखों में पानी आगया और उसने डिक की तरफ देखकर इशारे ही में कहा, "देखो यह हमको कितना चाहती है और तुम इसी पर शक करते हो !!"

डिक ने टामी के इस इशारे का कुछ जवाब न दिया और कुछ गौर में पड़ गया। कदाचित ऐसाही हो कि मौल सच्ची हो और उसका उसके ऊपर शक करना गलत हो !! डिक कुछ नि-श्चय न कर सका मगर उसने यह सोच लिया कि बहुत जल्द इस बात का वारा न्यारा कर डालना चाहिये कि मौल वास्तव में कैसी है ?

दूसरे दिन सबेरे ही दोनों आदमी घोड़ों पर सवार हो हवा खाने को निकले। ठंढी २ हवा चल रही थी और समय बड़ाही सुहावना मालूम होता था इस लिये टामी ने निश्चय कर लिया कि कहीं दूर निकल चले। अस्तु यह सोचकर चलते हुए उसने मौल से कहा, "हम लोग टहलने जाते हैं। लौटने में देर होगी सो तुम हमारी राह न देखना हम लोग कहीं किसी सराय मे भोजन कर लेंगे।" और इसके बाद वह डिकके साथ साथ चल निकला ॥

इन दोनों को गये मुश्किल से आधा घंटा हुआ होगा कि

मैाल भी घर के बाहर निकली और एक खेत की तरफ चली जहां कई आदमी काम कर रहे थे। उसने एक आदमी के हाथ में कुछ पैसे और एक चीठी दी और उसे चीठी को जेरी को दे आने को कहा जिसका पता उसे मालूम था ॥

दोही घंटे के बाद जेरी उस जगह आ पहुंचा। उसके साथ चार और आदमी भी थे जो देखने में बड़े मजबूत और ताकत-वर मालूम होते थे। जेरी ने उन सभों को टामी के मकान के दरवाजे पर छोड़ दिया और आप अन्दर जाकर मैाल से कुछ बातचीत करने लगा जिससे अब इस बात में कोई शक न रह गया कि डिक ने जो मैाल के ऊपर शक किया था वह वाजिब था ॥

किसी तरह से जेरी को यह मालूम होगया था कि टामी इस गांव में भले आदमियों की तरह रहता है और वहीं कभी कभी डिक भी उससे मुलाकात करने आता है। मगर यह खबर उसको तब लगी जब टामी बीमार होकर जिप्सियों के साथ था और इसी सबब से इस बात के मालूम होजाने पर भी वह टामी को पकड़ न सका था ॥

जब जेरी को इस बात का निश्चय हो गया कि टामी यहां रहता है तो उसने मैाल से जान पहिचान बढ़ाना शुरू किया। थोड़े ही दिनों में उसे मालूम होगया कि मैाल बड़ी लालची है और थोड़े ही रुपये की लालच से वह सब भेद खोल देगी अस्तु उसने मैाल को कुछ रुपये दे दिलाकर अपने बस में कर लिया और इस बात का वादा करा लिया कि ज्योंही डिक या टामी उस जगह आवेंगे वह उसको खबर देगी। उसी वादे के मुता-

डिक आज मौल ने चीठी भेजकर जेरी को बुलवाया और जब वह आगया तो उससे सब हाल कहा तथा उस सराय का नाम भी बता दिया जहां टामी टिकने को कह गया था॥

इससे पहिले टामी जब एपिङ्ग में था और डिक मौल से मिलने यहां आया था उस समय भी मौल ने जेरीको सब हाल बताकर एपिङ्ग भेजा था मगर जेरी को वहां डिक की चालाकी के कारण बहुत तकलीफ उठानी और बैरंग लौटना पड़ा था इससे उसने यह निश्चय किया कि अब की दफे ऐसे इन्तजाम के साथ जाय कि उन दोनों के पकड़ने में कोई शक न रहे। यह सोच उसने मौल को भी अपने साथ चलने को कहा और उस की नाकरनूकर पर ध्यान न दे उसे अपने साथ ले मकान के बाहर आया जहां अपने साथियों को छोड़ गया था॥

अपने साथियों और मौल के साथ जेरी थोड़ी ही देर में उस सराय के पास जा पहुंचा जहां डिक और टामी थे। जेरी ने मौल को तो अपने साथियों के साथ सराय से थोड़ी दूर पर खड़ा कर दिया और आप अकेले जाकर सराय के मालिक से मिला। थोड़ी ही देर की बात चीत में उसे मालूम होगया कि डिक और टामी अभी तक वहीं हैं मगर अब रवाना हुआ ही चाहते हैं॥

यह जानते ही जेरी ने सराय के मालिक से यह कहकर कि "वे दोनों डाकू हैं और उनको पकड़ने के लिये पुलिस बहुत दिनों से हैरान है।" पांच छः आदमी और लिये और उनको तथा अपने साथियों को ऐसे ढंग से सराय के चारों तरफ फैला दिया कि किसी का सराय के बाहर निकल जाना असम्भव हो

गया। मैाल को उसने ऐसी जगह खड़ा कर दिया जहां से वह सराय में से निकलने वालों को बखूबी देख और पहिचान सके और आप घोड़े पर सवार होकर डिक और टामी के बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा॥

बीसवां बयान।

डिक या टामी दोनों में से किसी को भी इस बात का खयाल न था कि सराय के बाहर उन को पकड़ने के लिये कैसे जाल फैलाये जा रहे हैं। जब जेरी सराय के मालिक से बात-चीत कर रहा था उस समय वे दोनों बड़ी खुशी के साथ अपने कपड़े पहिन कर चलने की तैयारी कर रहे थे। सराय का मालिक तो उन का दुश्मन बन ही बैठा था क्योंकि जेरी ने उस को भी इनाम को लालच दे दी थी मगर उस सराय का एक नौकर जिस को इन सब बातों की खबर थी टामी का दोस्त था और उसने टामी को अलग बुलाकर धीरे से सब हाल कहा। सुनते ही टामी घबराया हुआ डिक के पास आया और उसने वह सब हाल डिक से कहा जिसे सुनते ही डिक बोल उठा, "बेशक यह काम मैाल का है॥"

डिक की यह बात सुन टामी कुछ देर के लिये चुप होगया अब इसे भी इस बात का विश्वास होने लगा कि डिक का खयाल ठीक है। अभी तक उसके दिल में कभी एक मिनट के लिये भी यह बात नहीं आई थी कि मैाल उसके साथ दगा करेगी मगर अब जो उसे यह मालूम हुआ बल्कि कहना चाहिये कि

इस बात का निश्चय हो गया कि मौल विश्वासघातिनी है तो उसके दिल में बड़ी चोट लगी। वह कुछ देर तक सिर झुकाये कुछ सोचता रहा और इसके बाद बोला, "हां डिक! अब तो मुझे भी यही मालूम होता है कि यह सब मौल ही का किया हुआ फसाद है, अफसोस! मुझे उससे इस बात की आशा न थी और न मैंने कभी यह सोचा था कि एक दिन ऐसा भी आवेगा!!"

डिकने इस बारे में और कुछ कहकर टामी का दिल दुखाना ठीक न समझा और वह इस फिक्र में लगा कि उसकी और टामी की जान किस तरह से बचेगी। इस सराय में से सिवाय एक सदर दर्वाजे के और कोई रास्ता ऐसा न था जिस रास्ते से कोई घोड़े पर सवार होकर बाहर निकल जा सके और बिना घोड़ों के सराय के बाहर निकलना इस समय बुद्धिमानी के बाहर बात थी क्योंकि अगर उनकी जान इस समय कोई बचा सकता था तो उनके घोड़े ही। हां एक रास्ता इस सराय में से अस्तबल में जानेका जरूर था जिसमें इस समय डिक और टामी के घोड़े बँधे थे और जो सराय के साथ ही सटा हुआ था। अस्तबल में जाकर वे लोग उसके पिछवाड़े वाले रास्ते से निकल जा सकते थे और यह सोच कर अन्त में डिक ने इस समय उसी रास्ते से बाहर जाना निश्चय किया॥

जब डिक अपने और टामी के घोड़े को जीन वगैरह कसकर तैयार कर चुका तो टामी के पास आया और बोला, "अब हमलोगों को यहांसे निकल चलने की कोशिश करनी चाहिये। मैंने घोड़े कसकर तैयार कर लिये हैं। हमलोग उस अस्तबल

वाले पिछले दर्वाजे की राह निकल चलेंगे॥"

इसके जवाब में टामी ने शिर हिला कर कहा, "भाई! तुम जाओ और मुझे यहीं मेरी किस्मत पर छोड़ दो! क्यों मेरे लिये अपनी जान आफत में डालते हो? तुम अगर अकेले रहोगे तो निकल जा सकोगे और अगर मैं तुम्हारे साथ रहूंगा तो अपने साथ तुम्हें भी डुबा दूंगा॥"

डिक को यह सुनकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ क्योंकि उसने इससे पहिले टामी को कभी इस तरह से हिम्मत हारते नहीं देखा था, अस्तु उसने कहा, "क्यों क्यों ऐसा क्यों? तुम इस तरह हिम्मत क्यों हारते हो? भला इसमें घबड़ाने की कौन सी बात है? इससे पहिले कितनी दफे हमलोग इससे बड़ी बड़ी आफतों में पड़ चुके हैं और फिर भी अछूते बच गये हैं, तब तुम इतना घबड़ाये क्यों जाते हो?"

टामी०। हां तुम्हारा कहना ठीक है मगर मुझे निश्चय हो गया है कि इस बार मैं जरूर पकड़ जाऊंगा। एक तो मैं पहिले ही से कमजोर हूं दूसरे मोल्ड के इस बर्ताव ने तो मेरी तबीयत बिल्कुल ही तोड़ दी है॥

डिक ने बहुत कुछ समझा बुझा कर उसे उठाया और अपने साथ लेकर सराय के पीछे अस्तबल की तरफ चला। वहां पहुंच कर दोनों आदमी घोड़ों पर सवार हुए और पिछवाड़े वाले उस दर्वाजे के पास पहुंचे जिस से डिक बाहर निकला चाहता था। डिक ने पहिले से एक आदमी को कुछ दे दिलाकर फाटक के पास खड़ा कर दिया था और उसे समझा दिया था कि वह दोनों को देखते ही फाटक खोल दे, अस्तु इस समय ज्योंही

छिक और टामी दर्वाजे के पास पहुंचे उस आदमी ने फुर्ती से फाटक खोल दिया और दोनों आदमी घोड़े दौड़ा कर बाहर निकले। मगर अफसोस! टामी की खुशकिस्मती ने उसका साथ बिलकुलही छोड़ दिया! फाटक से बाहर निकलते ही उसके घोड़े का पैर एक पत्थर से टकराया और वह एकदम आगे को झुक पड़ा। टामी भी अपने को बचा न सका और लुढ़क कर घोड़े के नीचे आ रहा॥

इक्कीसवां बयान॥

जेरी ने पहिले ही से यह सोच लिया था कि दोनों डाकू अपने भरसक अस्तबल वाले फाटक सेही निकलने की कोशिश करेंगे क्योंकि उसी रास्ते से उनके घोड़े पर सवार भागने का सुभीता होगा। यह सोचकर उसने ज्यादा आदमियों को इसी फाटक के पास बुला लिया था और आप भी वहीं आ गया था। अपने आदमियों को उसने समझा दिया था कि वे जहां तक हो सके उन दोनों को जीता ही पकड़ने की कोशिश करें और हथियार या पिस्तौल न चलावें जब तक कि वह ऐसा करने का हुक्म न दे॥

जैसेही टामी घोड़े से गिरा और छिक उसको उठाने की नीयत से रुका उसी समय जेरी और उसके साथी उन दोनों पर आ पड़े और उनको चारों तरफ से घेर लिया। टामी अभी मुश्किल से जमीन पर से उठा होगा कि जेरी ने पास आकर उसके दोनों हाथ पकड़ लिये और घूम कर उसके पीछे की तरफ

जा उसे फिर जमीन पर गिरा देने की कोशिश करने लगा। उसी समय एक तरफ से आवाज आई, "जिसको जेरी पकड़े हुए है वह तो टामी है और दूसरा जो अभी तक घोड़े पर सवार है डिक है!!"

यह सुनतेही टामी ने सिर उठाकर उस तरफ देखा जिधर से आवाज आई थी। मैाल एक पेड़ के नीचे खड़ी हुई थी और उसी ने यह कहा था। मैाल को देखते ही टामी की आंखों में खून उतर आया और वह बड़े ही गुस्से से अपने के जेरी की पकड़ से छुड़ाने की कोशिश करने लगा॥

उधर डिक भी खाली न था, उसे भी आठ दस आदमियों ने घेरा हुआ था मगर इतनी कुशल थी कि वह घोड़े पर था और उसको पकड़ने की कोशिश करने वाले पैदल, मगर यह होने पर भी उन सभों से डिक इस तरह घिरा हुआ था कि वह भाग नहीं सकता था। जो लोग उसको पकड़ने की कोशिश कर रहे थे उनके हाथ में बड़े बड़े डण्डे थे और वे उन्हीं से डिक की घोड़ी को बेकाम करने की कोशिश कर रहे थे॥

यकायक उन आदमियों में से एक ने आगे बढ़कर बेस की पीठ पर एक डण्डा मारा जिसके लगते ही वह भड़की और इधर उधर दौड़ने और दुलत्ती चलाने लगी। उसके भड़क जाने से इतना तो जरूर हुआ कि उन आदमियों में से जो डिक को घेरे हुए थे दो जमीन पर दिखाई देने लगे और बाकी अपने उन दोनों साथियों को बेस की दया पर छोड़ कर कुछ दूर दूर हट गए मगर फिर भी उन्होंने डिक को किसी तरफ से निकल जाने की जगह न दी॥

इतने ही में टामी को अब जेरी तथा उन दो आदमियों से जो जेरी की मदद को वहां पहुंच गए थे लड़ते लड़ते बिलकुल थक गया था डिक को पुकार कर बोला, "अजी तुम गोली क्यों नहीं चलाते?"

जेरी ने यह सुनते ही टामी को अपने आगे की तरफ कर दिया और आप उसके पीछे उसकी आड़ में हो जाने की कोशिश करने लगा। डिक ने यह देख टामी से कहा, "नहीं ऐसा मेरे किये न होगा कदाचित गोली तुम्हीं को लग जाय?"

टामी ने यह सुन कर कहा, "अजी मुझी को गोली लग जायगी तो क्या होगा वह मौत फांसी चढ़ कर मरने से तो अच्छी होगी॥"

टामी के इस कहने पर डिक ने अपनी जेब से पिस्तौल निकाली और निशाना साध कर जेरी की तरफ गोली चलाई मगर गोली जेरी की टोपी में छेद करती हुई निकल गई। टामी ने फिर पुकार कर कहा, "फिर चलाओ! क्या तुम मेरा फांसी पर चढ़ के मरना ही पसन्द करते हो?"

डिक ने फिर गोली चलानी चाही मगर उसी समय जेरी के उन दोनों साथियों में से एक ने आगे बढ़ कर डिक की तरफ गोली चलाई जो कि डिक का कन्धा छीलती हुई निकल गई। डिक ने यह देख उसे अपनी गोली का निशाना बनाया और थोड़ी ही देर में वह जमीन पर गिरा हुआ दिखाई देने लगा। यह देख टामी ने जोश से कहा, "शाबाश! फिर चलाओ!!"

डिक ने यह सुन फिर पिस्तौल उठाई और जेरी की तरफ गोली चलाई, मगर अफसोस! उसी समय टामी ने जेरी के

हाथ से छूटने के लिये ज़ोर से एक झटका दिया और उसके हाथ से अलग हो गया मगर ऐसा होने से वह जेरी के आगे आ गया और वह गोली जो जेरी की तरफ चलाई गई थी टामी की छाती में लगी जिससे वह ज़ोर से चिल्लाकर ज़मीन पर गिर पड़ा ॥,

टामी के चिल्लाकर ज़मीन पर गिरते ही मौल भी जो एक आड़ की जगह से छिप कर यह सब देख रही थी अपने को सम्हाल न सकी और एक चीख मार कर उस जगह पहुंची जहां टामी ज़मीन पर पड़ा तड़प रहा था। अब मौल को मालूम हुआ कि उसके विश्वासघात का क्या नतीजा निकला। वह टामी के ऊपर झुक कर रोती हुई उसके चेहरे की तरफ देखने लगी। उसकी आवाज़ सुन टामी ने आंख खोल कर उसकी तरफ देखा और उसको पहिचानते ही उसने एक दफे बड़ी ही कोशिश करके अपनी कमर से एक छुरा निकाला और उसे मौल की छाती में घुसेड़ दिया !!

बस यही टामी का आखिरी काम था। इसके साथ ही उसकी जान निकल गई और मौल भी उसी की लाश पर गिर कर परलोक को सिधार गई !!
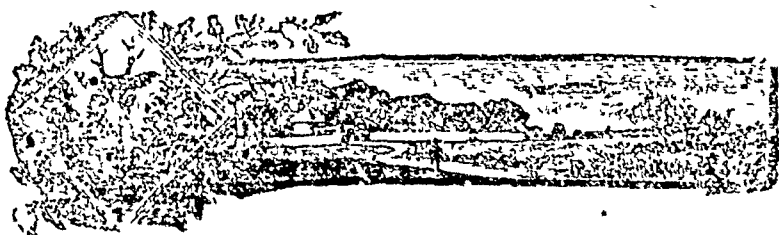
बाईसवां बयान ।

मौल और टामी की मौत इस जल्दी से हुई कि जेरी या उसके साथी जो पास ही खड़े थे कुछ भी न कर सके और संकते की सी हालत में खड़े देखते रह गए । वे लोग जो डिक को घेरे हुए थे उसी तरफ आ गए जिधर मौल और टामी की लाश पड़ी हुई थी और डिक इस मौके को गनीमत समझ तेजी के साथ एक तरफ को भागा ॥

डिक को अपने दोस्त की इस तरह की मौत से कितना रंज हुआ उसका न कहना ही ठीक है । उसको इस बात की कुछ भी खबर न थी कि वह किस तरफ जा रहा था सिर्फ सिर झुकाये घोड़ी की पीठ पर बैठा था । उसके मन में तरह तरह के खयाल आ रहे थे । जिन जिन मौकों पर टामी ने उसकी मदद की थी और उसके साथ अपनी जान देने को तैयार हो गया था वे सब डिक की आंखों के सामने घूमने लगे । उसने गुस्से के साथ वह पिस्तौल जिसके सबब से टामी की मौत हुई थी दूर फेंक दी जो एक गड़हे में जाकर गिर पड़ी ॥

न जाने कितनी देर तक डिक इसी तरह खयाल में डूबा रहता अगर उसे अपने पीछे किसी की आवाज न सुनाई देती । वह आवाज जेरी की मालूम देती थी जिसे सुनते ही डिक ने चौंक कर पीछे की तरफ देखा और जेरी को तीन सवारों के साथ तेजी से अपनी तरफ आते पाया । जेरी ने डिक की तरफ देख कर कहा, "बस अब क्यों बेकायदा भागने की कोशिश करते हो ? अब तुम किसी तरह अपने को बचा नहीं सकते ॥"

यकायक जेरी को इतने नजदीक आगया हुआ पाकर डिक को बड़ा ताज्जुब मालूम हुआ क्योंकि वह अपने खयालों में ऐसा डूबा हुआ था कि उसे घोड़ों के टापों की आवाज नहीं सुनाई दी थी और उसे इस बात का गुमान भी न था कि कोई उसका पीछा कर रहा है ॥

अभी तक डिक को यह सोचने का मौका न मिला था कि वह भाग कर कहां जाय मगर अब जेरी को अपने से इतना नजदीक आगया हुआ पाकर उसे इस बात पर गौर करना ही पड़ा। पहिले तो उसने "एपिङ्ग" जाने का इरादा किया मगर फिर इस खयाल से कि "ऐसा करने पर उसके दोस्त जिप्सियों के ऊपर आफत आजाने का डर है क्योंकि पुलिस को पहिले ही से उनके ऊपर शक है।" उसने वहां जाने का खयाल छोड़ दिया और कोई दूसरी जगह सोचने लगा ॥

यकायक उसे "यार्क" शहर का खयाल आगया। डिक अपने लड़कपन में बहुत दिनों तक "यार्क" में रह चुका था और इस लिये वह उसके आसपास की जगहों तथा सड़कों से बखूबी वाकिफ था मगर डिक को मुश्किल यही दिखाई देता था कि वह शहर यहां से करीब सवा सौ मील के फासले पर था ॥

डिक अभी इस बात के सोच में ही पड़ा हुआ था कि "यार्क" जाय या नहीं कि उसे पीछे की तरफ से जेरी के यह कहने की आवाज सुनाई पड़ी, "बस अब ले लिया है देखो जाने न पावे !!"

डिक ने चिँहुक कर पीछे की तरफ देखा और जेरी तथा उसके साथियों को अब पहिले से भी नजदीक आगया हुआ

पाया। यह देखते ही उसने बेस को एक एड़ मारी और बात की बात में जेरी से बहुत आगे निकल गया ॥

जेरी ने जब डिक को इस तरह निकल जाते देखा तो पहिले तो उसने अपने घोड़े की चाल कुछ और तेज की मगर जब इससे कोई काम निकलता न देखा तो उसने जेब से पिस्तौल निकाल कर डिक की तरफ चलाई मगर दूरी ज्यादे होने के कारण गोली डिक तक नहीं पहुंची। जेरी ने यह देख पिस्तौल जेब में रख ली और कुछ किसानों की तरफ जो एक खेत में काम कर रहे थे देखकर कहा, "पकड़ो पकड़ो! डाकू भागा जाता है। वही मशहूर डाकू डिक टर्पिन है! देखो भागने न पावे !!" मगर जब तक वे किसान सड़क पर आवें डिक आगे निकल गया और जेरी को सिर्फ चिल्लाने की मेहनत हाथ लगी ॥

अब सड़क कुछ ढालुई मिलने लगी और इस सबब से डिक को अपनी घोड़ी की चाल कुछ कम करनी पड़ी। जेरी ने यह देख अपने साथियों से कहा, "मालूम होता है अब उसकी घोड़ी कुछ थक रही है।" मगर उसके एक साथी ने जो कि गौर से डिक की सब चालें देख रहा था कहा, "नहीं यह बात नहीं है! सड़क ढालुई होने के कारण उसने अपनी घोड़ी की चाल कम की है।" जिसे सुन जेरी चुप होरहा क्योंकि वह भी इस बात को समझता था मगर अपने साथियों को बढ़ावा देने के खयाल से उसने यह बात कही थी ॥

थोड़ी ही देर में ढाल खतम होगई और अब सड़क कुछ ऊँची मिलने लगी यानी अब डिक को ढाल चढ़ना पड़ा। थोड़ी दूर तक चले जाने बाद जब डिक ने पीछे घूम कर देखा

तो जेरी और उस के साथी साफ साफ दिखाई पड़ने लगे क्योंकि वह इनसे कुछ ऊंचे पर भी था और बीच में किसी तरह की रुकावट भी देखने में नहीं मालूम पड़ती थी। इसी तरह जेरी और उस के साथी भी डिक को अच्छी तरह देख सकते थे॥

अब फिर डिक को इस बात का मौका मिला कि वह अपने "यार्क" जाने या न जाने के विषय में निश्चय कर सके। बहुत कुछ सोचने विचारने बाद उसने यही निश्चय किया कि यार्क ही चलना चाहिये क्योंकि उसके सिवाय और कोई ऐसी जगह डिक के ध्यान में न आई जहां वह कुछ दिन तक आराम के साथ रह कर पुलिस की नजरों से बच सकता॥

तेईसवां बयान।

डिक ने यार्क जाने का निश्चय कर चुकने पर अपनी घोड़ी की चाल कुछ कम कर दी क्योंकि इतने लंबे सफर के शुरू ही में वह अपनी घोड़ी को थकाया नहीं चाहता था॥

अब डिक तथा उसका पीछा करने वाले एक दूसरे को बखूबी देख सकते थे। जेरी ने जब डिक की चाल फिर कम होती देखी तो वह अपने मन में बहुत ही खुश हुआ और उसे निश्चय होगया कि अब डिक उस के फंदे से नहीं निकल सकता। उसने डिक की घोड़ी बेस की तारीफ तो बहुत सुनी थी मगर वह यह नहीं जानता था कि वह कितना तेज जाने वाली है या कितना दम रखती है। अस्तु इस समय उसने बेस की चाल का कम होना उसके थकने का कारण समझा क्योंकि वह यह तो समझ

नहीं सकता था कि डिक ने जान बूझ कर उसकी चाल कम कर दी है॥

जेरी ने यह देख अपने साथियों को बढ़ावा देते हुए कहा, "अब वह किसी तरह भाग नहीं सकता। तुम लोग उस को आंख की ओट न होने देना। अगर हम लोग इस दफे भी उस को न पकड़ सके तो हम लोगों की बड़ी हँसी होगी॥"

जेरी के एक साथी ने जिसका नाम तीतू था कुछ कुड़बुड़ा कर कहा, "सो तो होना ही है। हम लोग उसको पकड़ तो कभी न सकेंगे॥"

जेरी०। क्यों?

तीतू०। उस की घोड़ी बहुत तेज जाने वाली है॥

जेरी०। तो क्या हम लोगों के घोड़े कुछ उससे चाल में कम हैं? तुम तो बेफायदा ही घबड़ा रहे हो, इस दफे वह किसी तरह नहीं भाग सकता॥

तीतू ने जेरी की इस बात का कोई जवाब न दिया और चुप हो रहा क्योंकि वह घोड़ों की अच्छी पहिचान रखता था और उस की चाल देख कर अच्छी तरह समझ गया था कि वह अभी इससे ज्यादा तेज जा सकती है। जेरी ने अपने घोड़े की चाल कुछ तेज की और इस सबब से उसके साथियों ने भी घोड़े तेज किये मगर डिक ने यह देख कर भी अपनी चाल तेज न की जिसे देख जेरी खुश होकर बोल उठा, "हा! हा! देखो अब वह अपनी घोड़ी और तेज नहीं चला सकता, जरूर अब उसकी घोड़ी थक गई है!!"

डिक ने अपनी चाल इस लिये तेज नहीं की थी कि वह

और डिक दूर निकल गया ॥

बेस के टाप की टोकर लगने से एक सवार की टोपी उड़कर दूर जा गिरी थी और उसके सिर में भी हलकी सी चोट लगी थी। वह दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ कर अपने साथी सवारों से बोला, "बाप रे बाप! मेरा तो सिर ही फूट गया।" मगर जब उसके साथियों ने उसे इस बात का विश्वास दिलाया कि उसका सिर कहीं से फूटा नहीं है तो वह कुछ शान्त हुआ और पीछे घूम कर बेस की तरफ देखता हुआ बोला "यह घोड़ा नहीं है शैतान है। भला कभी कोई घोड़ा इतनी ऊंची उछाल मार सकता है ॥"

इतने ही में जेरी भी साथियों के साथ वहीं पहुंच गया और कह सुन तथा इनाम की लालच दे उसने उन सवारों को भी साथ ले लिया और फिर डिक का पीछा शुरू हुआ। अब यह दौड़ बड़ी ही दिलचस्प हो गई। सब सवार आपस में एक दूसरे के आगे निकलने की कोशिश करते और यही चाहते कि सब से पहिले वेही पहुंच कर डिक को पकड़ने की वाहवाई तथा इनाम लूटें। डिक इन सभों का शोर मचाना और घोड़ों को चाबुक मार मार कर और तेज चलाने की कोशिश करना देख मन ही मन बहुत हंसता था क्योंकि उसको अपने तथा अपनी घोड़ी के ऊपर भरोसा था और जानता था कि वह जब चाहे तभी अपने पीछा करने वालों को पीछे छोड़ सकता है। मगर वह बेस को इस खयाल से तेज नहीं चलाया चाहता था कि इतने लम्बे सफर के शुरू में उसको थका देना ठीक न होगा। वह अपने और पीछा करने वालों के बीच में करीब

सौ गज का फ़ासला रक्खे चला जाता था और न उस फ़ासले को बढ़ाता और न घटने ही देता था ॥

अब गांव खतम होगया और उसके सिरे पर का दूसरा फाटक दिखाई देने लगा। यह फाटक बहुत ही ऊंचा था और ऊपर की तरफ नोकदार छड़ लगे रहने के कारण और भी ऊंचा मालूम होता था ॥

जेरी ने अपने साथियों से पुकार कर कहा, "फाटक वाले आदमी को कहो फाटक बंद करदे और इस आदमी को जाने न दे।" उसकी इच्छानुसार एक आदमी ने पुकार कर उस आदमी से जो फाटक के पास हर दम तैनात रहता था कहा, "फाटक बन्द कर दो। यह आदमी जो भागा जा रहा है डाकू है! जल्दी फाटक बन्द कर दो, भागने न पावे॥"

वह आदमी इन सभों का चिल्लाना सुन कर अपनी झोपड़ी में से निकला। पहिलीही नजर में उसको सब हाल मालूम हो गया और उसने फुर्ती से फाटक बन्द कर दिया। इसके बाद वह भाग कर फिर अपनी झोपड़ी में घुस गया क्योंकि उसको इस बात का डर लगा कि कहीं वह आदमी जिसको यह सब डाकू बता रहे हैं उसके फाटक बन्द कर देने पर नाराज होकर उसे गोली न मार दे ॥

अब जेरी को कुछ खुशी मालूम हुई क्योंकि उसे विश्वास था कि डिक इतना ऊंचा फाटक पार न कर सकने के कारण जरूर रुकेगा। मगर उसकी यह प्रसन्नता कुछ ही देरकी थी क्योंकि बेस ने बगैर किसी तरह की तकलीफ के उस फाटक को भी पार कर लिया और जेरी तथा उसके साथी देखते ही रह गये॥

जब तक जेरी उस फाटक के पास पहुंचे तब तक वह फाटक वाला भी अपनी झोपड़ी में से निकलकर वहां आपहुंचा। जेरी ने उससे फाटक खोल देने को कहा मगर उसने बिगड़कर जवाब दिया, "अब फाटक घड़ी घड़ी खोला और बन्द किया नहीं जा सकता। एक आदमी बिना महसूल दिये निकल गया अब तुम लोग भी इसी तरह भागा चाहते हो। जब तक तुममें से हर एक आदमी मुझे महसूल नहीं दे लेगा फाटक खोला न जायगा॥"

डिक के अछूते निकल भागने के कारण जेरी का मिजाज पहिले ही से बिगड़ रहा था और जब उसने फाटक वाले को इस तरह कहते सुना तो वह और भी भभक उठा और बोला, "अबे बेवकूफ! तू जानता नहीं मैं कौन हूं? मैं पुलिस का अफसर हूं और वह आदमी जो भागा जाता है मशहूर डाकू डिकटर्पिन है! जल्दी दर्वाजा खोल देर न कर॥"

डिकटर्पिन का नाम सुन फाटक वाले के कान कुछ खड़े हुए मगर उस जिद्दी ने फिर भी फाटक न खोला और बोला, "तुम चाहे कहीं के राजा ही क्यों न हो मगर मैं तो बिना महसूल लिये फाटक नहीं खोलने का॥"

ऐसे जिद्दी से बहस करके समय नष्ट करना भी बेवकूफी समझ कर जेरी के साथी तीतू ने सभों का महसूल निकाल कर बूढ़े के हाथ पर रक्खा और जब उसने सब आदमियों को गिन कर महसूल ठीक पाया तो फाटक खोला॥

इतना समय मिल जाने से डिक को और भी सुभीता हो गया। उसने अपनी घोड़ी बहुत धीरे धीरे चला कर उसको

सुस्ताने का मौका दिया और इसके बाद अब जेरी वगैरह को फाटक पार कर अपनी तरफ आते देखा तो फिर बेग को तेज किया ॥

अब आगे की तरफ एक दूसरा गांव दिखाई देने लगा, डिक इस को अगर बचा कर निकल सकता तो बहुत ही खुश होता क्योंकि यह गांव बहुत बड़ा था मगर ऐसा होना असम्भव था क्योंकि सड़क ठीक गांवके बीचोबीच से जाती थी। जब डिक गांव में पहुंचा तो घोड़ों के टापों की आवाज और पीछा करने वालों की चिल्लाहट से होशियार होकर बहुत से आदमी अपने अपने घरों से बाहर निकल आये और डिक को रोकने की कोशिश करने लगे। बहुत से लोग हाथों में ईंट पत्थर या और कोई भारी चीज लेकर सड़क के दोनों तरफ खड़े होगये और जब डिक पास पहुंचा तो उसके ऊपर ईंट पत्थरों की एक अच्छी खासी बर्षा होगई मगर उसका इससे कुछ ज्यादे नुकसान न हुआ और वह बेग को तेज कर के गांव के बाहर निकल गया ॥

दस बारह मील तक जाते जाते डिक का पीछा करने वालों की गिनती बहुत कम होगई क्योंकि ज्यों ज्यों उनके घोड़े थकते जाते थे त्यों त्यों वे इस दौड़ से हाथ धोकर अलग होते जाते थे यहां तक कि एडमन नामक गांव के पास आते तक सिर्फ जेरी और उसके तीनों साथी ही डिक का पीछा करते दिखाई दे रहे थे ॥

एडमन में पहुंच कर फिर एकबार वैसाही हुआ जैसा कि पहिले दो गांवों में हो चुका [illegible]त् डिक को रोकने की बहुत कोशिशें की गईं मगर स[illegible] ई। हां इतना जरूर हुआ

कि यहां से जेरी को कई साथी और मिल गये जो कुछ उस के कहने सुनने और कुछ अपने शौक से डिक का पीछा करने को तैयार हो गए॥

एडमस गांव भी बहुत पीछे छूट गया और डिक बराबर उसी चाल से चलता रहा। अब जेरी और उसके साथियों के घोड़े भी थकावट के चिन्ह दिखलाने लगे क्योंकि वे बहुत अच्छे और तेज जाने वाले जानवर होकर भी बेस का मुकाबला नहीं कर सकते थे मगर अभी तक बेस ने कुछ भी थकावट नहीं जाहिर की थी और वह उतनीही ताजी मालूम होती थी जितना कि सफर के शुरू में। डिकने बड़े प्यारसे उसकी गर्दन थपथपाई और "शाबाश! शाबाश!!" कहा जिसे सुन कर बेस ने कान हिलाये और अपनी इस तारीफ पर खुश मालूम होने लगी॥

अपने पीछा करनेवालों को यह दिखलाने के लिये कि उसे उनका कुछ भी खयाल नहीं है, डिक ने अपनी जेब से तमाखू पीने का पाइप निकाला और उसमें तमाखू भर कर चकमक से आग निकालने की कोशिश करने लगा। जेरी ने यह देख ताज्जुब के साथ अपने साथियों से कहा, "देखो कम्बख्त को, इसे इस वक्त तमाखू पीने की सूझी है॥"

सूरज डूब गया और रात की अंधेरी बढ़ती देख जेरी के एक साथी ने कहा, "अब अन्धकार में उस का पीछा करना बहुत मुश्किल होगा।" जेरी के मन में भी उस समय ऐसे ही खयाल उठ रहे थे पर उसने उनको जाहिर करना उचित न समझ कर कहा, "नहीं कोई ज्यादा तकलीफ न होगी चन्द्रमा थोड़ी ही देर में निकलेगा और तब उसकी रोशनी में हमलोग

बखूबी उसका पीछा कर सकेंगे॥"

अंधकार पल पल में बढ़ता जाता था। पीछा करने वालों ने अब चिल्लाना और शोर मचाना छोड़ दिया था बल्कि उनमें से बहुतसे तो इस समय डिक का पीछा करने की बनिस्बत घर पर आराम के साथ लेटना मना रहे थे और चाहते थे कि किसी तरह डिक आगे निकल जाय तो इस दौड़से छुट्टी मिले: क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया था कि अब अंधेरे में डिक का पकड़ा जाना असम्भव है॥

डिक को कुछ प्यास मालूम पड़ी और इस सबब से उसने बेस की लगाम ढीलदी जिससे वह और भी तेजी के साथ भागी और थोड़ी ही देर में पीछा करने वालों के टापों की आवाजें सुनाई देना भी बन्द हो गया। पांच मील के करीब तक डिक इसी तरह तेजी के साथ भागा गया और तब एक गांव के नजदीक पहुंच कर उसने एक सराय के आगे बेस को खड़ा किया॥

डिक घोड़ी से उतर पड़ा और बेस की लगाम उसी जगह अटका कर सराय के अन्दर गया। अपने लिये कुछ लेने के पहिले उसने दो बोतल शराब बेस के लिये ली और उसे एक बालटी में डाल कर बेस को पिलाया। इसके बाद उसने अपने लिये कुछ लिया मगर उसे खाने के पहिले उसने बेस की जीन वगैरह उतार दी और उसे ठंढा होने दिया। जब तक डिक भोजन करता रहा तब तक बेस को सुस्तानेका मौका मिला और उसकी थकावट कुछ दूर हो गई॥

करीब बीस मिनट तक डिक सराय में रहा और इसके

बाद उसे घोड़ों के टापों की आवाजें सुनाई देने लगीं जिससे वह समझ गया कि पीछा करने वाले आ पहुंचे। उसने जल्दी से वेस पर जीन कसी और इसके बाद सराय के मालिक की तरफ एक अशर्फी फेंक वह वेस पर सवार हो वहां से रवाना हुआ॥

जैसे ही डिक रवाना हुआ वैसे ही जेरी भी अपने साथियों समेत वहां आ पहुंचा। डिक को भागे जाते देख उसकी तरफ इशारा कर उसने कुछ रुखाई के साथ सराय वाले से कहा, "क्यों जी तुमने उस आदमी को रोका क्यों नहीं?"

सरायवाले ने ताज्जुब से पूछा, "क्यों मैं उसे क्यों रोकता?"

जेरी ने कहा, "वह डाकू है क्या तुम उसे नहीं जानते?"

सरायवाला०। भला मैं यह क्योंकर जान सकता था कि वह डाकू है! मैं तो उसे कोई भला आदमी समझता था और समझता हूं॥

जेरी ने ज्यादा बकवाद करना बेफायदा समझ कर कहा, "अच्छा यह बताओ तुम्हारे पास घोड़े हैं? हमारे ये घोड़े बिलकुल थक गए हैं और अब एक कदम चलने लायक नहीं रहे हैं॥"

सराय वाले के पास घोड़े नहीं थे अस्तु उसने साफ जवाब दे दिया मगर इतना कह दिया कि आगे जाने पर एक दूसरी सराय में घोड़े मिल सकते हैं। लाचार जेरी मन ही मन ताव पेच खाता हुआ किसी तरह उस दूसरी सराय तक पहुंचा और वहां नये घोड़ों का इन्तजाम किया। एक ऐसे आदमी के बिना जो इधर की सड़कें वगैरह अच्छी तरह जानता हो अब काम चलना मुश्किल था क्योंकि जेरी इस तरफ कभी आया

न था और न इधर की सड़क वगैरह का हाल जानता था। अस्तु जेरी ने खोज ढूंढ कर एक ऐसे आदमी को भी ठीक कर लिया जो इस प्रान्त का सब हाल जानता था॥

इस ढूंढाढांढी में बहुत देर होगई और अब पूरी तरह से अंधकार हो गया। यह देख जेरी के एक साथी ने जेरी से पूछा "क्या अब इस अंधेरे में पीछा करना मुनासिब होगा?" जेरी ने कुछ चिढ़ कर जवाब दिया, "क्यों मुनासिब न होने की इसमें क्या बात है? मैंने तो कह दिया न कि चाहे मुझे आज रात भर और कल का दिन तथा कल की रात भी यदि घोड़े ही की पीठ पर बितानी पड़े तो भी मैं पीछा करने से नहीं हटने का! अगर तुम्हें डर मालूम हो तो तुम यहां रह सकते हो॥"

इतना कह कर जेरी ने उस आदमी से जो राह बताने के लिये मुकर्रर किया गया था कहा, "तुम्हारी समझ में अब कौन सी सड़क पर चलना चाहिये॥"

उस आदमी ने जवाब दिया,"मैं समझता हूं कि अब उस डाकू ने उत्तर तरफ वाली सड़क पसन्द की होगी क्यों के उधर से आमदरफ़्त बहुत कम होती है। मगर मैं यह बात निश्चयतः नहीं कह सकता क्योंकि ये डाकू लोग सब सड़कें बहुत अच्छी तरह जानते हैं और वे कब किस तरफ घूम जायँगे इस बात का जानना बहुत ही मुश्किल है॥"

इस बात को सुन कर जेरी की हिम्मत को बहुत बड़ा धक्का लगा मगर उसने कुछ कहा नहीं और अपने साथियों के साथ उस सड़क पर तेजी के साथ जाने लगा जिसपर डिक के जाने का खयाल था॥

चौबीसवां बयान।

जेरी अपने साथियों सहित चुपचाप चला जा रहा था। बहुत दूर तक जाने पर भी अभी तक उसे डिक की कुछ आहट न मिली थी इससे वह मन ही मन घबरा रहा था और इस फिक्र में था कि कहीं कोई आदमी मिले तो उससे डिक के बारे में दरियाफ्त करे मगर रात अंधेरी और कुछ कुछ बदली छाई रहने के कारण सड़क पर कहीं कोई आदमी चलता दिखाई न देता था॥

बहुत दूर तक इसी तरह चुपचाप चले जाने के बाद वे सब एक गांव के नजदीक पहुंचे जिसके सिरे पर एक छोटी सी सराय थी। गर्मी और उमस के कारण कई आदमी सराय के बाहर सड़क के किनारे कुर्सियों पर बैठे हुए बातें कर रहे थे। जेरी ने पास पहुंच डिक के बारे में कुछ जानने की आशा से घोड़ा रोका और एक आदमी की तरफ देख पूछा, "क्यों जी! तुमने किसी सवार को इधर से जाते देखा है?"

वह आदमी कुछ देर तक तो जेरी का मुंह देखता रहा इसके बाद बोला, "कैसा सवार?"

जेरी यह सुन चिढ़ कर बोला, "कैसा सवार? सवार कैसा होता है? जो घोड़े पर सवार हो उसे ही तो सवार कहते हैं? फिर यह क्या पूछते हो कि कैसा सवार?"

वह आदमी यह सुन कुछ हँस कर बोला, "जो घोड़े पर सवार हो उसे ही तो सवार नहीं कहते हैं। जो घुड़सवारी के फन को अच्छी तरह जानता हो उसे सवार कहना चाहिये।

अगर कोई किसी बन्दर को घोड़े पर सवार करा दे तो वह बन्दर सवार नहीं कहलावेगा ॥"

जेरी के एक साथी ने जेरी को ज्यादे बनाये जाने से बचा कर उस आदमी से कहा, "भले आदमी ! तुम दिल्लगी मत करो ठीक ठीक बात का जवाब दो ? हमलोग पुलिस के आदमी हैं और एक डाकू का पीछा कर रहे हैं। क्या तुमने किसी आदमी को घोड़े पर सवार इधर से जाते देखा है ?"

अब उस आदमी ने जवाब दिया, "हां हां हमलोगों ने एक सवार को इधर से जाते देखा है। वह बड़ा खुशमिजाज मालूम होता था, एक गीत गाता जा रहा था ॥"

जेरी ने यह सुन जल्दी से पूछा, "कब कब? कितनी देर हुई?"

आदमी० । करीब डेढ़ घंटे हुए ॥

जेरी ने यह सुन एक लम्बी सांस खींची। वह खूब समझता था कि डिक को डेढ़ घंटे का समय मिल जाना उतना ही है जितना बहुतों को डेढ़ दिन का मगर तौ भी उसने अपने साथियों को रुकने का हुक्म न दिया क्योंकि अपने इस कहने का जो खयाल था कि "चाहे मुझे आज रात भर और कल का दिन तथा कल की रात भी यदि घोड़े की पीठ पर बितानी पड़े तौ भी मैं पीछा करने से नहीं हटने का।" जो कि उसने थोड़ी ही देर पहिले अपने साथी से कहा था। जेरी का साथी तो मन ही मन चिढ़ रहा था क्योंकि उसे निश्चय होगया था कि अब डिक का हाथ में आना बहुत मुश्किल है दूसरे इस अंधेरी रात और बदली ने और भी उसकी, उसकी ही क्यों और भी उसके कई साथियों की, हिम्मत तोड़ दी थी क्योंकि अंधकार के मारे

हाथ को हाथ नहीं सूझता था और चन्द्रमा के निकलने में अभी पूरे एक घंटे की देर थी ॥

पचीसवां बयान ।

डिक बराबर उसी चाल से भागा आ रहा था। वह इधर की सड़कों को बखूबी जानता था। अंधेरी रात से उसे किसी तरह का खतरा न था और न उसकी घोड़ी ही अंधेरे में किसी तरह से झिझकती या तेज जाने में डरती थी। डिक अब उसे बहुत ही धीरे धीरे चला रहा था क्योंकि एक तो उसने अब यार्क तक जाने का निश्चय कर लिया था दूसरे उसे विश्वास था कि अंधेरे में उसका पीछा करने वाले कभी उसको पा न सकेंगे॥

थोड़ी ही देर में बदली साफ होगई और चन्द्रमा भी निकल आया। डिक घोड़े पर से उतर पड़ा और जमीन के साथ कान लगा बड़े गौर से सुनने लगा मगर उसे किसी तरह की आवाज सुनाई न दी जिससे उसे निश्चय हो गया कि उस का पीछा करने वाले अभी बहुत पीछे हैं। यह जान उसने बेस को सड़क के एक किनारे लाकर खड़ा करने बाद उसकी जीन वगैरह उतार दी और उसे आराम करने दिया॥

कोई आधे घंटे बाद डिक को घोड़ों के टापों की कुछ आहट मालूम पड़ी जिसे सुन वह समझ गया कि जेरी और उसके साथी आ रहे हैं। उसने बेस को जीन वगैरह कस कर दुरुस्त किया और उसपर सवार हो फिर आगे का रास्ता लिया॥

बेस आधे घंटे तक सुस्ता लेने से बिल्कुल ताजी हो गई

मालूम होती थी और तेज जाने के लिये जोर मार रही थी। यह देख डिक ने उसकी लगाम ढील दी और उसे उसकी खुशी के माफिक जाने दिया। बेस की चाल अब वास्तव में तारीफ़ के लायक थी। वह इतनी तेज जा रही थी कि अगल बगल के पेड़ एक दूसरे के साथ सट कर पीछे को भागे जाते मालूम हो रहे थे। डिक को यह देख इतनी खुशी मालूम हुई कि वह अपने को रोक न सका और खुशी से बोल उठा, "मेरी जविस! मैं तुमको कई दफे नाच नचा चुका हूं और इसबार भी ऐसा नाच नचाऊँगा कि तुम जन्मभर याद रक्खोगे।" मगर इसके साथ ही उसका ख्याल उसके मरे हुए दोस्त टामी की तरफ़ जा पड़ा और वह उसके सोच में डूब गया॥

बहुत देर तक उसी चाल से जाने बाद डिक हंटिंग्टन नामक गांव में पहुंचा। इस रात के समय सड़क पर बिल्कुल सन्नाटा हो रहा था और कहीं कोई दिखाई नहीं देता था। पासही के एक गिरजे की घड़ी में ग्यारह बजे जिसे सुन डिक को मालूम हुआ कि चार घंटे से कुछ कम में ही बेस ने साठ मील पूरे किये॥

डिक हंटिंग्टन गांव पार करके थोड़ा ही आगे बढ़ा होगा कि सामने से आती हुई एक गाड़ी पर उसकी नजर पड़ी जिसमें चार उम्दा घोड़े जुते हुए थे। डिक उस समय इस तेजी से जा रहा था कि कोचवान को बड़ी कोशिश से अपने घोड़ों को रोकना पड़ा और डिक को भी अपनी चाल कम करनी पड़ी नहीं तो दोनों में टक्कर हुए बिना न रहती क्योंकि सड़क उस जगह कुछ तंग थी॥

गाड़ी पर कोचवान के बगल ही में एक आदमी बैठा हुआ

था जो डिक को बखूबी पहिचानता था क्योंकि डिक से एक दफे उसे वास्ता पड़ चुका था। उसने डिक को देखते ही पहिचान लिया और जेब में से एक पिस्तौल निकालते हुए कोचवान से कहा, "वह सवार जो आ रहा है मशहूर डाकू डिक टर्पिन है। गाड़ी को इस ढंग से खड़ा कर दो जिसमें वह निकल कर जाने न पावे। उसके पकड़ने वाले को कई हजार रुपया इनाम मिलेगा॥"

कोचवान ने इतना सुनते ही गाड़ी रोक कर इस ढंग से बेड़ी खड़ी कर दी कि डिक को जो अब नजदीक आ गया था कहींसे जाने की जगह न रह गई। डिक ने यह देख बेस को कुछ ऐसा इशारा किया जिससे वह गाड़ी के घोड़ों के मुंह पर दुलत्ती मारने लगी और वे भड़ककर इधर उधर उछलने कूदने लगे। वह आदमी जिसने गाड़ीवान को गाड़ी रोकने को कहा था इस बात के विचार ही में था कि जरा शान्ति हो तो डिक की घोड़ी को गोली मार उसे जमीन पर गिरादें मगर ऐसा होने के पहिले गाड़ी के बेतरह हिलने डुलने की वजह से वह आप ही जमीन पर गिर पड़ा और वहां से लुड़कता तथा घोड़ों के नीचे कुचले जाने से बाल बाल बचता हुआ सड़क के किनारे के एक गड़हे में जा गिरा॥

घोड़ों के भड़क जाने के सबब से गाड़ीवान घोड़ों को सँभालने की फिक्र में पड़ गया और किसी को भी डिक का ख्याल न रहा। डिक यह देख मौका पाकर गाड़ी के बगल से निकल गया। बगल से निकलती समय उसने गाड़ी में बैठे लोगों की तरफ जो डिक का नाम सुनकर कांप रहे थे देख कर

टोपी उतार सलाम किया और कहा, "मेरे सबब से आपलोगों को बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी, कृपा कर इसके लिये मुझे माफ कीजियेगा॥"

इतने ही में कोचवान ने घोड़ों को सँभाल डिक की तरफ गोली चलाई मगर वह डिक को न लग कर उसकी टोपी में जिसे वह सलाम करने के लिये हाथ से उठाये हुए था छेद करती हुई निकल गई। डिक ने यह देख कुछ ऊँची आवाज में कहा, "शाबाश ! खूब किया !! मगर अब तुम भी जरा होशियार रहना। डिक टर्पिन अपने साथ बुराई करने वालों को कभी नहीं भूलता।" कोचवान की तो इतना सुनते ही डर के मारे जान निकल गई और वह बिना कुछ कहे या डिक को रोकने की कोई और कोशिश किये घोड़े तेज कर गाड़ी भगा लेगया॥

कुछ दूर तक और जाने बाद डिक एक सराय के पास पहुंचा जिसका मालिक उसकी जान पहिचान का था। डिक घूम कर सराय के पिछवाड़े की तरफ चला गया और वहां एक खिड़की के पास पहुंच घोड़ी से उतर पड़ा। बेस को तो उसने उसी जगह लगाम अटका कर खड़ा कर दिया और आप उस खिड़की के पास आ उसके शीशे पर धीरे धीरे उँगली से ठोकर देने लगा। थोड़ीही देर बाद खिड़की खुली और सराय के मालिक ने सिर निकाल बाहर की तरफ देखा और डिक को पहिचान खुशी से कहा, "वाह वाह ! आज तो बहुत दिनों के बाद तुमसे मुलाकात हुई है। कहो सब खैरियत तो है न ?"

डिक ने कहा, "नहीं खैरियत तो नहीं है। जेरी अपने साथियों को ले बड़ी दूर से मेरा पीछा करता आ रहा है। तुम

जल्दी दो बोतल शराब, एक टुकड़ा मांस तथा घोड़ा मलने का ब्रुश और एक बालटी पानी ये सब चीजें मुझे ला दो ॥"

"अभी लाया।" कह कर वह आदमी खिड़की से हट गया। जब तक वह वे सब चीजें लेकर आवे उसी बीच में डिक ने बेस की जीन और लगाम इत्यादि सब हटादी और उसका पैर वगैरह टटोल कर निश्चय कर लिया कि कहीं चोट चपेट नहीं लगी है। जब सराय का मालिक मांगी हुई चीजें लेकर लौट आया और उसी खिड़की की राह से उसने वे सब चीजें डिक को देदीं तो डिक ने शराब और पानी बालटी में डाल दिया और फिर उसी शराब मिले पानी से बेस को अच्छी तरह नहलाया तथा मला। इसके बाद उसने थोड़ी घास लेकर बेस के आगे डाल दी और सराय वाले से लेकर उसने कुछ आप भी खाया ॥

इस तरह से कोई आध घंटे तक सुस्ता लेने के बाद डिक ने फिर बेस को जीन वगैरह कस कर तैयार किया। वह मांस का टुकड़ा लगाम के साथ लपेट कर उसने बेस के मुंह में डाल दिया था और वह खुशी के साथ उसे अपनी जबान से चाटने लगी थी ॥

सराय वाले को चीजों का दाम चुका तथा कुछ इनाम दे डिक घूम कर सड़क पर आया ही था कि उसे घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई पड़ी। उसने पीछे फिर कर देखा और जेरी को तेजी के साथ आते पाया। जेरी ने उसे देखते ही चिल्ला कर कुछ कहा मगर इसके पहिले की वह अपनी बात पूरी कर सके डिक उसकी आंखों की ओट हो गया ॥

छब्बीसवां बयान।

सराय से कुछ ही दूर और आगे जाने बाद डिक को सड़क ढालुई मिलने लगी। यह ढाल बहुत ही कड़ी थी मगर डिकने अपनी घोड़ी की चाल बिल्कुल कम न की और उसे बराबर तेज जाने दिया। अगर वेस का पांव जरा भी लड़खड़ाता या वह जरा भी ठोकर खाती तो इसमें कोई सन्देह न था कि दोनों लुढ़कते हुए नीचे जा रहते और दोनो में से किसी की भी जान न बचती मगर डिक को इन सब बातों का कोई ख्याल ही न था। वह बराबर उसी तेज चाल से चला गया और इसी सबब से जब तक जेरी उस ढाल तक पहुंचे वह दूर निकल गया॥

जेरी ने जब वहां पहुंच कर डिक को कहीं न पाया तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ। उसकी हिम्मत इतनी न थी डिक की तरह वह भी उसी तेज चाल से उस ढाल के नीचे उतरे और अपने हाथ पैरों से हाथ धोने की तय्यारी करे। वह घोड़े से उतर पड़ा और उसकी देखा देखी उसके सब साथी भी घोड़ों से उतर पड़े और उसके पीछे पीछे धीरे धीरे चलते हुए उस ढाल के नीचे आए। डिक को इससे और भी फ़ायदा हुआ और वह इस बीच में बहुत आगे निकल गया॥

कई शहर और गांव पीछे छूट गये मगर वेस की चाल में किसी तरह की कमी न आई। मुंह के उस मांस के टुकड़े ने तथा शराब से नहलाये जानेने उसमें एक नए प्रकार की ताकत पैदा कर दी थी और मालूम होता था कि उसे (वेस को) तेज

चलने में एक प्रकार की खुशी मालूम हो रही है क्योंकि जब कभी किसी कारण से डिक उसे धीरे चलाना चाहता तो बहुत कोशिश करनेपर इसकी चाल में कमी आती थी॥

आखिर कोई पचीस मील तक लगातार चले जाने बाद डिक ने बेस को कुछ देर सुस्ताने के इरादे से रोका और उस परसे उतर पड़ा। चन्द्रमा अब डूब रहा था और उसकी मद्धिम रोशनी एक बड़ी भयानक चीज पर पड़ रही थी। वह चीज एक फांसी के साथ लटकता हुआ आदमी था॥

डिक उस मुरदे को देख चौंक पड़ा। चारो तरफ दूर दूर तक पेड़ों का नाम निशान भी न था और हवा की तेजी कभी कभी उस लटकते मुरदे को हिला जुलाकर और भी भयानकता पैदा कर रही थी। उस जमाने में फांसी की सजा पाने वाले लोग किसी खास जगह फांसी नहीं दिये जाते थे बल्कि जहां तहां किसी ऊंची जगह पर तख्ता वगैरह खड़ा कर लोग फांसी दे दिये जाते थे। इस समय डिक जहां खड़ा था वह भी एक ऐसी ही जगह थी। लोगों का विश्वास था कि इस तरफ फांसी दिये जाने वाले लोगों की आत्माएँ इधर से आने जाने वाले मुसाफिरों को बहुत तकलीफ पहुंचाया करती हैं और इसी सबबसे रातको रात बल्कि दिन को भी कोई उस रास्ते से जाने की हिम्मत नहीं करता था॥

डिक ने बहुत कोशिश करके अपने को सम्हाला और गौर के साथ इधर उधर देखने लगा। बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था और सिवाय उस मुरदे और उस जंजीर वगैरह के जिसके सहारे वह लटक रहा था और कोई चीज वहां न थी। डिकने

जमीन के साथ कान लगा कर बहुत देर तक गौर के साथ सुना पर किसी तरह की आहट न पाने से वह समझ गया कि अभी उसका पीछा करने वाले बहुत दूर हैं। इस बात का निश्चय हो जाने बाद उसने बेस की जीन वगैरह उतार दी और उसे सुस्ताने के लिये छोड़ दिया॥

यकायक डिक को एक बात सूझ गई। उसने सोचा कि अगर वह इस मुरदे के आस पास ही कहीं छिप सके तो जेरी को उसका जल्दी पता न लगेगा क्योंकि एक तो ये लोग अपनी धुनमें बढ़े चले जायंगे दूसरे ऐसी भयानक जगहपर रुक कर किसी को खोजने की उन सभों की हिम्मत न होगी। कुछ देर तक और सोचने बाद अन्त में डिक ने ऐसाही करने का निश्चय किया मगर मुशकिल यह थी कि अपने और बेस के छिपने लायक जगह कहीं दूर दूर तक उसे दिखाई न पड़ती थी क्यों कि बहुत दूर तक कहीं पेड़ दिखाई नहीं पड़ते थे और न कोई ऐसा ऊँचा टीला वगैरह ही दिखाई पड़ता था जिस की आड़ में वह हो जासके॥

डिक अभी इस उधेड़बुन में ही लगा हुआ था कि यकायक उसे अपने पीछा करने वालों के घोड़ों के टापों की आवाजें सुनाई देने लगी जिससे उसे अपने को उसी जगह कहीं छिपाकर उनकी निगाहों से बच जाने का ख्याल छोड़ना पड़ा और वह उठ कर अपनी घोड़ी के पास गया तथा उसे तैयार कर और उसपर सवार हो वह आगे की तरफ बढ़ा॥

अभी वह मुश्किल से पांच सात कदम आगे बढ़ा होगा कि बेस का पैर यकायक एक गढ़े में जा पड़ा जिसपर डिक को

निगाह नहीं पड़ी थी और वह लुड़कती हुई उसी गड़हे के अन्दर जा पड़ी जो कि बहुत बड़ा था मगर पत्तियों से भरा रहने के कारण ऐसा मालूम नहीं होता था ॥

यद्यपि घोड़ी के साथ लुड़कता हुआ डिक भी उसी गड़हे में जा पड़ा मगर उसे कुछ ज्यादे चोट न आई क्योंकि एक तो बेस का पैर बहकतेही वह होशियार होगया था दूसरे नीचे की मिट्टी बहुत ही मुलायम और पत्तों के कारण गुदगुदी हो रही थी। कदाचित बेस को कुछ चोट आई हो मगर डिक ने उस समय इस बात का ऐसा ख्याल न कर बेस को जो उठ कर खड़े हो जाने लिये कोशिश कर रही थी कुछ ऐसा इशारा किया जिससे वह शान्त हो गई और उसी तरह चुपचाप लेटी रही। डिक को कई दफे इस तरह अपनी घोड़ी को लिटाकर पत्तों से ढांप देने तथा पीछा करने वालों की नजरों से बचाने का मौका पड़ चुका था इसलिये वह कुछ घबड़ाया नहीं और पत्तों से बेस तथा अपने को अच्छी तरह ढांक कर वह उसी बड़े गड़हे में बैठा हुआ डिक और उसके साथियों के आने का इन्तजार करने लगा ॥
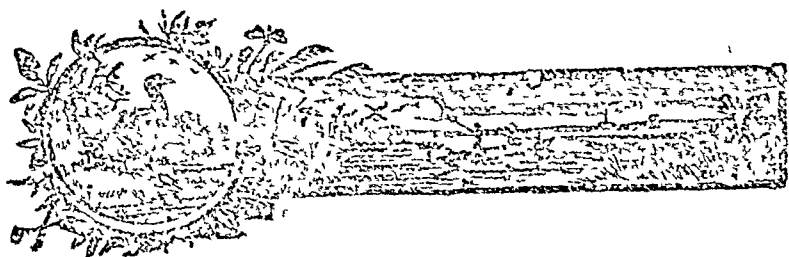
सत्ताइसवां बयान।

कई तरह की कोशिश और चालबाजी करने पर भी गर्टरूड डिक से अच्छी तरह मुलाकात न कर सकी क्योंकि पहिली ही मुलाकात गर्टरूड की चाची पिकी के आ जाने के कारण अधूरी हो गई थी और उसके बाद फिर गर्टरूड को डिक से मिलने या चीठी वगैरह लिखने का मौका ही न मिला जिसका कि एक कारण था॥

सोलहवें बयान में हम लिख आये हैं कि डिक ने बगीचे में जाकर गर्टरूड के पिता जानरंटन की अँगूठी तथा घड़ी छीन ली थी। यह भी लिखा जा चुका है कि उन दोनों औरतों में से जो उस समय जानरंटन के साथ थी एक उनकी नई ब्याही हुई स्त्री या गर्टरूड की पुरानी मजदूरनी थी। इस समय अब हम उसी तरफ का कुछ हाल लिखा चाहते हैं॥

जब डिक घड़ी और अँगूठी लेकर भागा तो कुछ देर तक तो रंटन को यह विश्वास रहा कि चोर पकड़ जायगा और उनकी अँगूठी तथा घड़ी उनके हाथ लग जायगी मगर जब कुछ देर बाद उन्हें एक प्रकार से इस बात का निश्चय हो गया कि अब जल्दी चोर का पकड़ा जाना तथा उनकी चीजों का उन्हें मिल जाना कठिन है तो लाचार उदास मन अपनी स्त्री तथा उसकी बहिन के साथ जो उस समय उनके साथ थी वे उस बगीचे से लौटे और अपने डेरे पर आ गए॥

दूसरा और तीसरा दिन भी उन्हें इसी झंझट में बीत गया और चोर का पता न लगा मगर चौथा दिन उनके लिये और

भी दुःखदाई हुआ क्योंकि उस दिन उन्हें और चीजों के साथ ही साथ अपनी स्त्री के भी गायब हो जाने का शोक उठाना पड़ा॥

बात यह थी कि यद्यपि आनरंटन की नई स्त्री को सब प्रकार का सुख था, अच्छे अच्छे गहने कपड़े थे, बेहिसाब दौलत की मालकिन हुई थी, अपने पति का अगाध प्रेम था और इन्हीं कारणों से बड़े बड़े अमीरों के यहां, यहां तक कि राजदर्बार में भी उसकी पहुंच हो गई थी पर तिसपर भी "तथापि काको न च राजहंसः" के समान आखिर तो वह एक नीच मजदूरनी ही थी। अस्तु शादी के दो ही तीन महीने बाद उसने एक नौकर से प्रेम कर लिया और अन्त में लन्दन आने पर एक दिन मौका पाकर वह बहुत से कीमती जेवर तथा जवाहिरात ले, अपनी तथा अपने पति की बदनामी का कुछ भी ख्याल न कर तथा ऐसी दौलत और सुख को लात मार वह उसी नौकर के साथ कहीं निकल गई॥

रंटन को इस बात का बड़ा ही दुःख हुआ और कई दिन तक तो वह घर से बाहर नहीं निकले, आखिर जब उनका दुःख तथा क्रोध कुछ शान्त हुआ तो उन्हें इस बात का ध्यान आकर सताने लगा कि इसी कम्बख्त की बदौलत उन्होंने अपनी बेकसूर लड़की तथा बहिन को घर से निकाल दिया और अब न जाने वे सब किस हालत में हैं॥

आखिर सोच विचार कर रंटन ने यही निश्चय किया कि खोज ढूँढ कर वह अपनी लड़की तथा बहिन से मिलें और उन्हें समझा बुझा कर जिस तरह हो सके फिर अपने साथ ही

रक्खें। साथ ही इसके उन्होंने इस बात का भी निश्चय कर लिया कि अब कभी शादी वगैरह की तरफ़ ख्याल भी न करेंगे और गर्टरूड जिसके साथ चाहे उसीके साथ उसकी शादी करके उसे अपना वारिस बनावेंगे॥

इन सब बातों का निश्चय करके एक दिन वे गर्टरूड से मिले और उसे समझा बुझा कर फिर एक साथ रहने को राजी कर लिया। गर्टरूड के साथ ही साथ उन्होंने अपनी बहिन प्रिस्किला (पिकी) से भी अपने कसूर की माफी चाही और अन्त में वे तीनों फिर पहिले की तरह मिलजुल के रहने लगे। गर्टरूड से रंटन ने इस बात का वादा किया कि जिस तरह से हो सकेगा वह रिचार्ड को खोज कर उसीके साथ उसकी शादी करा देंगे॥

इस प्रकार जब दिल की पुरानी मैल निकल गई तो गर्टरूड फिर अपने पिता तथा अपनी चाची के साथ अपनी पुरानी जगह लौट आई और यहीं ये तीनों फिर आनन्द के साथ रहने लगे मगर इन सब बातों से फ़ुरसत पाने बाद गर्टरूड को फिर डिक का ध्यान सताने लगा और वह फिर उसकी खोज ढूँढ में लगी तथा जानरंटन भी इस काम में उसकी मदद करने लगे॥

यही सबब था कि बहुत दिनों तक गर्टरूड को डिक से मिलने या पत्र व्यवहार करने का मौका न मिला और जब वह खाली हुई और एक प्रकार से सुखी भी हुई तो अब (उसकी समझ में) डिक का कहीं पता न था॥

अट्ठाइसवां बयान।

डिक को जेरी की राह देखते देखते बहुत देर बीत गई यहां तक कि वह घबड़ा उठा और उस गड्ढे में से निकला ही चाहता था कि यकायक फिर टापों की आवाज सुन कर वह चौंक पड़ा और कान लगा कर सुनने लगा॥

टापों की आवाज और साफ होने लगी जिससे मालूम होता था कि वे सवार नजदीक आ रहे हैं। आखिर थोड़ी ही देर बाद वे सब उस जगह आ पहुंचे। डिक ने अपने को पत्तों से इस ढंग पर छिपा रक्खा था कि वह कुछ कुछ सड़क पर से आने जाने वालों को देख सकता था मगर दूसरों को बिना बहुत गौर के साथ देखे या जांच किये इस बात का पता नहीं लग सकता था कि इन पत्तों के नीचे एक आदमी तथा एक घोड़ा छिपा हुआ है। अस्तु उसने उन सवारों पर निगाह डाली मगर उन सभों को देख उसे कुछ ताज्जुब हुआ क्योंकि उनमें से तीन तो जेरी तथा उसके दो साथी ही थे मगर चौथा आदमी उसका तथा हमारे पाठकों का जाना पहिचाना "जेक" था जिसका जिक्र इस किताब के पहिले तथा पांचवें बयान में आ चुका है और जिसे आशा है कि हमारे पाठक भूले न होंगे॥

जेरी तथा उसके साथियों की बुरी हालत हो रही थी। कपड़े सब गर्द से भरे हुए थे और चेहरे से पस्तहिम्मती और थकावट साफ झलक रही थी। उनके घोड़े भी उन्हीं की तरह थके तथा पसीने से तर हो रहे थे और मालूम होता था कि अब वे ज्यादा दूर तक जाने के लायक नहीं रह गए हैं॥

वे चारों आदमी उस जगह से जहां डिक छिपा था थोड़ी ही दूर आगे जाकर खड़े हो गए और जेरी ने गौर से चारों तरफ देख जेक से कहा, "क्यों जी! वह तो यहां कहीं भी नहीं दिखाई देता। तुमने उसको कहां देखा था?"

जेक०। जी हां इस समय तो वह कहीं भी नहीं दिखाई पड़ता। मैं उसी काम के लिये जिसका जिक्र कि अभी आप से कर चुका हूं इधर से जा रहा था तो वह (हाथ से बता कर) उसी टीले पर खड़ा उस लाश की तरफ देख रहा था। यह तो कहिये बड़ी खैर हुई कि मैं सड़क से दूर हटता और अपने को बचाता हुआ जा रहा था तथा उसे भी किसी सोच में डूबे रहने के कारण मेरी आहट न मिली इससे उसने मुझे नहीं देखा नहीं तो आज सचमुच मेरी आफत आ जाती॥

जेरी इसके जवाब में कुछ कहा ही चाहता था कि हवा का एक कड़ा झोंका आया और वह फांसी लटकती लाश इधर उधर हिलने लगी जिससे वह जंजीर जिसके साथ कि मुरदा लटक रहा था कड़कड़ाने लगी। जेरी ने यह देख कुछ बदली हुई आवाज में कहा, "खैर यह तो तुम्हें निश्चय ही है कि वह डिक ही था कोई दूसरा नहीं॥"

जेक०। बेशक वह डिक ही था। मैं उसके पहिचानने में धोखा नहीं खा सकता॥

जेरी०। तो फिर अब इस भयानक जगह पर रुक कर हमलोग क्यों बेफायदा अपना समय नष्ट करें। इससे तो यही अच्छा होगा कि आगे चलें शायद वह सड़क पर ही कहीं हो॥

यद्यपि इस बात का विश्वास नहीं हो सकता था कि डिक

इस तरह कहीं सड़क पर खड़ा उन्हें मिल जायगा तथापि जेरी के साथियों ने इस डरावनी जगह से हट जाने के खयाल से उसकी हां में हां मिलाई और थोड़ी ही देर बाद बिना किसी तरह की खोज ढूंढ़ किये वे सब उतनी तेज़ी के साथ जितना कि उनके घोड़े उन्हें लेजा सकते थे आगे की तरफ़ रवाना हुए॥

जब वे लोग दूर निकल गए और इस बात का डर नहीं रह गया कि उनमें से कोई उसे देख लेगा तो डिक उस गड़हे के बाहर निकला। पत्तियां वग़ैरह हटाकर उसने अपनी घोड़ी को भी बाहर निकाला और इस बात को जांचने लगा कि गड़हे में गिरने के कारण उसे कहीं चोट तो नहीं आई है। यह उसकी खुशकिस्मती थी कि बेस ने जब तक कि जेरी और उसके साथी वहां मौजूद थे कोई ऐसी हरकत नहीं की थी जिससे उन लोगों का ध्यान उस तरफ़ जाता॥

जब इस बात का निश्चय हो गया कि बेस को कहीं चोट नहीं आई है तो डिक का जी कुछ शान्त हुआ और वह उसी जगह बैठ कर अपने विषय में सोचने लगा॥

जेरी के उस तरफ़ आने का तो उसे कुछ खयाल न था क्यों वह तो उसका पीछा करता हुआ आ ही रहा था पर ज्यादा ताज्जुब उसे उन सभों के साथ जेक के होने का हुआ क्योंकि अभी तक वह उसे अपना दोस्त समझता था और इस बात का तो उसे स्वप्न में भी ध्यान न था "सैल" की तरह वह भी विश्वासघातक निकलेगा और उसे पकड़वा देने की कोशिश करेगा क्योंकि इस बात में अब उसे कुछ भी शक नहीं रहगया था कि जेक उसके दुश्मनों के साथ मिल गया है और उसे

पकड़वा देने की कोशिश कर रहा है॥

आखिर कुछ देर तक कुछ सोच विचार करने के बाद वह उठा और घोड़ी पर सवार हो फिर उसी तरफ चला जिधर पहिले आ रहा था या जिधर इस समय जेरी और उसके साथी तथा जेक गए थे॥

उनतीसवां बयान।

करीब तीन घंटे तक डिक बराबर बहुत ही तेजी के साथ उसी तरफ जाता रहा जिधर जेरी और उसके साथी गए थे। अब सवेरा होने में कुछ थोड़ीही देर थी। रास्ते में आते जाते लोगों पर डिक की निगाह पड़ रही थी जिससे अब वह अपना सफर बन्द करके दिन भर के लिये कहीं रुक जाया चाहता था क्योंकि अब उसे यह निश्चय था कि जेरी और उसके साथियों से उसकी मुलाकात न होगी। हम यह नहीं कह सकते कि जब जेरी और उसके साथी उसे पीछे छोड़ कर आगे बढ़ गए थे तो उसे फिर उनका पीछा करने की धुन क्यों सवार हुई थी। इसबात में तो कोई शक ही नहीं था कि अगर कहीं रास्ते में दोनों की मुलाकात हो जाती तो डिक को बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता और डिक भी इस बात को बखूबी सम-झता था मगर फिर भी डिक का एक तरह पर उनसे मुलाकात करने की कोशिश करना हमें भी ताज्जुब में डाल रहा है॥

आखिर जब दिन पूरी तरह पर निकल आया और जेरी वगैरह को डिक कहीं न पा सका तथा उसे अपने पहिचाने

जाने का भी डर होगया तो डिक ने रुक जाने का निश्चय कर लिया और इसी खयाल से वह एक गांव के नजदीक पहुंच एक बुड्ढे के झोपड़े के पास घोड़ी पर से उतर पड़ा और नजदीक जा उस बुड्ढे से जो दरवाजे पर बैठा कुछ कर रहा था पूछा, "क्यों जी! यार्क शहर इस जगह से कितनी दूर है?"

बुड्ढे ने कुछ देर तक डिक की तरफ विचित्र ढङ्ग से देखने के बाद कहा, "यहां से सिर्फ तीन कोस पर है॥"

यह सुनने से डिक को जो खुशी हुई वह बयान नहीं की जा सकती। यद्यपि वह इसके पहिले भी अपनी घोड़ी बेस की पीठ पर लम्बे लम्बे सफर कर चुका था मगर इतनी दूर, करीब सवा सौ मील जाने की नौबत कभी न आई थी। वह बड़े प्यार के साथ अपनी घोड़ी के पास गया और उसकी गरदन थपथपा कर रूमाल निकाल उसका बदन साफ करने लगा। यद्यपि इतनी दूर आने के कारण बेस बिलकुल ही थक गई थी और अब मालूम होता था कि वह सौ कदम जाने लायक भी नहीं रह गई है तथापि वह अपने मालिक को इस प्यार से अपनी गरदन थपथपाते देख खुश सी मालूम होने लगी और अपनी टापों से जमीन खोदने लगी॥

कुछ देर इसी तरह बेस का बदन साफ करने बाद डिक उस बुड्ढे के पास लौट आया और उससे दिन भर के लिये अपनी घोड़ी के सहित वहां टिकने की इजाजत चाही जिसके बदले में उसको भरपूर इनाम देने का भी उसने वादा किया॥

वह बुड्ढा नाममात्र को ही बुड्ढा था। न तो उसके मुँह के कोई दांत टूटे ही दिखाई देते थे, न उनकी दमक में ही वह फर्क

आया हुआ था जो कि प्रायः ज्यादः उमर वालों के दांतों में आ जाता है। हां उसकी कमर बहुत झुकी हुई थी और दूर से देखने वाला उसे बेशक बुड्ढा कह सकता था। इस बुड्ढे ने डिक की बात मंजूर कर ली और उसे अन्दर आकर कपड़े उतारने और सुस्ताने के लिये कहा। मगर डिक ने इसे मंजूर न करके पहिले अपनी घोड़ी को मलने दलने का इरादा किया और अपना यह इरादा बुड्ढे से जाहिर किया। बुड्ढे ने बेस की तरफ एक अजीब निगाह से देखकर कहा, "घोड़ी मालूम तो बहुत अच्छी होती है मगर बड़ी थकी हुई है, क्या आप बहुत दूर से आ रहे हैं?"

डिक०। हां मैं बहुत ही दूर लन्दन से आ रहा हूं॥

इतना कहने के साथ ही डिक रुक गया क्योंकि उसे इस बात का डर हुआ कि कहीं वह बुड्ढा उसे पहिचान न ले और आखिर ऐसा हुआ भी। उस बुड्ढे ने डिक की बात सुन तथा उसकी हिचकिचाहट देख कहा, "तुम मशहूर डाकू डिक टर्पिन तो नहीं हो? यह घोड़ी भी मुझे बेस ही मालूम होती है? बेशक तुम डिक ही हो॥"

डिक को इसके जवाब में हिचकिचाते देख उस बुड्ढे ने कहा, "कोई घबड़ाने की बात नहीं है। मैं तुम्हारा भेद न खोलूंगा, तुम डरो मत। मैं तुम्हारे ऐसे सच्चे बहादुरों की दिल से कदर करता हूं। अच्छा अब पहिले तुम्हारी घोड़ी का कुछ इन्तिजाम करूं और उसे किसी ऐसी जगह छिपाऊं जहां उसका जल्दी किसी को पता न लगे॥"

इतना कह कर वह बुड्ढा उठा और अपनी झोपड़ी के

पिछवाड़े की तरफ चला गया, थोड़ी देर बाद डिक को उसने आवाज दी और जब डिक उसके पास गया तब इशारे से जमीन की तरफ बता कर उसने कहा, "यह जो गड्ढा या ढाल तुम देख रहे हो वास्तव में इस झोपड़े के नीचे की एक गुप्त कोठरी में जाने का दर्वाजा है। (उंगली से बता कर) यह तख़्ता इसके मुंह पर ढांप देने तथा ऊपर से मिट्टी डाल देने से जल्दी किसी को इस कोठरी का पता नहीं लगसकता। अस्तु अगर तुम अपनी घोड़ी को इस नीचे वाली कोठरी में लेजा सको तो बहुत ही अच्छा हो क्योंकि तुम्हारी घोड़ी के लिये इससे अच्छी छिपाने की जगह मैं कोई नहीं सोच सकता॥"

उस गड्ढे का मुंह अथवा कोठड़ी में जाने का दर्वाजा काफी चौड़ा और इस लायक था कि थोड़ी ही तकलीफ से घोड़ा उसके अन्दर जा सकता था इस लिये डिक ने बेस के अन्दर चले जाने में तो कोई शक न किया मगर ऐसा करने के पहिले उसने उस कोठड़ी को अपनी आंख से देख लेना चाहा। यह सोच उसने उस बुड्ढे से कहा, "आप की इस मेहरबानी का मैं बड़ा ही अनुगृहीत हुआ पर घोड़ी यहां लाने से पहिले मैं इस कोठड़ी को अन्दर से एक बार देख लिया चाहता हूं॥"

"हां हां खुशी से!" कहता हुआ वह बुड्ढा उस ढाल अथवा गड्हे के अन्दर उतरा और पांच ही सात कदम आगे जाने बाद डिक ने अपने को एक खुलासा कोठड़ी के अन्दर पाया। यद्यपि वहां बड़ा अन्धकार था मगर उस बुड्ढे ने कहीं से खोज कर एक मोमबत्ती बाली और उसी की रोशनी में डिक ने अपने

को एक लम्बी चौड़ी और संगीन कोठड़ी के अन्दर पाया। कोठड़ी में एक कोने की तरफ थोड़ी घास वगैरह भी पड़ी हुई थी जिसे देख डिक को विश्वास हो गया कि इसके पहिले भी यह कोठड़ी अस्तबल के काम में लाई जा चुकी है। कोठड़ी की बाईं दीवार में एक दर्वाजा दिखाई दे रहा था जिसे देख डिक को उसके अन्दर एक और कोठड़ी के होने का गुमान हो रहा था मगर उस बुड्ढे ने उसे ज्यादे देर तक उस कोठड़ी में रहने न दिया और यह कहता हुआ डिक के साथ बाहर निकल आया कि "बस चलो बेस को पहिले यहां ले आ लें क्योंकि ताज्जुब नहीं कि राह चलता कोई उसे देख कर पहिचान ले तो तुम्हें फिर आफत में पड़ना पड़ेगा॥"

थोड़ी ही मुशकिल में डिक बेस को उस कोठड़ी के अन्दर ले आया और उसे मलदल तथा उसके आगे दाना घास वगैरह रख डिक और वह बुड्ढा दोनों उस कोठड़ी के बाहर निकल आए। बाहर निकल कर उस बुड्ढे ने एक काठ का तख़्ता जो उसी जगह पड़ा हुआ था उठा कर उस गड़हे के मुंह पर रख दिया। इसके बाद डिक की मदद से उसने पास ही से मिट्टी उठा कर उस तख़्ते पर डाल दी और तब कुछ दूर पड़े हुए बहुत से मिट्टी के बड़े बड़े ढेले जिनके ऊपरी हिस्से पर घास जमी हुई थी उठा कर इस ढंग से उस तख़्ते और मिट्टी के ऊपर रख दिये कि थोड़ी ही देर में इस बात का शक करना भी कठिन हो गया कि उस जगह से कहीं नीचे वाली कोठड़ी में जाने का दर्वाजा है॥

डिक कुछ दूर खड़ा ताज्जुब के साथ बुड्ढे के काम को देख

रहा था। इतने लंबे सफर का असर अब उसके ऊपर मालूम हो रहा था। उसकी आंखें बन्द होती आ रही थीं तथा बदन में बेहिसाब दर्द मालूम पड़ रहा था और पैरों में मालूम होता था कि उसका बोझ संभालने की ताकत नहीं रह गई है यहां तक कि जब वह बुड्ढा अपना काम समाप्त करके डिक के पास आया तो उसने उसे आधी बेहोशी की हालत में जमीन पर पड़े हुए पाया॥

बुड्ढे ने पहिले तो डिक को जगाने की कोशिश की मगर जब उसकी नींद न टूटी तो अपनी असाधारण ताकत का परिचय देते हुए उसे अपने दोनों हाथों पर उठा लिया और लिये हुए अपने झोपड़े के अन्दर ला एक बिछौने पर लिटा दिया तथा झोपड़े का दर्वाजा बन्द कर दिया॥

यह झोपड़ा बाहर से जैसा टूटा फूटा और रद्दी हालत में था उतना अन्दर से न था और उसकी बाईं तरफ वाले हिस्से में एक और कोठड़ी थी जिसका दर्वाजा इस समय बन्द था। कुछ देर तक उस बुड्ढे ने डिक के जागने का इन्तजार किया मगर जब उसकी नींद खूब हिलाने डुलाने तथा आवाज देने पर भी नहीं खुली तो उसे सोने देना अच्छा समझ वह फिर उठा और साथ वाली कोठड़ी का दर्वाजा खोल डिक को पहिले की तरह उठा उस कोठड़ी में ले गया॥

इस कोठड़ी के बीचोबीच में एक लोहे का विचित्र ढङ्ग का पलंग रक्खा हुआ था। बूढ़े ने डिक को उसी पलंग पर लिटा दिया और आप कुछ दूर हट कर दीवार के साथ रक्खी हुई एक कुर्सी पर बैठ कुछ सोचने लगा॥

इस कोठड़ी की दीवार तख़्तेबन्दी की थी और फ़र्श भी लकड़ी ही का बना हुआ था। इस समय सिवाय उस पलंग और कुर्सी के उस कोठरी में और किसी तरह का सामान न था परन्तु गौर से देखने से मालूम होता था कि किसी समय वह कोठरी बहुत ही अच्छी तरह सजी हुई थी और किसी अमीर आदमी के रहने लायक थी मगर जो आदमी इस झोपड़े को सिर्फ बाहर ही से देखता या पहिली कोठड़ी पर निगाह डालता उसे यह विश्वास नहीं हो सकता था कि अन्दर वाली कोठरी अच्छी तरह और आराम से रहने लायक है॥

बूढ़ा कुर्सी पर बैठा कुछ सोच ही रहा था कि बाहर से दर्वाजा खटखटाने की आवाज आई जिसे सुनते ही वह चौंक उठा और धीरे से बोला, "मालूम होता है कि कम्बख़्त आपहुंचे। ख़ैर कोई हर्ज नहीं अब वे इनका पता नहीं पा सकते॥"

इतना कह कर उस बूढ़े ने बड़े प्यार की नजर से छिक की तरफ़ देखा और इसके बाद उठ और उस कोठड़ी का दर्वाजा अन्दर से बन्द कर उस पलंग के सिरहाने की तरफ़ आया जिस पर छिक लेटा हुआ था। वहां पहुंच कर उसने कोई ऐसी तर्कीब की कि जमीन का उतना हिस्सा जिस पर पलंग रक्खा हुआ था सिरहाने की कुछ जमीन के साथ धीरे धीरे नीचे की तरफ़ खसकने लगा। बूढ़े ने यह देख खुशी के साथ कहा, "शुक्र है कि मेरी इतने दिनों की मेहनत आज काम आई॥"

जब जमीन का खसकना बन्द हो गया याने जब वह हिस्सा अपनी हद्द तक नीचे उतर आया तो बूढ़ा उस पर से उतर आया और सिर उठा कर ऊपर की तरफ़ देखने लगा। मालूम

हुआ कि वह कोई दस हाथ के करीब नीचे उतर आया और अब एक दूसरी कोठड़ी की जमीन पर है जिसमें ऊपर की तरफ खुला हो जाने के कारण इस समय बखूबी चांदना था। बूढ़े ने इस समय इस नीचे वाली कोठड़ी की हालत पर ज्यादा गौर न किया। उसने जोर लगा कर वह पलंग जिस पर डिक लेटा हुआ था इस कोठड़ी की जमीन पर घसका दिया और इसके बाद फिर उसी जगह खड़ा हो कर जहां पर खड़े होकर उसने किसी ढङ्ग से पलंग को या जमीन के उतने टुकड़े को यहां तक पहुंचाया था कोई ऐसी तरकीब की जिससे उतना हिस्सा फिर उसी तरह ऊपर की तरफ उठने लगा और थोड़ी ही देर में ऊपर वाली कोठड़ी की जमीन के साथ आ लगा। अब इस समय इस बात का पता भी नहीं लग सकता था कि उस जगह जहां बुड्ढा खड़ा था कोई पलंग वगैरह था जो कि ऐसे विचित्र ढंग से नीचे पहुंचा दिया गया है॥

इस काम में बुड्ढे को एक दो मिनटों से ज्यादा नहीं लगा था मगर इसी बीच में बाहर वाले दरवाजे पर लगातार धक्का पड़ रहा था और कोई इस दर्वाजे को खोल या तोड़ कर अन्दर आने की कोशिश कर रहा था, अस्तु उस बुड्ढे ने एक दफे बड़े गौर से झुक कर नीचे की जमीन देखी मानो बात का पता लगाना चाहता है कि किसी निशान वगैरह से इस बात का पता तो नहीं लग सकता कि वह हिस्सा जिस पर पलंग रक्खा हुआ था जमीन के बाकी हिस्से से अलग या किसी यंत्र के सहारे पर है मगर जब इस बात का कोई निशान उसे न मिला यहां तक कि कोई दरार भी उसे न दिखाई पड़ी तो वह

सन्तुष्टता की मुद्रा से सिर हिलाकर यह कहता हुआ कि "उन सभों को इस बात का पता बल्कि गुमान भी नहीं हो सकता कि यहां पर कोई पलंग रक्खा हुआ था और वह किसी ढंग से नीचे पहुंचा दिया गया है।" उसके कोठड़ी का दर्वाजा खोल बाहरवाली कोठड़ी में आ पहुंचा और उसका भी दर्वाजा खोलने के लिये दर्वाजे की तरफ बढ़ा॥

तीसवां बयान।

ऊपर लिखा जा चुका है कि जानरंटन ने गर्टरूड को रिचार्ड का पता लगाने में मदद देने का वादा किया था अस्तु अपने पिता की मदद से गर्टरूड ने थोड़ी ही कोशिश में अपने प्रेमी रिचार्ड (डिक) के दोस्त पीटर का पता लगा लिया जो कि अब अपनी सराय का काम बन्द कर कहीं और रहा करता था। पाठकों को याद होगा कि "एपिंग" के जंगल में पीटर ने डिक से शर्त की थी कि जिस तरह से हो सकेगा गर्टरूड को उसी जंगल में लाकर डिक से उस की मुलाकात करावेंगे परन्तु डिक के एपिंग से चले आने के कारण अभी तक वह यह काम कर न सका था। इसलिये जब उसने गर्टरूड को स्वयम् डिक से मिलने की कोशिश करते पाया तो वह खुशी से उसे इस काम में मदद देने को तैयार होगया क्योंकि ऐसा होने अर्थात् डिक के गर्टरूड से मिलने पर उसे एक हजार रुपये मिलते। अस्तु उसने गर्टरूड से इस बात का वादा किया कि जिस तरह हो सकेगा वह रिचार्ड का पता लगाकर जल्द ही

उसे ख़बर देगा । गर्टरूड को यह सुनकर कुछ आशा हुई और वह पीटर के ही ऊपर इस काम को छोड़ कर चुपचाप बैठ रही ॥

डिक का पता लगाने की नीयत से पीटर ने पहिले तो टामी के घर की तरफ़ जाने का इरादा किया मगर उसे इसकी ज़रूरत न पड़ी क्योंकि उसके दूसरे ही दिन टामी तथा नौल के मारे जाने और डिक के यार्क की तरफ़ भाग जाने की खबर लोगों में बड़ी गर्मी के साथ फैल गई और पीटर ने भी इस खबर को सुन "यार्क" ही जाने का निश्चय किया क्योंकि वह जानता था कि डिक पहिले कुछ दिन यार्क में रह चुका है और इस लिये उसका यार्क जाना अथवा जाने की कोशिश करना स्वाभाविक है ॥

लोगों से पूछता तथा पता लगाता हुआ तीसरे रोज पीटर उस गांव में पहुंचा जहां के आगे से डिक का कुछ पता न लगा था अर्थात् जहां से कुछ ही आगे बढ़ने पर डिक तथा जेरी वगैरह को वह टीला मिला था जहां फांसी लटकते हुए आदमी को उन्होंने देखा था । जब उस जगह से आगे डिक का पता लगाना मुश्किल हो गया तो पीटर ने वहां से सीधे यार्क ही जाने का निश्चय किया और वहां से पूछता हुआ वह सीधा यार्क की तरफ़ चला ॥

दूसरे रोज भाग्यवश वह यार्क से कुछ मील इधर ही उसी बूढ़े के झोपड़े के पास पहुंचा जहां डिक उतरा था और जिस का हाल ऊपरवाले बयान में लिखा जा चुका है । इस समय वह बूढ़ा अकेला अपने झोपड़े के दर्वाजे पर बैठा हुआ था ।

पीटर उससे भी कुछ दरियाफ़ करने की नीयत से उसकी तरफ बढ़ा ही था कि उसने सिर उठा कर पूछा "क्यों जी, किसको खोजते हो ?"

पीटर ने जवाब दिया, "मैं अपने एक दोस्त की तलाश में हूं। उसने मुझसे कहा था कि मैं यार्क जाता हूं मगर यार्क में तो उसका कहीं पता नहीं लगा इसीसे आपसे यह पूछा चाहता हूं कि पांच छः दिन हुए आपने किसी सवार को इधर से जाते हुए देखा है या नहीं॥"

बूढ़े ने शक की निगाह से पीटर को देखते हुए पूछा, "तो उस दोस्त से मिले बिना तुम्हारा ऐसा कौन सा काम रुका हुआ है जिसके लिये तुम हरएक से पूछते फिरते हो कि 'तुम ने किसी सवार को जाते देखा है?' आखिर आज नहीं तो दो चार दिन में वह तुमसे मिल ही लेगा॥"

पीटर बूढ़े को इस तरह से जिरह करते देख घबड़ा गया और कुछ बात बनाया ही चाहता था कि बूढ़े ने फिर पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है॥"

पीटर०। मुझे लोग पीटर कहते हैं॥

पीटर का नाम सुन उस बूढ़े ने गौर से उसकी तरफ देखा और पूछा, "तुम तो पहिले लन्दन के नजदीक एक सराय में काम करते थे॥"

पीटर०। जी हां! मैं उस सराय का मालिक था। मगर आपको यह कैसे मालूम हुआ?

बूढ़े ने उसकी इस बात का जवाब कुछ न दिया और उसको अन्दर आने का इशारा करके झोपड़े के अन्दर की तरफ चला।

अन्दर जाकर उसने पीटर को एक कुर्सी पर बैठने को कहा और उसे वहीं ताज्जुब करते हुए छोड़ बगलवाली दूसरी कोठड़ी का दर्वाजा खोल उसके अन्दर चला गया और अन्दर से दर्वाजा बन्द कर लिया ॥

इस समय वह कोठड़ी पहिले की सी हालत में न थी बल्कि कई तरह की तस्वीरों तथा और सामानों से अच्छी तरह सजी हुई थी और एक कुर्सी पर बैठा हुआ डिक कोई किताब पढ़ रहा था। उसने आहट पा घूम कर पीछे की तरफ देखा और बूढ़े को आते देखकर पूछा, "क्यों क्या है?"

बूढ़े ने जवाब दिया, "एक आदमी तुमको खोजता हुआ आया है॥"

डिक ने आश्चर्य्य के साथ पूछा, "मेरे को खोजता हुआ! वह कौन आदमी है?"

बूढ़ा०। वह अपना नाम "पीटर" बतलाता है॥

पीटर का नाम सुनते ही डिक चौंक पड़ा मगर अपने को सम्हाल कर बोला, "अच्छा मैं उससे मिलूंगा॥"

बूढ़ा०। तो मैं उसे इसी जगह ले आता हूं॥

यह कहता हुआ बूढ़ा कोठड़ी के बाहर निकल गया और थोड़ी ही देर में पीटरको साथ लिये हुए आकर डिक के सामने खड़ा हो गया॥

इकतीसवां बयान ।

पीटर डिक को देखकर चौंक पड़ा । इस पांच हो सात दिन में उसके चेहरे में इतना फर्क पड़ गया था कि अगर वह बुड्ढा पीटर को यह न कह दिये होता कि "मैं तुम्हें डिक के पास ले चलता हूं तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह जल्दी डिक को पहिचान न सकता । डिक ने उसकी तरफ देख हँस कर कहा, "आओ यार बहुत दिनों के बाद तुमसे मुलाकात हुई है मगर यह तो कहो कि तुम्हें मेरा पता क्योंकर लगा ? आओ इस कुर्सी पर बैठो ॥"

पीटर० । (बैठकर) सो तो मैं तुम्हें इतने ही में कहे देता हूं कि इधर उधर पूछते पाछते मैं यहां तक आ पहुंचा और यहां (बूढ़े की तरफ बता कर) इनकी मेहरबानी से तुमसे मुलाकात कर सका मगर तुम कहो कि क्या क्या हुआ और तुम जेरी के हाथ से क्योंकर बच सके ॥

डिक० । (बूढ़े की तरफ देख कर) बस इन्हीं की कृपा से इस बार मैं बच सका नहीं तो अबकी जेरी ने मुझे बेतरह फांस लिया था अच्छा मैं तुम्हें सब हाल सुनाता हूं ॥

इतना कह कर डिक ने अपना पूरा पूरा हाल टामी के मारे जाने और जेरी के पीछा करने से लेकर इस बूढ़े के झोपड़े में आने और मदद मांगने तक का कह सुनाया जिसे कि हमारे पाठक पढ़ चुके हैं । इसके बाद कहा, "बस इससे ज्यादे मैं कुछ नहीं कह सकता क्योंकि इतनी दूर बराबर घोड़े पर सवार तेजी के साथ आने और पूरी तरह से सुस्ता न सकने

के कारण में बिलकुल ही सुस्त और बदहवास हो रहा था और मुझे कुछ भी याद नहीं कि फिर क्या हुआ। (बूढ़े की तरफ बता कर) मैंने इनसे कई दफे पूछा कि इसके बाद क्या हुआ और मैं क्योंकर इस जगह आ पहुंचा मगर न तो ये कुछ बताते ही हैं और न मुझे इस कोठड़ी से बाहर ही निकलने देते हैं ॥"

यह सब हाल सुनकर पीटर को बड़ी खुशी हुई और आगे हाल जानने के लिये उसने उस बूढ़े से कहा, "यह सब आप ही की कृपा का फल है कि मैं अपने दोस्त को इस जगह पा रहा हूं नहीं तो अब तक न जाने क्या हो गया होता। अब आप मेहरबानी करके यह बताइये कि जितना हाल इन्होंने अभी कहा है उसके आगे क्या हुआ और जेरी ने फिर इनका पीछा किया या नहीं ॥"

बूढ़े ने कहा, "अच्छा मैं सब हाल आपसे कहता हूं। यह कोई लम्बी चौड़ी कथा नहीं है और न कोई ताज्जुब की ही बात है जिसे जानने के लिये आपलोग इतना घबड़ा रहे हैं?

"जब ये (डिक) यहां आये और इन्होंने मेरी मदद चाही तो मैं किसी कारण से इन्हें मदद देने को तैयार हो गया। इस कोठड़ी के नीचे जिसमें इस समय हमलोग बैठे हैं ठीक इतनी ही बड़ी एक और कोठड़ी है जोकि सङ्गीन और बहुत मजबूत बनी हुई है तथा उसके साथ सटी हुई एक और कोठड़ी भी है जोकि(हाथ से बता कर)इस पहिली कोठड़ी के नीचे पड़ती है। इन दोनों कोठड़ियों में जाने का रास्ता इस झोपड़े (या जो कुछ आप इसे समझें) के पीछे की तरफ से है और वह इस ढंग

से बना हुआ है कि घोड़ा वगैरह जानवर भी उस नीचे वाली कोठड़ी में ले जाये और रक्खे जा सकते हैं। किसी कारण से जो मैं थोड़ी देर बाद आपसे बयान करूँगा मैंने यह झोपड़ा इसके असल मालिक से मोल ले लिया और अपने ढंग का बना डाला था। अस्तु जब डिक ने मुझसे मदद मांगी तो मैंने इनकी घोड़ी को उसी बाहर वाले रास्ते से इस नीचे वाली कोठड़ी में पहुंचा दिया और उस रास्ते को इस ढंग पर छिपा दिया कि जल्दी किसी को पता नहीं लगा सकता था। इसके बाद मैं डिक को जो थकावट वगैरह के कारण बेहोश से हो रहे थे इस कोठड़ी में ले आया और (हाथ का इशारा कर) उस पलंग पर लिटा दिया॥

"यह पलंग जो आप देख रहे हैं इस ढंग का बना हुआ है कि तर्कीब करने से उसके नीचे का उतना हिस्सा जिस पर पलंग रक्खा हुआ है इस कोठड़ी की जमीन से हट कर नीचे वाली कोठड़ी की जमीन तक पहुंचाया जा सकता है जहां कि यह पलंग का उतने हिस्से पर रक्खी हुई कोई चीज सहजही में नीचे वाली कोठड़ी की जमीन पर उतारी या घसकाई जा सकती है। अस्तु ज्यादा हिफाजत के ख्याल से मैंने उसी तर्कीब से इनको पलंग समेत उस नीचे वाली कोठड़ी में पहुंचा दिया। आइये मैं आपको भी वह दिखलाऊँ॥"

इतना कहकर वह बुड्ढा अपनी जगह से उठा और कोठड़ी का दर्वाजा बन्द करने बाद डिक तथा पीटर को लिये हुए उस पलंग के पास चला गया। वहां जाकर उसने कोई तर्कीब करके पलंग को नीचेवाली कोठड़ी की जमीन के साथ पहुंचा दिया

जहां जाकर ये तीनों उस हिस्से पर से उतर पड़े और ताज्जुब के साथ इधर उधर देखने लगे। उस कोठड़ी में कोई खास बात न थी और न वह कुछ सजी हुई ही थी हां उसकी दाहिनी तरफ वाली दीवार में एक दर्वाजा जरूर दिखाई दे रहा था जिसके विषय में डिक तथा टाली ने सोच लिया कि उस बगल वाली कोठड़ी में जाने के लिये होगा॥

बूढ़े ने उन दोनों को वह तर्कीब भी बताई जिसके करने से पलंग नीचे उतरता था। उस में कोई ज्यादा विचित्रता न थी। जिस प्रकार बड़े बड़े गुदामों में माल असबाब ऊपर या नीचे की मंजिल में पहुंचाने के लिये कोठड़ियां सी बनी रहती हैं जो ऊपर नीचे आया जाया करती हैं उसी ढंग पर कोठड़ी का उतना हिस्सा भी बना हुआ था। बूढ़े ने सब दिखा कर कहा, "यह सब मैंने अपने हाथ से और बिना किसी की मदद के बनाया है॥"

यह सब देख कर वे दोनों फिर ऊपर वाली कोठड़ी में आगये। वहां आकर बूढ़े ने फिर कहना शुरू किया:—

जिस समय डिक यहां आ रहे थे तो इन्हें जेरी ने एक होटल की खिड़की में से देख और पहिचान लिया था जहां वह कुछ देर सुस्ताने की नीयत से ठहर गया था अस्तु वह वहीं से अकेला तथा छिपता हुआ बराबर इनका पीछा करता हुआ चला आया। उसके और साथियों ने साथ आने से इनकार कर दिया था और उसकी इतनी हिम्मत न थी कि वह अकेला डिक का मुकाबिला करता अस्तु जब उसने डिक को इस गांव के पास आते देखा तो छिपता हुआ आगे बढ़ गया और गांव की पुलिस को होशियार करके बाहर जाने की सब सड़कें रुकवा

दीं । इसके बाद वह सब जगह ढूंढता फिरता इस झोपड़े में भी आ पहुंचा और यहां का दर्वाजा खटखटाने लगा क्योंकि डिक के यहां होने का उसे किसी तरह पर कुछ शक हो गया था । मैंने दरवाजा खोल दिया और उसे मनमानती तलाशी कर लेने दिया क्योंकि मुझे निश्चय था कि वह कभी उस छिपी हुई कोठड़ी का पता पा न सकेगा । आखिर ऐसा ही हुआ और अन्त में वह हार मान कर यहां से चला गया ॥

इतना कह कर बूढ़ा चुप हो गया और डिक तथा पीटर का मुंह देखने लगा । कुछ देर तक तो वे दोनों ताज्जुब में भरे चुपचाप बैठे रहे और इसके बाद डिक ने कहा, "इसमें कोई भी शक नहीं कि आपने मेरी जान बचाई । अगर आप ऐसे समय में मेरी मदद न करते तो चोरी कदापि मुझे न................"

बूढ़े ने डिक को और कुछ कहने से रोक कर कहा, "अच्छा अच्छा बहुत तारीफ करने की जरूरत नहीं है । मैं एक और बात कहा चाहता हूं ॥"

डिक० । वह क्या ?

बूढ़ा० । (डिक के हाथ में एक अंगूठी रख कर) देखो इस अँगूठी को पहिचानते हो ?

यह वही अंगूठी थी जिसे डिक ने लन्दन में जानरंटन से बगीचे में छीनी थी अस्तु डिक ने उसे देखते ही पहिचान लिया और कहा, "हां मैं इसे बखूबी पहिचानता हूं । इस अंगूठी को लन्दन में मैंने एक अमीर से छीना था और एक बूढ़े को इनाम में दिया था ॥"

बूढ़ा० । उस बूढ़े ने क्या किया था ॥

डिक०। जिस प्रकार आपने मुझे मदद दी है उसी तरह से उस बुड्ढे ने भी मुझे मदद दी थी। अगर वह मुझे उस रात छिपने और सोने की जगह न देता तो ताज्जुब नहीं कि पुलिस को मेरा पता लग जाता और मैं गिरफ़ार कर लिया जाता (उस समय का सब हाल सुना कर) अगर अब वह बुड्ढा मुझे दिखा जाय तो मैं उसे और भी बहुत कुछ इनाम दूं॥

बुड्ढा०। क्या तुम यह सच्चे मन से कह रहे हो?

डिक०। बेशक॥

बुड्ढा०। अगर ऐसा ही है तो तुमने अभी तक मुझे पहिचाना क्यों नहीं?

डिक ने यह सुन चौंक कर उस बुड्ढे की तरफ़ नजर उठाई तथा फिर अच्छी तरह देखने की गरज से नज़दीक जाकर देखा और यकायक चिल्ला कर बोल उठा, "बेशक तुम वही हो। इसमें कोई शक नहीं कि उस समय भी तुमही ने मेरी मदद की थी और इस दफे तो मेरी जानही बचाई है, मुझे बराबर शक होता था कि तुम्हें कहीं देखा है मगर अभी तक ख्याल नहीं आता था। अब तुम से यह कहना या पूछना तो कि "बतलाओ मैं तुम्हारे लिये क्या करूं?" मेरी बेवकूफी ही होगी क्योंकि इस समय तो मैं स्वयम् तुम्हारे आश्रित हो रहा हूं परन्तु फिर भी मैं यह कहने से बाज न आऊंगा कि तुम जो काम कहो मैं उसे पूरा करने की यदि इस समय नहीं तो आगे चल कर जरूर कोशिश करूंगा॥"

जब तक इस तरह से डिक अपनी कृतज्ञता जाहिर करता रहा तब तक वह बुड्ढा चुपचाप बैठा सुनता रहा और इसके

बाद बोला, "अच्छा तो ख्याल रखना जो मैं कहूंगा वह तुम्हें करना पड़ेगा ॥"

डिक० । हां हां जरूर, मैं कभी भी तुम्हारे हुक्म से मुंह न मोड़ूंगा । जो कहो सो मैं करने को तैयार हूं ॥

बूढ़ा० । इस समय तो मुझे कुछ भी नहीं चाहिये हां आगे चल कर कभी न कभी मैं तुम्हें इस प्रतिज्ञा की याद अवश्य दिलाऊंगा । अच्छा ठहरो मैं अभी आता हूं ॥

इतना कह कर बूढ़ा कोठड़ी के बाहर निकल गया और दर्वाजा भिड़काता गया । थोड़ी ही देर बाद दर्वाजा फिर खुला और डिक तथा पीटर ने सोचा कि वही बुड्ढा आता होगा मगर उनके ताज्जुब का कोई हद्द न रहा जब उन्होंने लीना को कोठड़ी के अन्दर आता पाया ॥

बत्तीसवां बयान ।
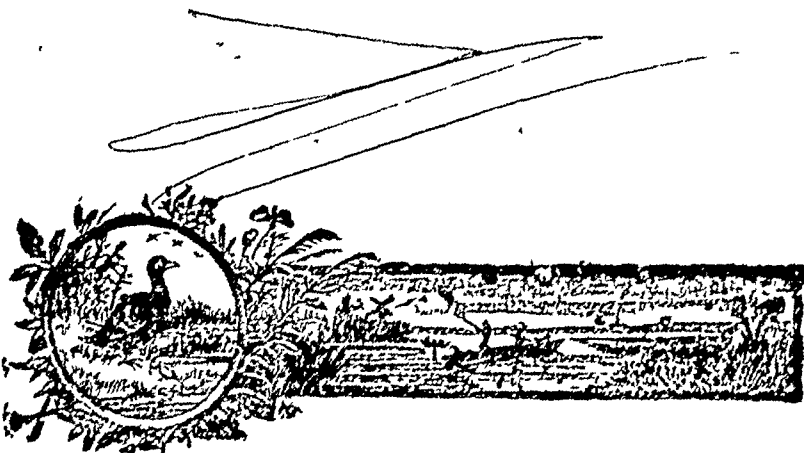
लीना को देखते ही दोनों चौंक पड़े और डिक को तो इतना ताज्जुब मालूम हुआ कि वह अपनी जगह से उठ कर खड़ा हो गया और लीना की तरफ देखता हुआ बोला, "हैं! लीना! तुम यहां कहां !"

लीना ने हंसते हुए जवाब दिया, "जहां तुम वहां मैं ॥"

डिक० । (और भी ताज्जुब से) तो क्या तुम बहुत देर से मेरे साथ हो ?

लीना० । बहुत देर से नहीं बल्कि बहुत दिनों से ॥

डिक० । अब तुम इन पेचीली बातों को तो छोड़ो और सब बात साफ साफ कहो । अगर तुम मेरे साथ थीं तो इतने दिनों तक मुझसे मिली क्यों नहीं ?

लीना० । मैं तो बराबर ही तुम्हारे साथ थी और अभी दो मिनट भी नहीं हुई कि मैं तुमसे बात कर चुकी हूं ॥

अब डिक के ताज्जुब का कोई हद्द न रहा और उसने घबड़ा कर लीना से कहा, "तो क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि तुम्हीं ने बूढ़े का रूप धरा था ?"

लीना ने पास की एक कुर्सी पर बैठ कर कहा, "हां मैंने ही तुम्हें मदद देने के इरादे से ऐसा किया था । मगर तुम्हें इतना ताज्जुब क्यों और किस बात पर हो रहा है ?"

डिक ने कुछ शान्त हो कर कहा, "अच्छा तुम साफ साफ कहो कि तुम्हारे ऐसा करने का सबब क्या है और तुम क्यों कर यहां तक पहुंचीं ॥"

लीना०। मैं सब हाल कहती हूं। यह तो तुम्हें मालूम ही हो गया होगा कि अब जेक तुम्हारा साथी नहीं है बल्कि दुश्मनों से मिल गया है ॥

डिक०। हां अब तो मुझे इस बात का विश्वास होगया है ॥

लीना०। अच्छा, तो वह आज कल या कुछ थोड़े दिनों से तुम्हारा दुश्मन नहीं है बल्कि बहुत दिनों से है। मुझे किसी तरह से इस बात का पता लग गया था और मैंने यह सोच कर कि दुश्मनों में से किसी के साथ मिल जाने से उनकी चालों का पता अच्छी तरह लग सकता है उससे मुलाकात कर ली। तुम को शायद ख्याल हो कि जब पहिले पहिल तुमने जानरंटन पर हाथ साफ करने के इरादे से उनकी गाड़ी रोकी थी तो रात को गाड़ी में जा कर थैली निकाल लाने पर उस में कंकड़ पत्थर ही पड़े पाये थे* ॥

डिक०। हां हां मुझे बखूबी याद है। अभी तक इस बात का पता न लगा कि वह कार्रवाई किसने की थी ॥

लीना०। वह जेक कीही करतूत थी। उसी ने तुम्हारे वहां पहुंचने के कुछ ही पहिले पहुंच कर सब रुपये ले लिये थे। मुझे तो वह अपने मेल का समझता था इससे उसने वह सब हाल मुझसे कह दिया और जब मैंने उन बातों का जिक्र तुमसे किया तो तुम मुझे कोई आश्चर्य्यजनक जीव समझने लग गये थे ॥

डिक०। हां मुझे याद है। जब मैं टामी के कहे मुताबिक मौल को उसका हाल कहने के लिये एपिङ्ग से निकला था तो

*नोट—बयान तीसरा ।

अजूलकी में तुमसे मुलाकात हुई थी और उसी जगह तुमने कई तरह की विचित्र बातों के साथ ही साथ इस बातका भी ज़िक्र किया था। उस समय तो मैं सचमुच तुम्हें कोई जादूगर नो ही समझने लग गया था॥†

लीना०। (मुसकुराती हुई) हां ठीक है मगर वे सब बातें मैंने तुम्हें धोखा देने और कुछ डराने के खयाल से ही कही थीं। खैर, उसके बाद मैंने एक दफे तुम्हें यह बात बतलाई थी कि तुम्हारे ही हाथ से टामी की मौत होगी॥‖ वह भी असल में मेरा ख्याल ही ख्याल था क्योंकि जेकने मुझसे कहा था कि जिस तरह से हो सके वह तुम से और टामी में लड़ाई लगाया चाहता है जिसमें तुम दोनों आपस ही में एक दूसरे से दुश्मनी करके बर्बाद हो जाओ और उसके ऊपर आंच न आवे। मैंने यही सोच कर वह बात तुमसे कही थी जिस में तुम डर जाओ और अपने हाथ से टामी का कुछ अनिष्ट कर देने के डरसे तुम उससे अलग हो जाओ। फिर जब तुम दोनों में मुलाकात ही न होगी तो कैसी लड़ाई और कहां की दुश्मनी? मगर तुमने मेरी उस बात पर ध्यान न दिया और जो नतीजा हुआ वह तुम जानते ही हो॥

डिक०। (कुछ दुःख के साथ) बेशक!!

लीना०। जब तुम लंदन गर्टरूड से मिलने के लिये जाने लगे तो इसी खयाल से कि जिसमें जेक तुम्हारा कुछ नुकसान न कर सके मैं भी तुम्हारे साथ ही गई और जेक के साथ उसी

---

†नोट—सातवें बयान का आखीर।

‖नोट—ग्यारहवां बयान।

झोपड़े में टिकी जिसमें तुमने बूढ़े के भेष में रंटन की घड़ी और अंगूठी चुरा कर भागते समय मुझे देखा था और रहने को जगह मांगी थी। वह झोपड़ा वास्तव में जेक ने अपने ही लिये बनाया था और उस समय जबकि तुम वहां पहुंचे थे भाग्यवश वह किसी काम के लिये एक रोज को मुझसे कह कर कहीं चला गया था। ईश्वर की दया से उस समय भी मैं तुम्हारे काम आसकी॥

मोल पर तुम्हारी तरह मुझे भी शक था और मुझे यह निश्चय था कि कभी न कभी वह तुम को तथा टामी को दोनों ही को आफत में डालेगी। इस ख्याल से यह सोच कर कि तुम को उसके विश्वासघाती होने की सूचना देकर वहां से हटा दूंगी मैंने यार्क आकर रहने के लिये कोई जगह खरीदने का निश्चय किया क्योंकि मुझे मालूम था कि तुम यहां बहुत दिनों तक रह चुके हो और लंदन से कुछ दिनों तक गायब रहने की जरूरत पड़ जाने पर तुम यहीं रहना पसन्द करोगे। उस समय तक मुझे यह नहीं मालूम था कि तुम्हें भी मोल पर शक हो गया है और तुम उसकी तरफ से होशियार हो गये हो। यदि मुझे यह मालूम हो जाता तो शायद मैं इतनी कोशिश न करती और वहीं किसी ढङ्ग से तुम्हें होशियार कर देती तथा इस झोपड़े और आस पास की जमीन के भी खरीदे जाने की नौबत न आती........

डिक०। (बात काट कर) और न इस समय तुम मेरी जान ही बचा सकती॥

लीना०। (मुसकुरा कर) शायद ऐसा ही होता। खैर तो

जब टामी को तुम्हारे हाथों मौत हुई और जेरी ने तुम्हारा पीछा किया तो उन सभों के साथ ही मैं भी भेष बदल कर तुम्हारा पीछा करती चली आई। जब हम लोग उस टीले के नजदीक पहुंचे जहां कि वह फांसी वगैरह तुमने देखी थी तो जेक भी हम लोगों में आ मिला और उसने तुम्हारे वहां होने की सभों को खबर दी जिससे जेरी वगैरह में नई हिम्मत आ गई और वे टीले की तरफ बढ़े। तुम्हारे उसी जगह कहीं छिपे रहने की मुझे आहट लग गई थी क्योंकि एक तो थोड़ीही देर पहिले जेक तुम्हें देख चुका था दूसरे अगर तुम कहीं किसी तरफ भागते जा रहे होते तो जरूर दिखाई पड़ जाते क्योंकि उस टीले से दूर तक निगाह जा सकती थी और बहुत दूर दूर तक कहीं कोई ऐसी जगह भी नहीं थी जिसकी ओट में तुम हो जाते इसके अलावे जिस गढ़हे में तुम छिपे थे उस पर भी पहिले आते जाते मेरी निगाह पड़ चुकी थी और मुझे विश्वास था कि तुम उसी में छिपे होगे क्योंकि वह गढ़हा बहुत बड़ा और गहरा तथा इस लायक था कि घोड़ा भी उसके अन्दर छिपाया जा सके॥

थोड़ी देर बाद जब तुम्हें वहां न पाकर जेरी आगे बढ़ा और कुछ दूर जाने बाद सुस्ताने की नीयत से एक होटल में रुक गया जैसा कि मैं पहिले कह चुकी हूं तो मैं मौका पाकर वहां से आगे बढ़ आई और इसी झोपड़े में पहुंच अपना भेष फिर उसी बूढ़े का बना कर कुछ देर लेट रही और जब कुछ आराम करने बाद उठी तो उसके थोड़ी ही देर बाद तुम्हें आते देखा। बस आगे का हाल तो तुम्हें मालूम ही है॥

डिक० । इस में कोई शक नहीं कि तुमने बड़ी ही हिम्मत का काम किया और सचतो यह है कि इस समय तुम्हारे ही सबब से मैं यहां पर जीता जागता मौजूद हूं । जब मैं मर्द हो कर इतने लंबे सफर के कारण इतना सुस्त हो गया था कि यहां आकर बदहवास सा होगया तो भला तुम्हारी क्या हालत हुई होगी ? सच तो यह है कि मैं इस जन्म में किसी तरह भी तुम्हारे अहसानों का बदला नहीं चुका सकता ॥

इस तरह से बहुत देर तक डिक लीना की तारीफ करता रहा जिसके जवाब में अंतमें घबड़ा कर लीना ने कहा, "अब तुम बस भी करो कि हमेशा तारीफ ही करते रहोगे । तुमने यह वादा तो मुझसे करा ही है कि मैं जो कहूंगी सो करोगे ॥"

डिक० । हां बेशक ! मगर..........

लीना० । अगर मगर कुछ नहीं मैं इतने ही में संतुष्ट हूं । अच्छा अब दूसरी बातें होनी चाहियें (पीटर की तरफ देख कर)तुमसे गर्टरूड की मुलाकात हुई थी ?

इसके जवाब में पीटर ने अपने वहां आने का कारण तथा गर्टरूट का सब हाल कह सुनाया । इसके बाद तीनों यह सोचने लगे कि गर्टरूड के विषय में डिक को अब क्या करना चाहिये ॥

तैंतीसवां बयान ।

वे लोग इस विषय में अभी बातचीत कर ही रहे थे कि लीना ने यकायक चौंक कर कहा, "अरे! एक बात कहना तो मैं भूल ही गई ॥"

डिक तथा पोटर ने पूछा, "वह क्या?"

लीना० । बातों के सिलसिले में यह कहने का मुझे ख्याल ही नहीं रहा कि अब जेरी इस दुनिया में नहीं है ॥

दोनों ने एक साथ चौंककर पूछा, "क्यों क्यों! क्या हुआ! क्या वह मर गया?"

लीना० । हां जब वह तुम्हें यहां न पाकर लौटा तो तुम्हें न पाने या किसी और कारण से उसे इतना दुःख हुआ कि उस ने आत्महत्या करली ॥

डिक ने एक लम्बी सांस फेंक कर कहा, "चलो इस तरफ से तो छुट्टी मिली, मगर मुझे उसके मर जाने का अफसोस है क्योंकि अभी तक एक वही ऐसा आदमी मुझे मिला था जो मेरा मुकाबला कर सका था। उसके सिवाय मेरी असली सूरत अभी तक पुलीस में और किसी ने नहीं देखी थी। मेरी समझ में नहीं आता कि वह मुझ से इतनी दुश्मनी क्यों करता था तथा मुझे इस बार न पाने के कारण उसने अपनी जान क्यों दे दी?

लीना० । (ताज्जुब से) क्या सचमुच तुम इस बात को नहीं जानते?

डिक० । नहीं मैं कुछ नहीं जानता। क्या तुम्हें मालूम है॥

लीना० । हां मैं जानती हूं। तुम्हें विलसन का कुछ खयाल

है या उसे बिल्कुल ही भूल गये?

"विलसन" नाम सुनतेही डिक चौंक पड़ा और थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा कि वह बदहवास हो जायगा। मालूम होता था कि इस नाम ने उसे किसी बहुत ही पुरानी और दुःखदायक घटना का ध्यान दिला दिया है जिसके कारण उसकी यह हालत हो गई है। आखिर बहुत देर बाद उसने अपने को सम्हाल कर लीना से पूछा, "तुम उसे जानती हो?"

लीना०। हां मैं उसे तथा तुम्हारे पुराने हाल को भी अच्छी तरह जानती हूं। वही विलसन पुलिस में नौकरी कर इतने दिनों से जेरी के नाम से तुम्हारा पीछा कर रहा था॥

डिक०। (ताज्जुब से) क्या तुम सच कह रही हो? क्या विलसन मरा नहीं?

लीना०। नहीं। उसने तुम्हें धोखा देने के लिये यह बात मशहूर की थी॥

पीटर इन दोनों की ये सब बातें सुन सुन कर घबड़ा रहा था क्योंकि उसे इस भेद की कुछ भी खबर न थी आखिर उसने डिक से पूछा, "यह किस बात का जिक्र है? क्या मैं इस भेद को जान सकता हूं?"

डिक ने कुछ देर तक सोच कर कहा, "खैर जब अब इस भेद को जानने वालों में से सिवाय मेरे कोई भी अब जीता नहीं है तो तुम्हें उस बात को बता देने में कोई हर्ज नहीं है। अच्छा सुनो मैं अपना पूरा हाल तुम्हें सुनाता हूं जिसे इतने दिन साथ रहने पर भी तुम नहीं जान सके हो॥

लोगों में यह बात फैली हुई है कि मैं एक बहुत ही गरीब मां बाप का लड़का हूं तथा उनके मरने पर खाने का ठिकाना न रहने के कारण ही मुझे डाकू बनना पड़ा है मगर असल में यह बात नहीं है। मेरा बाप बहुत ही अमीर आदमी था मगर इस बात का किसी को पता नहीं कि उसके पास दौलत कहां से आ गई थी क्योंकि जाहिर में वह न तो कोई रोजगार ही करता था और न कहीं नौकरी ही। वह सूम भी परले सिरे का था और इस सबब से बहुत कम लोगों को उसके अमीर होने का हाल मालूम था॥

जब मैं छोटा ही था तभी मेरी मां मर चुकी थी और मेरा पिता भी मुझे अट्ठारह ही वर्ष की अवस्था में अकेला छोड़ कर परलोकवासी हो गया। मरने से कुछ दिन पहिले उसने अपनी दौलत का सब हाल मुझसे कहा और यह भी बताया कि उसने वह रुपया कहां गाड़ कर रक्खा है। यह भी कहा कि उसने यह सब दौलत कहीं से गड़ी हुई पाई थी॥

जब मैं अकेला हो गया तो पहिले कुछ घबड़ाया मगर आ-खिर नियमानुसार पिता का शोक कम हो गया और अन्त में मैंने उसी जगह की एक गरीब मगर खूबसूरत लड़की से शादी कर ली। अहा! उसके ऐसी साध्वी और पतिव्रता स्त्रियां कम पाई जाती हैं। मेरे सबब से उसे इतना कष्ट उठाना पड़ा मगर अपने मुंह से कभी उसने मेरी शिकायत का एक शब्द भी नहीं निकाला॥"

इतना कहते कहते डिक का गला भर आया और वह कुछ देर के लिये चुप हो गया मगर कुछ ही देर बाद उसने अपने

को सम्हाला और फिर कहना शुरू किया :—

"मैं सब हाल बहुत ही संक्षेप में कहता हूं। शादी करने के बरस ही भर बाद मैं बुरी संगत में पड़ गया और "इसाबेल" नामी एक दूसरी औरत के फेर में पड़ कर मैंने अपनी स्त्री से प्रेम कम कर दिया और किसी बहाने से अपने शहर से बाहर किसी दूसरे शहर में जाकर उसी औरत के साथ रहने लग गया मगर अपनी स्त्री को घरही छोड़ गया और उसे इन बातों की खबर भी न होने दी॥

कुछ दिनों के बाद मुझे मालूम हुआ कि इसाबेल मेरे सिवाय विलसन नामी एक दूसरे आदमी से भी प्रेम करती है। मैं सब बातें न कह कर सिर्फ इतना ही कहता हूं कि उन्हीं इसाबेल और विलसन के कारण मुझे तरह तरह के दुःख उठाने पड़े और मेरी दौलत एक काफी हिस्सा उन दोनों की बदौलत बर्बाद हो गया और अन्त में यहां तक नौबत आई कि लाचार होकर एक दिन मैंने विलसन को लड़ने के लिये ललकारा तथा वह लड़ने को तैयार भी हो गया मगर अन्त में मेरे हाथ से सख़्त जख्मी हुआ और कहीं चला गया। इसके बाद ही मुझे मालूम हुआ वह उन जख्मों के कारण जो मेरे हाथ से लगे थे मर गया॥

इस लड़ाई के बाद फिर मैं इसाबेल के पास न गया और न उससे कुछ कहा ही क्योंकि आखिर तो मैं एक दफे उससे प्रेम कर चुका था और इसी खयाल से मैंने उसे यूंहीं छोड़ दिया॥

कोई दो बरस के बाद अपनी स्त्री से मिलने के खयाल से मैं अपने शहर लौटा मगर वहां आने पर मैंने किसी को न पाया और पड़ोसियों से पूछने पर मालूम हुआ कि मेरे वहां से जाने

के दोही महीने बाद वह भी बिना किसी से कुछ कहे सुने कहीं चल दी थी। जहां तक मैं समझता हूं उसे मेरा हाल मालूम हो गया था मगर मेरे मुंह से कांटा होने की बनिस्बत उसने आपही जान देदेना अच्छा समझा और इसी खयाल से आत्म-हत्या कर ली। खैर जो हो॥

उसके न मिलने का मुझे बड़ा ही दुःख हुआ और बहुत दिनों तक मैं पागलों की तरह इधर उधर घूमता रहा और अन्त में मैं डाकू हो गया क्योंकि ऐसा ही होने अर्थात् इधर उधर डाके डालते फिरने से ही मेरे दिल को कुछ शान्ति पहुंचती थी। बस यही तो मेरा हाल है और यही मेरी कहानी॥"

इतना कह कर डिक चुप होगया और बहुत देर तक दोनों हाथों से अपना मुँह छिपाये रोता रहा। इसके बाद उसने कोशिश करके अपने को सम्हाला और लीना को उस कोठड़ी में कहीं न पाकर पीटर से पूछा, "क्यों लीना कहां गई?"

पीटर०। मुझे कुछ नहीं मालूम कि वह कब और कहां चली गई। मैं तुम्हारा हाल सुनने में इतना मग्न था कि मुझे उसके बाहर जाने की कुछ आहट ही न मिली॥

इतने ही में लीना ने उस कोठड़ी में आकर कहा, "मैं एक काम से बाहर चली गई थी क्योंकि मुझे तुम्हारा यह सब हाल मालूम था॥"

डिक०। तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

लीना०। सो भी किसी मौके से तुम्हें मालूम हो जायगा अच्छा अब यह निश्चय करना चाहिये कि गर्टरूड के साथ तुम क्या करोगे॥

डिक०। तुम जो कहो सो मैं करूँ॥

लीना०। जहां तक मैं समझती हूं तुम अपना सब हाल सच सच गर्टरूड से बयान कर दो। वह तुम्हें सच्चे दिल से प्यार करती है और अपना सब हाल कह देने से तुम्हारे ऊपर उसका प्रेम कम न होगा बल्कि और बढ़ जायगा और अगर तुम चाहोगे तो वह किसी से वह हाल कहेगी भी नहीं। अब तुम्हारे दुश्मनों में से सिवाय जेक के और कोई ऐसा नहीं रह गया है जो तुम्हें पहिचाने और तुम्हारी इस जिन्दगी का हाल जाहिर कर सके सो जेक को मैं ठीक कर लूंगी और वह आज से तुम्हें अपना मुँह भी नहीं दिखावेगा। (पीटर से) क्यों साहब! आपकी क्या राय है?

पीटर०। तुम्हारा कहना बहुत ठीक है डिक को ऐसा ही करना चाहिये और अपनी इस जिन्दगी को एकदम इस्तीफा देकर एक नई सड़क पर पैर रखना चाहिये॥

कुछ देर बातचीत और बहस के बाद यही करना निश्चय हुआ। अन्त में लीना ने यह भी कहा कि कई तरह की तर्कीबों तथा दवाइयों से उसने बेस के रङ्ग में इस तरह का फर्क डाल दिया है कि जिसने उसके पहिले देखा है वह कभी अब उसे नहीं पहिचान सकता है और डिक ने बेस को देखने पर वास्तव में यही बात पाई॥

दूर, बहुत ही दूर, किसी दूसरी ही दुनिया में हूंगी मगर वहां भी मैं तुम्हें सुखी देख कर बराबर सुखी रहूंगी ॥

अब मुझे किसी बात की आशा, अभिलाषा या इच्छा नहीं है, अगर कुछ है तो केवल इतनी ही कि अपने उस वादे के मुताबिक जो कि झोपड़े में पीटर के सामने तुमने मुझसे किया था कि जो मैं कहूंगी सो करोगे तुम इस चीठी को पढ़ कर फाड़ देना और मेरे लिये दुःखी न होना! बस तुम से यही मेरी अन्तिम इच्छा, प्रार्थना, अभिलाषा है ॥"

तुम्हारे सुख से सुखी—

लीना ।

इति
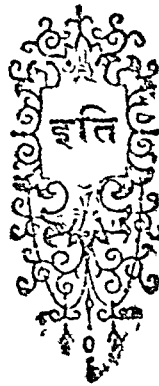
रणवीर।

चार भाग—मूल्य ४=)

यों तो वीर रस के कई उत्तम उपन्यास छपे हैं और छप रहे हैं पर इस उपन्यास का ढंग सभों से अनूठा ही है। यह प्रसिद्ध अंगरेज औपन्यासिक रिनाल्ड के उपन्यास "उमर पाशा" का अनुवाद है और जिन लोगों ने यह उपन्यास अंगरेजी में नहीं देखा है उन्हें तो अवश्य ही मंगाना चाहिये क्योंकि इसमें रूस और रूम की उस प्रसिद्ध लड़ाई का हाल है जिसमें बहादुर रूमियों ने रूसियों के अच्छी तरह दांत खट्टे किये थे। इतिहास प्रिय और विशेषतः वीर रस के प्रेमियों से हमारा अनुरोध है कि वे एक बार इस उपन्यास को अवश्य पढ़ें॥